Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान [मासिक]

भाद्रपद २०४२ १६ सितम्बर से १५ अक्टूबर १९८५ तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरु
स्वामी विरजानन्द दण्डी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने देश के संसद् सदस्यों तथा विधायकों को जन-ज्ञान (मासिक) भिजवाइये

ताकि वे जान सकें

कि देश, समाज और व्यक्ति की हालत पर बहुसंख्यक हिंदू समाज का दृष्टिकोण क्या है ?

हमारी संस्कृति को नष्ट करने के लिए देश में चल रहे विदेशी मिशनरियों के षड्यंत्र क्या हैं ?

अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण के दौर में पिस रहे बहुसंख्यक हिंदू समाज की स्थिति क्या है ?

और उसके अनुरूप अपना दृष्टिकोण बना सकें। संसद् और विधानमंडलों में हिंदू हितों की आवाज उठा सकें।

कम-से-कम दस अथवा अधिक सदस्यों को जन-ज्ञान तुरन्त भिजवाया जायेगा। अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

इस योजना के लिए जन-ज्ञान का पाँच वर्ष का शुल्क १२५ रु० रखा गया है।

एक वर्ष का शुल्क ३० रु० ही होगा।

प्रेषक :

दयानन्द संस्थान
१५९७, हरध्यान सिंह रोड
करोल बाग नई दिल्ली- ५
फोन : ५६२६३९,५६४७४१

मुद्रक प्रकाशक संपादक पंडिता राकेश रानी द्वारा 'जन ज्ञान' मुद्रणालय में मुद्रित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

सम्पादक—राकेशरानी

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग,
करौलवाग, नई दिल्ली–५

दूरभाष : ५६२६३६
५६४७४१
८०१२११

वार्षिक मूल्य : ३० रुपये
विदेश में : विमान से ४२ पौंड
६० डालर
समुद्री डाक से ४ पौंड, ६ डालर

आजीवन : ५०१ रुपये
विदेश में : १५०१ रु.
यह अंक : तीन रुपये
भाद्रपद संवत् २०४२
सितम्बर १९८५, वर्ष १९, अंक ५

प्रभु से प्रार्थना

हमें बहुत दे

भूरिदा देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर।
भूरि घेदिन्द्र दित्ससि। ऋ. ४.३२.२०

इन्द्र ! तू, निस्संदेह वहुदानी है। तेरे आध्यात्मिक और भौतिक अक्षय कोश सदा सबके लिए खुले हुए हैं। संयम और तप के राजमार्ग पर चलने वाले तेरे ऐश्वर्यों से निहाल होते रहते हैं। निरुद्यम और अलस दारिद्र्य और दुःख की मार सहा करते हैं।

वहुदानी ! हमें अपने ऐश्वर्यों का अधिकारी वनाकर उभय सम्पदाओं से भर-पूर भर दे। धन, बल, विद्या, पराक्रम, तेज, सौन्दर्य, राज्य, साम्राज्य, यश, वर्च, सव कुछ वहुत दे, अतिशय अधिक दे, अधिकाधिक दे।

विश्वदानी ! हमें सव कुछ अतिविलुप्तता से दे। थोड़ा न दे। अल्प में कृपणता और संकोच का निवास होता है। अल्प से अल्प लाभ होता है। अधिकता में ही उदारता होती है। अधिक से ही स्व-पर का अधिक उपकार होता है, अधिक से अधिक कल्याण किया जा सकता है। अतः सव कुछ वहुत अधिक दे। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

समस्याओं का सुरसा मुख (सम्पादकीय) ३

क्रान्तिमन्त्र : शुद्धि (महात्मा वेदभिक्षु की अमरवाणी) ७

तीसरी दुनियां में धूम्रपान का जहर —अरविन्द कुमारसिंह १४

अमर हुतात्मा क्रान्तिवीर मदनलाल ढींगरा —वेदप्रकाश अग्रवाल १७

उसको कैसे माफ करेंगे ? (कविता) अरुण देवासी २३

सृजन (कविता) —कमलेश कुमार थापक "पीयूस" २६

ज्योतिषियों की भविष्यवाणी : कितनी सच, कितनी झूट —काशीनाथ शास्त्री २७

मन बूढ़ा तो तन बूढ़ा —सुरेशचन्द्र वेदालंकार ३३

आप भी जानिए : पिन कोड —शिवम् कुमार नरेन्द्र ३९

भाषा जोड़ती है तोड़ती नहीं —क्षितीश वेदालंकार ४२

तंग मानसिक दायरों से बाहर आयें —मोहनलाल गुप्त ४६

१९ वीं सदी के धार्मिक आन्दोलन —प्रो. हरिदत्त वेदालंकार ४९

जीवन में विशिष्टता चाहते हो तो शीलवान् बनो —दीनानाथ सिद्धान्तालंकार ५९

विदेशी गायों के आयात से पूर्व सावधानियों की आवश्यकता —सदाजीवतलाल ६२

क्या असम २१ वीं सदी तक हिन्दू बना रहेगा ? —शंकर एन० मैत्र ६५

अच्छी नींद के लिए कुछ बातें ७०

हिन्दुओ, खतरे की घण्टी बज रही है ! —इन्द्रदेव ७३

पद्मभूषण डा० सिद्धेश्वर वर्मा ७७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

समस्याओं का सुरसा मुख

स्वदेश के समक्ष विद्यमान समस्याओं का सिलसिला द्रौपदी के चीर के समान बढ़ता ही जा रहा है। देश के युवा प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी अपनी ओर से समस्याओं के समाधान में पूर्ण तन्मयता से जुटे हैं। पहले उन्होंने देव दयानन्द की जन्मदायिनी गुर्जर धरा (गुजरात) में आरक्षण के सवाल पर उभरे आन्दोलन की समाप्ति का सफल प्रयास किया, फिर गुरु तेगबहादुर और गोविन्द सिंह एवं पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय और देवतास्वरूप भाई परमानन्द की कार्यस्थली पंजाब में भाई-भाई में भड़की फूट की आग बुझाने के लिए अकाली नेता लौंगोवाल के साथ समझौता सम्पन्न कर समस्याओं के निदान की दिशा में एक पग और बढ़ाया, तदुपरान्त वर्षों से सुलग रहे देश के एक अन्य सीमावर्ती अंचल असम में लगी आग को बुझाने के लिए वहां के छात्र आंदोलनकारियों की सही मांगों को स्वीकार कर देश में शान्ति और समृद्धि लाने की दिशा में कदम बढ़ाया। किन्तु स्थिति को यदि वास्तविक शब्दों में कहा जाय तो 'मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की' वाली बात सत्य सिद्ध हो रही है।

गुजरात में हुए समझौते के बाद तथाकथित अनुसूचित वर्गों के सरकारी कर्मचारियों ने रोस्टर प्रणाली में कोई परिवर्तन नहीं किये जाने की मांगों को लेकर आंदोलन का स्वर उभारा है तो असम समझौते पर बंगाल की साम्यवादी सरकार को शिकायत हो रही है। पंजाब में तो समझौते के विरुद्ध उग्रवादी तत्त्वों ने संत हरचन्दसिंह लौंगोवाल के प्राण लेने में भी संकोच नहीं किया और भारत की राजधानी में ही एक उभरते युवा नेता एवं दक्षिण दिल्ली के निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित इन्दिरा कांग्रेस के सांसद श्री ललित माकन को भी पत्नी सहित बलिदान देना पड़ा। उनके बलिदान के कुछ ही दिन बाद राजधानी के इन्दिरा कांग्रेस के एक अन्य नेता श्री अर्जुनदास की दिन दहाड़े हुई हत्या ने भी यह तथ्य उजागर कर दिया कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत-भूमि में सुख-शान्ति की हवा का बहना जिन तत्त्वों को फूटी आंखों नहीं सुहाता, वे चिनौनी गतिविधियों में और भी अधिक सक्रिय हो गये हैं। पंजाब में विधान सभा और लोकसभा के चुनाव में व्यवधान डालने के लिए भी ये तत्त्व पूरी तरह सक्रिय हैं।

आज देश के समक्ष जो परिस्थितियां विद्यमान हैं उनका सही समाधान हमारे विचार में हिन्दू राष्ट्रवाद की भावना को बलवंती बनाना है, क्योंकि हिन्दुत्व ही भारत की एकता का सुदृढ़ आधार है, जिसने सहस्रों वर्षों से इस राष्ट्र को विविधता के होते हुए भी एक सूत्र में बांध रक्खा है। हिन्दुत्व को भावना का ह्रास ही इस देश में अनेकतावादी तत्त्वों को खुल खेलने का अवसर प्रदान कर रहा है। हिन्दू से हमारा तात्पर्य किसी विशेष पूजापद्धति के अनुयायी से नहीं है, उस प्रत्येक व्यक्ति से है जो भाषा, पंथ और मजहब पर देश के हितों को वरीयता प्रदान करता है। जो इस देश की महान् संस्कृति और इसके महापुरुषों के समक्ष श्रद्धा से नमन करता है। जो इस देश के कण-कण को पावन मानता है और इसकी अभिवृद्धि और कल्याण में ही अपना उत्थान मानता है।

हमें इस तथ्य को सदैव स्मरण रखना होगा कि जब हिन्दुत्व की पावन गंगा अपनी पूर्ण गति और प्रवाह के साथ प्रवाहित हुई तो बिहार के पाटलिपुत्र में जन्मा गोविन्दराय, जो विदेशी सत्ता से इस देश की अस्मिता को मिली चुनौती का सामना करने के लिए "सुख संगकरणम्, दुर्मति हरणम्" का आह्वान करते हुए गोविन्दसिंह हो गया था, उसने भी यही उद्घोष किया था—"जगे धर्म हिन्दू सकल भंड भाजे।"

हिन्दुत्व की गंगा में जब ओज आया था तो महाराष्ट्र की धरा ने सरजा शिवाजी के रूप में एक सपूत पैदा किया था और रणबांकुरे राजपूतों की धरती राजस्थान ने भी हिन्दूपति महाराणा प्रताप को अकबर की सशक्त सत्ता से टकराने के लिए तैयार पाया था। हिन्दुत्व की इस भावना को संकीर्णता की परिधि में नहीं अपितु इसके विस्तृत परिप्रेक्ष्य में समझकर इसे सशक्त बनाना ही समय की मांग है। जब यह प्रबल होगी तो पंजाब में उभरे हिन्दू-सिख विवाद का पलक झपकते ही शमन हो जाएगा। गुजरात, आन्ध्र अथवा अन्य राज्यों में सवर्ण और हरिजन का जो विवाद आज उभरा है, वह भी तुरन्त समाप्त हो जायेगा, क्योंकि हिन्दुत्व का वास्तविक स्वरूप ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में किसी को छोटा अथवा बड़ा मानने का पक्षधर नहीं है। उस भावना के तहत ही क्षत्राणी मीरा संत रविदास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की श्रद्धा सहित वन्दना करती है तो पुरी के जगन्नाथ का भात सभी को समान रूप से भाता है।

हिन्दुत्व की यह भावना ही हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर स्थित बद्रीनाथ की पूजा-वन्दना केरल के ब्राह्मण से कराकर देश की उत्तरी और दक्षिणी धुरी को मिलाने का सफल आधार संजोती है तो कन्याकुमारी में ध्यानमग्न देवी उत्तर में हिमालय के शैलशिखरों पर विचरण करने वाले शिव के प्रति समर्पण के भाव को अपने मन में बसाकर पूर्ण समर्पण भावना से स्मरण करती है। ऐसी धारणा भी देश के कोटि-कोटि श्रद्धालुजन के मन में संजोती है।

आज देश के विघटनवादी तत्त्वों को खुल खेलने का अवसर "सैक्युलरिज्म" भी प्रदान कर रहा है। व्यावहारिक तौर पर यह बहुमत की उपेक्षा और अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण ही बनता जा रहा है। हम मजहब और पूजा-पद्धति के आधार पर किसी से पक्षपात बरतने के पक्ष में नहीं हैं। हम किसी व्यक्ति के किसी पूजा-पद्धति विशेष का अनुगामी होने के कारण उसे हेय मानने के कायल नहीं हैं। हमारे विचार में सर्वपन्थसमभाव ही एकमात्र पथ है, जिससे भारत के निवासियों को विभिन्न वर्गों में एक दूसरे के निकट आने में सहायता मिल सकती है। विडम्बना यह है कि स्वयं को सेक्युलर मानने वाले बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक की भाषा बोलते हैं, जबकि हमारा अपराध यही है कि हम राष्ट्र के नागरिकों में बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक का भेदभाव बरतने के पक्ष में नहीं हैं। आज आवश्यकता इस बात की कि है ऐसे तत्त्वों के विरुद्ध संघर्ष के लिए सभी राष्ट्रनिष्ठ जन संघबद्ध हों, जो देश के लिए एक-से कानून को लागू करने की मांग पर तिलमिलाते हैं, जो देश की उन लाखों देवियों को आज भी बांदी बनाकर रखे जाने को अपना ईमान मानते हैं।

हमें इस बात का हर्ष है कि अब कई मुस्लिक बहनों में भी अपने अधिकारों के प्रति सजगता आई है और उन्होंने अपना स्वर उन तत्त्वों के खिलाफ उभारा है जो मजहब के नाम पर उनके गलों में डाले फन्दे हटने की कल्पना के नाम पर ही बौखला उठे हैं। उन्होंने एक विवाद में उच्चतम न्यायालय के निर्णय कोलेकर उसके खिलाफ ही देशव्यापी अभियान चला दिया है। हमारी आशंका यह है कि ऐसे तत्त्वों का तुष्टीकरण भी नई समस्याओं को जन्म देगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारा आह्वान है राष्ट्र के प्रति अनुरक्त हर राष्ट्रभक्त से कि वह हिन्दुत्व के प्रसार के अभियान में सक्रिय योगदान दे। हिन्दुत्व की प्रबल भावना ही रहीम और रसखान जैसे अनेक समर्पित व्यक्तियों के प्रबल शब्दों में—"मानुष हों तो वही रसखान, बसों, जिमि गोकुल ग्राम के ग्वारन" का आह्वान करने का अवसर प्रदान करेगी।

उस समय देश की समस्याओं के समाधान के लिए प्रेरणा देंगे योगेश्वर श्रीकृष्ण, जिनका जन्मोत्सव उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम तक देश-वासियों ने अभी मनाया। उनका जीवन हम सभी के लिए प्रेरक और उनका आह्वान "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" हमें प्रेरणा देगा।

—राकेश्वरानी

गुरुकुल प्रभात आश्रम में शोध-संगोष्ठी

प्रथम अगस्त को वेदों के मर्मज्ञ विद्वन्मूर्धन्य स्वा. समर्पणानन्द जी सरस्वती (पं० बुद्धदेव विद्यालंकार) का ९१वां जन्म दिवस स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल, मेरठ में धूमधाम से सम्पन्न हुआ, जिसमें विद्वानों ने पण्डित जी के जीवन एवं कार्य पर प्रकाश डाला। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने स्वामी समर्पणानन्द जी को पाण्डित्य का अगाध समुद्र बतलाया। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा संचालित एक त्रैमासिक हस्तलिखित पत्रिका "अनन्त विजय" का विमोचन स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती द्वारा सम्पन्न हुआ। उन्हीं की अध्यक्षता में एक शोध संगोष्ठी भी सम्पन्न हुई, जिसमें श्री सोमदेव शतांशु निगमालंकार ने क्रमशः "वैदिक वाङ्मय में सोम" और "शब्द ब्रह्म का स्वरूप एवं भर्तृहरि" पर अपना शोध प्रबन्ध पढ़ा। अपने अध्यक्षीय भाषण में स्वामी जी ने वैदिक शोध कार्य की महत्ता एवं आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इस संगोष्ठी में नागरिकों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में ग्रामवासी बुद्धिजीवी वर्ग भी उपस्थित था। अगली शोध संगोष्ठी ३ नवम्बर १९८५ को आयोजित करने का निश्चय किया गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रांति मन्त्र : शुद्धि

भारत की साम्प्रदायिक समस्या का हल भारत के एक महान् मनीषी ने बताया था—शुद्धि। शुद्धि का अर्थ है स्वच्छता। स्वच्छता अर्थात् प्रत्येक प्रकार की गन्दगी को दूर करना। घर अशुद्ध हो तो वह रहने योग्य नहीं रहता, विचार अशुद्ध हों तो वे जीवन को दुःखद बना देते हैं। मनुष्य में जब अशुद्धि आती है तो वह गन्दा दीखता है और विचार-चिन्तन का भटकाव उसे पशु बना देता है।

झगड़े क्यों होते हैं ? विचारों की अशुद्धि से। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, पाप सबका जन्म अशुद्ध विचारों का परिणाम ही तो है। इसलिए मनुष्य को मनुष्य बनाने का एक मात्र मार्ग है शुद्धि।

संसार में मनुष्य को मनुष्य बन कर रहना सिखाने के लिए सृष्टि के आरंभ में ही प्रभु ने जो ज्ञान दिया, वह ही धर्म का आधार है। जब तक मनुष्य उस प्रभु द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलता रहा तब तक धरती पर सुख-आनन्द का राज्य रहा, किन्तु जैसे-जैसे मनुष्य प्रभु के दिखाए मार्ग को भूल कर मनुष्य के दिखाए मार्ग पर चलने लगा, धरती पर युद्ध, द्वेष और घृणा का साम्राज्य छाता गया और पशुता सिर उठाती गयी।

सांप्रदायिकता क्या है ? अलगाव का घृणित प्रदर्शन, स्वार्थ का नर्तन, भेद की दीवारों का प्रदर्शन। मनुष्य को मानवता, नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाला धर्म है और उसे स्वार्थ--बेईमानी का रास्ता दिखाने वाला मजहब है।

इसी तथ्य को समझकर युग-प्रणेता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संसार के सभी मजहबों को समाप्त करने का आव्हान किया था। महान् श्रद्धानन्द ने इसी सत्य को जानकर मनुष्य को मनुष्य से लड़ाने वाली जहरीली मजहबी विचारधाराओं से मनुष्य को मुक्त करने के लिए शुद्धि का क्रान्ति मन्त्र फूंका था।

आज भी और कल भी, यहां भी और वहां भी, जहां अलगाव और घृणा के---द्वेष और युद्ध के-संदेशवाहक मनुष्यकृत मजहब रहेंगे, वहां पशुता नाचती रहेगी। राक्षस उत्पन्न होते रहेंगे युद्ध चलेंगे और खून बहेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस विनाश से रक्षा का मार्ग है केवल एक—शुद्धि। विचारों की शुद्धि, शरीर की शुद्धि समाप्ति और उन सब भावों की जो मनुष्य को राक्षस बनाते हैं।

हम आज भी भारत में सांप्रदायिक उपद्रव देख रहे हैं। १९२० से ८० तक गांधी जी की विचारधारा पूर्णतया असफल रही है। क्या आज यह आवश्यक नहीं कि अब हम गांधीजी के बड़े भाई स्वामी श्रद्धानन्द की विचारधारा को आजमा कर देखें। अबतक हमने नकली मेल का चक्र चलाया, अब असली एकता का मार्ग पकड़ें।

हम मिटा दें उस जहरीली शिक्षा को जो मनुष्य को राक्षस बनाती है। जो अपने विरुद्ध विचार रखने वालों को कत्ल कर मार डालने का आदेश देती है।

भारत के वे करोड़ों मुसलमान और ईसाई बन्धु जो इस्लाम और ईसाइयत की शिक्षा के कारण प्रभु के चरणों से दूर हैं, एक बार परमात्मा के बेटे बन कर तो देखें। मजहब का कड़वा प्याला तो वे पीते रहे, अमृत को चख कर तो परखें। सचमुच उनका जीवन बदल जाएगा।

भारत की एकता का मार्ग है शुद्धि, मनुष्य को मनुष्य से प्यार सिखाने वाला मंत्र है शुद्धि। ईश्वर की ज्योति को ग्रहण करने का साधन हैं "शुद्धि"। शुद्धि से सांप्रदायिकता जड़-मूल से नष्ट हो जाएगी, दंगों का नाम-निशान तक मिट जाएगा। मजहब ने जो विनाश लीला दिखा रखी है, उसके स्थान पर सभी मिल कर निर्माण में लगेंगे।

देशवासी शुद्धि का महत्त्व समझें। ईसाई-मुसलमानों को पवित्र करने वाला यह एक ऐसा अमोघ अस्त्र है जो उनके मन-मस्तिष्क को प्यार से भर देगा।

शुद्धि द्वारा वे व्यक्ति की पूजा छोड़ कर प्रभु की, एक ईश्वर की पूजा का रास्ता पकड़ें। सत्य, प्रेम, क्षमा, दान, सन्तोष जैसे पवित्र भाव हृदय में धारण करें। किसी की हत्या, किसी को मारना किसी से घृणा करना छोड़ें और भारत की उस महान् परम्परा के सूत्र में आबद्ध हो जायें जिसके कारण भारत संसार का सिरमौर रहा है।

आज जब फिर सांप्रदायिकता के सांप ने देश की शान्ति को चुनौती दी तब हम सारे देश को शुद्धि मंत्र द्वारा पूत-पावन होने का आह्वान करते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम भारत मां के ६० करोड़ बेटे एक स्वर में, एक राह पर चलने के लिए शुद्धि यज्ञ में उन सब विचारों की आहुति दे द जो हममें अलगाव उत्पन्न करते हैं।

महानाश की लपटें देश को भस्म कर दें, इससे पहले धर्म के पहरेदारों को शुद्धि का मंत्र—चक्र फिर से चलने का संकल्प लेना होगा। भारत मां के लौह लाडलों को एक बार फिर मां की रक्षा के लिए शुद्धि चक्र चलाना होगा। भले ही हमें सैकड़ों श्रद्धानन्द शहीद करने पड़ें पर मां की रक्षा के लिए हम आगे बढ़ें, यही समय की मांग है।

—वेदभिक्षु:

(जन-ज्ञान मासिक पौष संवत् २०३७ के अंक से उद्धृत)

नई दिल्ली ग्यारह सितम्बर को

डा प्रहलाद कुमार की चालीसवीं जयन्ती

डा० प्रहलाद कुमार स्मारक समिति की ओर से डा० प्रहलाद कुमार की चालीसवी जयन्ती के अवसर पर 'दयानन्द भाष्य में अश्वमेध प्रकरण' विषय पर वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् जयपुर निवासी ड० सुधीर कुकार गुप्त का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। उन्होंने अपने व्याख्यान में प्रतिपादित किया कि महर्षि दयानन्द ने अपने अजुर्वेद भाष्य में अश्वमेध की युक्ति संगत व्याख्या करके यह सिद्ध किया है कि इसमें पशुबलि का कोई स्थान नहीं है। वास्तव में अश्वमेध राष्ट्र की सर्वांगीय उन्नति वर्णन किया है। उन्होंने प्रदर्शित किया कि उत्वट और महीधर ने इस प्रसंग में अनेक मंत्रों के अश्लील अर्च अज्ञानवश किए हैं। कार्यक्रम की थध्यक्षता महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो० डॉ० जलदेव विद्यालंकार ने की।

डा० प्रहलाद स्मारक समिति द्वारा दिल्ली विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग के आचार्य डा० सत्यव्रत शास्त्री का राष्ट्रपति द्वारा सम्मनित होने पर अभिनन्दन किया गया। उनकी शैक्षिक उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्हें अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर डा० मधुवाला की पुस्तक 'भाष्यकार उत्वट' का विमोचन डा० सत्यव्रत जी के कर कमलों द्वारा हुआ।

डा० सत्यव्रत शास्त्री ने एम.ए. संस्कृत में वेद विकल्प लेकर अध्ययन करने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति वितरण किया और वेद के प्रसाद पर बल दिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आंकड़े बोलते हैं

जो देशी तथा विदेशी आलोचक भारत में अल्पसंख्यकों के कल्याण के प्रति चिन्ता व्यक्त करते नहीं थकते उनके लिए देश की धर्मवार जनसंख्या के ताजा आंकड़े आंख खोलने वाले सिद्ध हो सकते हैं। १९८१ की जनगणना के अनुसार १९७१-१९८१ के बीच देश की आबादी ५३.३ करोड़ से बढ़कर (असम शामिल नहीं) ६६.५ करोड़ हो गई। इस दशक में आबादी बढ़ने की रफ्तार २४.६९ प्रतिशत रही।

इस अवधि में मुसलमानों की आबादी सबसे तेज रफ्तार से बढ़ी—३०.५९ प्रतिशत। उनकी आबादी १९७१ में ५.७८ करोड़ थी, जो १९८१ में ७.५५ करोड़ हो गई। कुल आबादी में मुसलमानों का प्रतिशत इस दशक में १०.८४ प्रतिशत से बढ़कर ११.३५ प्रतिशत हो गया।

सिखों की संख्या १९७१ में १.०३ करोड़ थी, जो १९८१ में बढ़कर १.३० करोड़ हो गई। यानी दस वर्षों में २६.१५ प्रतिशत की वृद्धि। इसी अवधि में देश की सकल आबादी में उनका प्रतिशत १.९४ से बढ़कर १.९६ हो गया।

इन दोनों अल्पसंख्यक जमातों के मुकाबले में हिन्दू धर्मावलम्बियों की जनसंख्या १९७१ में ४२.२ करोड़ से बढ़कर १९८१ में ५४.९ करोड़ हो गई। दशकीय वृद्धि दर रही २४.१५ प्रतिशत। यानी देश की कुल आबादी की दर से थोड़ी कम।

ये आंकड़े बहुत कुछ कहते हैं। पर सबसे बड़ी बात यह कहते हैं कि हिन्दुस्तान में अल्पसंख्यक पर ऐसा कोई संकट नहीं है कि उनकी आबादी घटे। बल्कि वे इतने सुरक्षित हैं कि बहुसंख्यकों समुदाय की तुलना में कुछ अधिक तेज रफ्तार से ही बढ़ रहे हैं।

जिसके घर में वेद नहीं!
वह हिन्दू का घर नहीं!!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आणविक नीति पर पुनर्विचार किया जाये : राकेशरानी

नई दिल्ली। अ. भा. हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्षा श्रीमतीराकेशरानी ने एक वक्तव्य में भारत सरकार से आणविक नीति पर पुनर्विचार करने का अनुरोध किया हैं। श्रीमती राकेशरानी ने अपने वक्तव्य में कहा कि चीन पहले ही अणुबम बनाकर महाशक्तियों की पंक्ति में खड़ा हो चुका है और अब पाकिस्तान भी अणु बम बनाने की क्षमता से सम्पन्न है। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जियाउल हक ने यह स्पष्ट कर दिया है कि अमेरिका के दवाब में आकर पाकिस्तान अणु बम बनाने का अपना अधिकार नहीं छोड़ सकता। अतः यह अच्छी तरह स्पष्ट हो गया है कि पाकिस्तानी हुक्मरानों के इरादे नेक नहीं हैं।

दयानन्द संस्थान की अध्यक्षा ने अपने बयान में आगे बताया कि यह सही है कि भारत विश्वशांति में विश्वास रखता है। विश्वशान्ति की भावना सर्वथा उचित भी है। लेकिन विश्वशान्ति के नाम पर अणु बम न बनाकर भारत की सुरक्षा को खतरे में डालना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता।

उन्होंने अपने वक्तव्य में यह भी कहा कि यह बात अब भारत के कर्णधारों को समझ लेनी चाहिए कि अमेरिका अणु बम बनाने के मामले में पाकिस्तान पर अंकुश नहीं लगा सकता। इसलिए यह जरूरी है कि अपने सुरक्षा के लिए भारत अणु बम बनाने की दिशा में पहल करे।

श्रीमती राकेशरानी ने अपने वक्तव्य में प्रधानमंत्री से अनुरोध किया है कि वे जरूरत पड़ने पर यदि आपातकाल लगाने की बात को उचित मानते हैं तो भारत की सुरक्षा पर संभावित खतरों का ध्यान में रखकर उन्हें देश की सुरक्षा के लिए अणु बम बनाने का निर्णय लेने में भी संकोच नहीं करना चाहिए।

श्रीमती राकेशरानी ने अपने वक्तव्य में चेतावनी दी है कि बाहरी खतरे को देखते हुए यदि प्रधानमंत्री ने अणु बम बनाने के सवाल पर दूरदर्शिता का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
परिचय नहीं दिया तो यह सारे देश के लिए दुर्भाग्य की बात होगी।

राकेशरानी जी ने कहा कि भारत सरकार को भारत-पाक आयोग की बैठक में किए गए मधुर विचार विनिमय के सम्मोहन में न फंसकर पाकिस्तान के आज तक के रवैये की समीक्षा करनी चाहिए और उसके निष्कर्षों के आधार पर ही अपनी आणविक नीति को अन्तिम रूप देना चाहिए। यह बात कोरी कल्पना है कि पाकिस्तान अणु बम का उपयोग भारत के सिवा किसी अन्य देश के खिलाफ करेगा।

क्या आपको योग्य संस्कारवान् वर-वधु की तलाश है ?

यदि हां तो जन ज्ञान (मासिक) में विज्ञापन दीजिए

जन-ज्ञान मासिक देश-विदेश के एक लाख से भी अधिक धर्मपरायण व संस्कारवान् लोगों से आपको मिलवायेगा। उन तक आपकी बात पहुंचायेगा।

केवल २१ रु० की दक्षिणा के साथ
अपना विज्ञापन लिख भेजिये
और फिर देखिये सही वर-वधु की
आपकी तलाश कितनी जल्दी
पूरी होती है।

विज्ञापन व्यवस्थापक
जन-ज्ञान (मासिक)
१५९७, हरध्यानसिंह रोड
करौल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनोखा भोजन

एक बार एक सेठ जी ने श्राद्ध के दिन दो पंडितों को भोजन के लिए अपने बंगले पर निमंत्रण देकर बुलाया। दोनों पंडित ठीक समय पर जब उसके घर पहुंचे तो सेठ जी ने उनकी खूब आवभगत की। पहले उन्हें जलपान कराया। नौकरों को उनके स्नान करने के लिए स्वच्छ शीतल जल भर कर स्नान-गृह में रखने का आदेश दे दिया। जब स्नान का सारा सामान तैयार हो गया तो सेठ जी ने उनसे प्रार्थना की, "पंडित प्रवर! भोजन से पहले स्नान करने का कष्ट कर लें।" सेठ जी की प्रार्थना सुन कर एक पंडित ने दूसरे से कहा, "चलिए, पहले आप स्नान कर लीजिए।"

जब उनमें से एक पंडित नहाने के लिए चला गया तो सेठ जी ने दूसरे पंडित से उस पंडित के विषय में पूछा, "पंडित जी, जो महाशय नहाने गए हैं, वह कैसे विद्वान् हैं? क्या वे खूब जप-ध्यान करते हैं?"

"विद्वान्? वह तो बिल्कुल बैल है बैल।" पंडित ने ईर्ष्या में जलते हुए कहा। सेठ जी चुप रहे, कुछ भी नहीं बोले। जब वह स्नान करके वापस आ गए और दूसरे पंडित जी स्नान के लिए गये तो यही प्रश्न सेठ जी ने स्नान कर वापिस लौटे पंडित जी से पूछा, तो वह उससे भी अधिक ईर्ष्यालु होने के कारण एकदम बोल उठे, "वह तो बिल्कुल मुर्ख है, गधा है!"

दोनों पंडित स्नान, वन्दन, पूजन आदि क्रियाओं से निवृत्त होकर भोजन करने के लिए भोजनकक्ष में पहुंचे तो सेठ जी ने भोजन के स्थान पर एक टोकरा हरी-हरी घास तथा एक टोकरा ही भूसे का अपने दासों के हाथ यह कह कर कि "सेठ जी ने उनके लिए यह भोजन भिजवाया है" पहुचवा दिया।

भोजन की प्रतीक्षा में बैठे उधर पंडितों ने जब नौकरों के हाथ यह घास और भूसा देखा और उनकी बात को सुना तो क्रोध से आगबबूला हो उठे, और उनसे बोले सेठ जी को जरा इधर भेजना। सेठ जी तुरन्त ही पंडितों के पास पहुचे तो पंडितों ने उससे पूछा, "सेठ जी, आपने हमारे साथ यह दुर्व्यवहार क्यों किया? हमारे पास यह घास और भूसा किस लिए भेज दिया? सेठ जी ने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया, "महाराज! एक से पूछने पर दूसरें को बैल और दूसरे से पूछे जाने पर पहले को गधा कह कर आप लोगों ने मुझे अपना परिचय दिया, अतः गधों और बैलों का तो यही भोजन होता है! इस लिए मैंने आप के लिए यह भोजन भेजा है!

दोनों पंडित बिना कुछ खाए-पिए वहां से चले गये और अपनी ईर्ष्या के परिणाम पर मन ही मन पश्चात्ताप करने लगे। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीसरी दुनिया में धूम्रपान का जहर

—अरविंद कुमार सिंह

तम्बाकू के सेवन तथा धूम्रपान से उपजे हुए रोगों के चलते दुनिया में हर साल दस हजार लोग मौत का शिकार बन जाते हैं। खासकर विकासशील देशों में स्थितियां और भी जटिल बनती जा रही हैं तथा समस्या पर लगाम में सरकारें पूरी तरह से निष्फल हो रही हैं। बीते कुछ सालों से विकासशील देशों में धूम्रपान-जन्य रोगों की चपेट में आने वाले लोगों तथा मौतों की तादाद में तीव्र बढ़त हुई है। हाल के वर्षों में पांच प्रतिशत से ज्यादा सिगरेट का सेवन बढ़ा है तथा बीस साल के भीतर भारत में ही धूम्रपान में ६० प्रतिशत की बढ़ांतरी हुई है। विकासशील देशों के २३ लाख लोग प्रति वर्ष कैंसर की चपेट में आते हैं जबकि पूरी दुनिया में ४३ लाख लोग। विश्व स्वास्थ संगठन की एक रिपोर्ट के मुताबिक फेफड़ों के कैंसर-रोगियों में ६० प्रतिशत से ज्यादा सिगरेट-सेवी होते हैं। इसीका अंजाम है कि धमनियों की बीमारियां भी बढ़ी हैं। अगर बढ़ते धूम्रपान को रोका नहीं गया तो फिर भारी पैमाने पर कैंसर फैल सकता है। वैसे भी यह चिन्ता-जनक बात है कि कैंसर तीसरी दुनिया में मौत का सबसे बड़ा कारण बनता जा रहा है।

युवा पीढ़ी में सिगरेट का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है। यह निहायत चिन्ता-जनक बात है। भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षा तथा समाजकल्याण मंत्रालय द्वारा कराए गए सर्वेक्षण से पता चलता है कि धूम्रपान करने वाले छात्रों की संख्य दूसरे नशीले पदार्थों का सेवन करने वालों की अपेक्षा कही ज्यादा है। यही नहीं, गांवों के अनपढ़ युवा तथा बच्चे तो और भी ज्यादा धूम्रपान के शिकंजे में जकड़े हैं। विकासशील देशों में तम्बाकू तथा सिगरेट की तीव्र खपत बढ़ने के कारण एक दशक के भीतर ही फेफड़ों तथा मुंह का कैंसर संक्रामक रोग की तरह फैलने का अंदेशा है। यह बात पूरी तरह से प्रमाणित हो चुकी है कि सिगरेट के शौकीन खुद को नुक्सान पहुंचाने के साथ ही गरीब लोगों के लिए भी खतरा बने रहते हैं। उनके परिवारजनों को फेफड़ों के संक्रमण का खतरा ज्यादा रहता है, जिसके चलते ब्रोंकाइटिस, कैंसर आदि रोग उपजाने की आशंका बनी रहती है। यह बात सर्वमान्य है कि धूम्रपान करने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
वाला व्यक्ति सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा कहीं ज्यादा जल्दी मौत का ग्रास बनता है। यही नहीं, धूम्रपान-लती लोगों की ९० प्रतिशत से ज्यादा दिल के दौरे से मौत होने की सम्भावना रहती है। सिगरेट में पाये जाने वाला निकोटिन तो खैर जहर होता ही है। इंडियन चेस्ट सोसाइटी के वैज्ञानिक डा. एस. आर. कामत का मानना है कि धूम्रपान-सेवियों के गले में जलन, अपच, भोजन के प्रति प्रायः अरुचि के साथ पेट में अल्सर तथा कैंसर होने का खतरा बना रहता है। असल में धूम्रपान को बढ़ावा देने में सरकारी उदासीनता से कहीं ज्यादा जिम्मेदार रहा है उसे बढ़ावा देने का आकर्षक तौर-तरीका।

युवा पीढ़ी में सिगरेट का प्रचलन जितनी तेजी से बढ़ रहा है, वह अत्यन्त चिन्ताजनक बात है। भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षा तथा समाज-कल्याण मंत्रालय द्वारा कराये गये सर्वेक्षण से पता चलता है कि धूम्रपान करने वाले छात्रों की संख्या दूसरे नशीले पदार्थों का सेवन करने वालों की अपेक्षा कहीं ज्यादा है।

पश्चिमी यूरोप की सिगरेट कम्पनियां अपने नए बाजारों की तलाश में बड़े नियोजित तरीके से विकासशील देशों को अपना मोहरा बना रही हैं। वे आकर्षक विज्ञापन तथा बेहतर ब्रांड की घोषणा प्रसार माध्यमों से करती हैं। वैसे अर्से से धूम्रपान के खतरों के प्रति आगाह किए जाने तथा अनिवार्य रूप से मुद्रण पैकेटों पर वैधानिक चेतावनी दर्ज किए जाने के बावजूद धूम्रपान सेवियों की तादाद बढ़ी हैं। दुनिया की सर्वाधिक आबादी वाले देश भारत तथा चीन में २५ से ३३ प्रतिशत लोग धूम्रपान के व्यसनी हैं। कैंसर विरोधी अंतर्राष्ट्रीय संगठन की मान्यता है कि पश्चिमी यूरोपीय सिगरेट कम्पनियां तीसरी दुनिया में विकसित देशों के मुकाबले कहीं ज्यादा हानिकारक एवं नशीली सिगरेट भेजती हैं। फिलीपीन में यह पूरी तरह से प्रमाणित हो गया है कि पश्चिमी यूरोप से भेजी जाने वाली सिगरेट वहां के मुकाबले ५० गुना से ज्यादा नशीली थी। सिगरेट-सेवियों की तादाद बढ़ने के साथ-साथ कम्पनियों ने दामों में भी काफी बढ़ोतरी की।

१९७० से ७९ के बीच थाई देशों में ५० प्रतिशत से ज्यादा धूम्रपान बढ़ा तथा वहां कुल आय का २० प्रतिशत सिगरेट का धुआं उड़ा ले जाता है। पाकिस्तान तथा श्रीलंका में पिछले दस सालों के भीतर ६० प्रतिशत से ज्यादा धूम्रपान का सेवन बढ़ा तथा बंगलादेश में आठ प्रतिशत वार्षिक दर से यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बढ़ता जा रहा है। लंदन के रायल कालेज आफ फिजीशियन्स की अद्यतन रिपोर्ट के मुताबिक १९८०-८५ में विकासशील देशों में तम्बाकू की खपत ३९ प्रतिशत हुई जबकि विकसित देशों में महज १.२ प्रतिशत यानी विकसित देशों में धूम्रपान घट रहा है जबकि तीसरी दुनिया में गति है।

भारत सरीखे देशों में हालत और भी ज्यादा गड़बड़ है तथा यहां धूम्रपान बड़ा गम्भीर खतरा बनकर छा रहा है। प्रतिवर्ष यहां ४५.५० करोड़ कि.ग्रा. तम्बाकू की खपत होती है तथा समूची आबादी के वीस प्रतिशत प्रौढ़ धूम्रपान के लती हैं। यहां सिगरेट की प्रति व्यक्ति खपत दो सौ है तथा नगरीय हिस्सों से निकल गांवों में भी यह असर डालने लगी है। ग्रामीण हिस्सों में बीड़ी बेहद लोकप्रिय बनी है तथा पान-सुपारी में भी मजे की तम्बाकू खपती है लेकिन इसके कोई आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया में मुंह के कैंसर के सर्वाधिक रोगी हैं। भारत, बंगलादेश, बर्मा, पाकिस्तान, कम्पूचिया, मलयेशिय, नेपाल, सिंगापुर तथा श्रीलंका आदि देशों में तम्बाकू-पान का ज्यादा शौक है।

भारत में आजादी के बाद से अब तक तम्बाकू का उत्पादन दो गुना से ज्यादा हो गया है तथा इसी गति से तम्बाकू से सम्बद्ध उत्पादनों वाले कारखाने भी बढ़े हैं। भारत में तम्बाकू व्यापार का एक बड़ा हिस्सा संगठित क्षेत्र में आता है तथा देश में ८५,००० से ज्यादा कारखाने तम्बाकू से सम्बद्ध उद्योगों में लगे हैं। इन उद्योगों से ७० लाख लोग जुड़े हैं। इकनामिक टाइम्स रिसर्च ब्यूरो के मुताबिक इन कारखानों में सर्वाधिक बीड़ी निर्माण से सम्बद्ध हैं। सिगरेट तथा बीड़ी उत्पादन तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है। १९७५ में जहां ६००० करोड़ सिगरेटें बनीं, वहीं १९७९ में तादाद बढ़ कर ७८६० करोड़ हो गई। बढ़ता उत्पादन तथा खपत धूम्रपान की बढ़ती लोकप्रियता का ही अंजाम है। उसी लोकप्रियता का फायदा उठाकर तमाम सिगरेट कम्पनियों ने सिगरेटों के दामों में बेइन्तहा बढ़ोतरी की जबकि तम्बाकू किसानों को पहले की अपेक्षा कम मूल्य पर मिल पा रहा है। यानी जिस गति से धूम्रपान तथा उससे जन्य रोगों की बढ़त हो रही है, इसे देख कर इस पर प्रभावी अंकुश लगाने की जरूरत है, अन्यथा हालात और बिगड़ेंगे। □

भारत उनका जो भारत के; विदेशी पादरियों को देश से निकाला जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमर हुतात्मा क्रांतिवीर मदनलाल ढींगरा

—वेदप्रकाश अग्रवाल

राष्ट्रभक्त मदनलाल ढींगरा को भला कौन नहीं जानता होगा ? ये वही मदनलाल ढींगरा थे जिन्होंने जेल में अपने भाई कुन्दनलाल और भजनलाल से भेंट करने से स्पष्ट मना करते हुए ओजस्वी मुद्रा में कहा था, "मैं उनसे कभी नहीं मिलूंगा—जो इस शासन के पिट्ठू और समर्थक हैं।"

१७ अगस्त १९०९ का दिन था। प्रातः ९ बजे का समय। मदनलाल ढींगरा नाम का नवयुवक लन्दन की पेण्टन विले कारागार की एक कालकोठरी में अत्यधिक प्रसन्न मन से स्नान-ध्यान में लगा था। नाश्ता करते समय वह युवक बहुत सुन्दर, छैल-छबीला, प्रसन्न-चित्त दिखाई पड़ रहा था मानो उसका विवाह होने वाला हो। सचमुच आज स्वातन्त्र्य सुन्दरी के साथ उसके गठबंधन की अपूर्व, पुण्य वेला थी। आज उसे फांसी होने वाली थी किन्तु वह हर्षातिरेक में उस कालकोठरी में नृत्य कर रहा था।

तभी कालकोठरी के द्वार से एक अंग्रेज पादरी प्रविष्ट हुआ कि उसे अन्तिम प्रार्थना को कहे। किन्तु मदनलाल ने उसकी ओर दृष्टिपात भी न किया। उपेक्षा से वह बोला—"महोदय आप तशरीफ ले जाइए। मुझे आपकी आवश्यकता नहीं। मैं हिन्दू ही जन्मा था और हिन्दू के रूप में ही मरूंगा। तुम मेरी चिन्ता से मुक्त रहो।" बेचारा पादरी खिसियाना-सा मुंह करके चल दिया और इधर फांसी के फन्दे की ओर चल पड़ा भारत माता का लौह-लाड़ला, सिंह-सपूत, स्वतंत्रता की शमा का परवाना मदन।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
आभायुक्त मुख मण्डल, दीप्तिपूर्ण नेत्र, उन्नत ग्रीवा और सिंह सरीखी मस्तानी चाल।

उसकी गर्दन एक काले कपड़े से ढक दी गयी और डोरी से गांठ लगा दी गयी। यही तो प्रेममय दिव्य गठबंधन था जिसकी वह चिरकाल से प्रतीक्षा कर रहा था। और 'वन्दे मातरम्' तथा 'भारत माता की जय' कहते हुए उसका पार्थिव शरीर नीचे आ गिरा और स्वतन्त्र आत्मा अनन्त में विलीन हो गयी।

वायुमंडल मानो गूंज रहा था—"आओ हे बलिदानी सपूत, तुम्हें किसी ने मारा नहीं। काल की क्या मजाल जो तुम्हारे अस्तित्व को विलुप्त कर देता। तुम तो राष्ट्रमाता के बुलावे पर दौड़े आये थे और उसी के आह्वान पर चले गये हो।"

अमर हुतात्मा के अन्तिम दर्शन के लिए जब एक पारसी अन्दर आया जिसे वीर सावरकर मास्टर कहा करते थे, उसने देखा मृत मदन की मुद्रा वैसी ही निर्भय और स्वाभिमानपूर्ण थी। किन्तु अंग्रेज सरकार ने मदन की अन्तिम इच्छा भी पूर्ण नहीं की। मदन के शव का दाह संस्कार नहीं करने दिया गया अपितु उसे जेल में ही शमशान में गाड़ दिया गया।

मदनलाल ढींगरा के पिता थे डा० साहिब दित्ता जो पंजाब के अमृतसर जिले में प्रमुख चिकित्सक (अंग्रेजी डाक्टर) थे। उन्होंने यश व धन भी पर्याप्त अर्जित किया था। ब्रिटिश राज्य के प्रति उनकी अनुरक्ति पराकाष्ठा पर थी। जितना वे ईश्वर को मानते थे उतना ही ब्रिटिश सत्ता को।

बाल्यकाल से ही मदन स्वस्थ व खिलाड़ी वृत्ति का था। उसकी आकांक्षा लन्दन जाकर इन्जीनियरिंग की डिग्री प्राप्त करने की थी तथा यह बड़ा कार्य भी वह अपने पिता के धन से नहीं बल्कि स्वयं के पुरुषार्थ व उद्योग से करना चाहता था। मदन का विवाह भी हो चुका था व कहा जाता है कि उसके एक सन्तान भी थी किन्तु धुन के धनी मदनलाल के समक्ष कोई भी बात उसकी लक्ष्य पूर्ति में बाधा नहीं बन सकती थी। मदनलाल ने कश्मीर में राजकीय विभाग में कार्य किया। शिमला और कोलकाटांगा में भी उसने कार्य कर इतना धन जुटा लिया कि इंग्लैंड जाकर इन्जीनियरिंग के अध्ययन की अपनी चिर साधना पूरी कर सके। जुलाई १९०६ में वह जल मार्ग से लन्दन रवाना हुआ। अक्तूबर में उसने विश्वविद्यालय में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रवेश लिया। मदन अब अति हर्षित था, आनंदित था। अपनी कल्पना को साकार करने का अवसर जो उसे मिल गया।

एक दिन जब मदन 'इण्डिया हाउस' का नाम सुनकर उसमें प्रविष्ट हुआ तो उसने देखा कि वीर विनायक दामोदर सावरकर नामक देशभक्त अपनी ओजस्वी वाणी से युवकों की मुर्दा रगों में प्राण फूंक रहे थे। वीर सावरकर के सम्पर्क में आने व उनके विचारों को जानने के बाद मदन के हृदय में राष्ट्रभक्ति की सुप्त चिनगारी प्रदीप्त हो उठी। उसी दिन से वीर सावरकर बन गए थे मदनलाल के प्रेरणापुरुष व मार्गनिर्देशक।

१९०८ में वीर सावरकर द्वारा लन्दन में प्रथम भारतीय स्वातन्त्र्य समर (१८५७) की ५०वीं वर्षगांठ मनाने का आयोजन किया गया। भारतीय नवयुवकों ने जब १८५७ की पावन स्मृति के सूचक बिल्ले धारण किए तो अंग्रेज छात्रों की क्रोधाग्नि भड़कना स्वाभाविक था। अंग्रेजों को अपने साम्राज्य पर अत्यधिक दर्प था। उनकी यह धारणा थी कि प्रत्येक अंग्रेज बालक जन्म ही शासन करने के लिए लेता है। मदनलाल के चमचमाते सूट पर से जब अंग्रेज युवक ने क्रोधोन्मत्त होकर भारतीय स्वतन्त्रता की भावनायुक्त वह बिल्ला उतारना चाहा तो न केवल स्वतन्त्रता के दीवाने मदन ने उस छात्र को एक भरपूर तमाचा जड़कर ब्रिटिश इतिहास पर भारतीयता की मुहर लगाई बल्कि उसे एक पटकी लगाकर यह चेतावनी दी—"खबरदार भविष्य में कभी भी किसी भारतीय को अपमानित करने का साहस न करना।'

१९०९ में 'लघु अभिनव भारतमेला' नामक देशभक्तिपूर्ण कवितायें लिखने के अभियोग में विनायक दामोदर सावरकर के बड़े भ्राता श्रीगणेश सावरकर को अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार करके आजीवन कालापानी की सजा सुनायी। इस समाचार ने मदन के हृदय में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति और अधिक प्रतिशोध की भावना भर दी। अतः ब्रिटिश साम्राज्य से प्रतिशोध लेने के मुहूर्त पर चर्चा हुई तो मदन ने नम्र निवेदन पूर्वक वीर सावरकर को सम्बोधित करते हुए कहा—"आप कवि हैं, बेजोड़ वक्ता हैं। महान् बुद्धिजीवी हैं और मैं तो ले देकर निशानेबाज मात्र हूं। आप अन्य सभी बातों में हम सबसे बाजी ले गये हैं किन्तु एक बाजी मुझे भी जीत लेने का अवसर प्रदान कीजिए। हम सब मिलकर भी एक सावरकर पैदा नहीं कर सकते किन्तु आप जीवित रहे तो कई मदनलाल खड़े कर देंगे।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मदनलाल उस धातु के बने थे जिससे क्रांतिकारी बने होते हैं। इसकी परीक्षा भी मदनलाल की हथेली में कील चुभाकर की गयी। पैनी कील त्वचा को छेदकर मांस में गड़ी किन्तु मदन के मुख से उफ तक न निकली। मदन मुस्कुराता रहा। सर्वथा निश्चिन्त और पीड़ा से निर्लिप्त। सब ऐसी अद्भुत परीक्षा लेने व देने वाले पर चकित थे। मदन मानो मन ही मन कह रहा था—

वक्त आने दे बता देंगे
तुझे ऐ आसमां
हम अभी से क्या बतायें।
क्या हमारे दिल में है।

बाबाराव सावरकर को ८ जून १९०९ को काले पानी की सजा सुनाई गयी और ९ जुलाई १९०९ को नेशनल इण्डियन एसोसिएशन की वर्षगांठ का लन्दन के जहांगीर हाल में आयोजन था, मुख्य अतिथि के रूप में पधारने वाले थे कर्जन वायली जिन्हें चिर निद्रा में सुलाने का संकल्प मदनलाल ढींगरा कर चुका था। यद्यपि मदनलाल का ८ जून का प्रयास खाली गया।

सभा का निर्धारित समय सन्निकट था। मदन ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया। तभी कर्जन वायली भी वहां आ गया। अपने शिकार को देख मदन के मुख पर एक मन्द मुस्कान थिरक उठी। सभा की कार्रवाई समाप्त होते ही वायली उठकर खड़ा हुआ। परिचित होने के कारण मदन को आगे बढ़ने में कोई विघ्न न हुआ। तभी मदन ने जेब से रिवाल्वर निकालकर एक के बाद एक छः गोलियां दागीं। कर्जन वायली कटे वृक्ष की भाँति भू लुंठित हो गया। अंग्रेज भक्त कावसलाल काका जब मदन की ओर झपटा तो छटी गोली ने उसका भी काम तमाम कर दिया था।

मदन ने स्वयं आत्मसमर्पण कर दिया। उसे कोई शीघ्रता नहीं थी। गिरफ्तारी के बाद भी उसके मुख मंडल पर सहज मुस्कान थी।

वायली की हत्या से एक ओर जहां ब्रिटिश राज्य थर्रा उठा, वहां दूसरी ओर भारत स्थित क्रांतिकारियों के मन-मयूर नाच उठे। राजभक्त भारतीयों ने मदन के इस साहसिक कार्य की भर्त्सना की। उसके पिता ने उसे अपना पुत्र व भाई ने अपना भाई मानने से इनकार कर दिया।

चाटुकार भारतीय अपने को राजभक्त सिद्ध करने को आतुर थे। ५ जुलाई को लंदन के कैक्सटन हाल में ढींगरा के कृत्य की निन्दा करने वाले भारतीयों की एक सभा थी। सभा में जब यह कहा गया कि यह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभा सर्वसम्मति से ढींगरा के कृत्य का तीव्र विरोध करती है, तो पीछे से 'नहीं, नहीं, सर्व सम्मति से नहीं की ध्वनि आयी।' कौन है पूछने पर शांत व गम्भीर स्वर में उत्तर मिला—'मैं; सावरकर, इस प्रस्ताव के विरुद्ध हूं।' सभा में कोलाहल मच गया। अनेक आवाजें आयीं—'इसे मारो' किन्तु सावरकर नाम से लोगों के दिल दहले हुए थे। तभी भावनगरी का इशारा पाकर एक बलिष्ठ यूरेशियन अधगोरा साहब दौड़ता आया व उसने सावरकर जी की आंख पर घूंसा मारा। चश्मा टूट गया, रक्त बह निकला किन्तु सावरकर ने कोई प्रतिकार न करते हुए कहा—"मैं अब भी इस प्रस्ताव के विरुद्ध हूं।' सावरकर को लहूलुहान देखकर एक छोटे कद के भारतीय युवक ने अपने हाथ की लाठी यूरेशियन गोरे के सिर में दे मारी। गोरा स्वयं को संभाल न सका व निढाल होगया।

लन्दन टाइम्स में यह समाचार 'एक असली ब्रिटिश घूंसा' के शीर्षक से प्रकाशित हुआ तो अगले दिन उसका उत्तर छपा—'एक सीधी भारतीय लाठी।' लाठी का प्रहार करने वाला था शिरुमलाचार्य।

मदन के कृत्य के समर्थन में और अनेक प्रशंसा के स्वर उभरे। किन्तु ब्रिटिश राज्य भला ऐसों की क्यों परवाह करता। आखिर मदन को फांसी की सजा सुना दी गयी।

यद्यपि न्यायालय में मदन अपना लिखित वक्तव्य न पढ़ सका; कारण पुलिस द्वारा उसे छलपूर्वक गायब करा दिया गया था। किन्तु वीर सावरकर के प्रयासों से जब वह वक्तव्य इंग्लैंड व विदेशों के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ तो मदन का मनमयूर हर्षोन्मत्त हो नृत्य कर उठा।

वह ऐतिहासिक वक्तव्य इस प्रकार था—"मैं मानता हूं कि मैंने एक अंग्रेज का रक्त बहाने का प्रयास किया किन्तु उसका उद्देश्य यही था कि अंग्रेजों ने जिस प्रकार भारतवर्ष के देशभक्त युवकों को फांसी, कालापानी तथा लम्बी सजायें देने का क्रम जारी कर रखा है, उसके प्रति प्रतिकारात्मक विरोध प्रकट करूं। ऐसा करते समय मैंने अपनी आत्मा के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति से नहीं पूछा न उसकी राय ली। मैंने जो कुछ किया कर्त्तव्य के नाते ही किया।

हिन्दू होने के नाते मेरा विश्वास है कि आत्मा कभी मरती नहीं अतः शरीर गिरने के पूर्व प्रत्येक भारतीय दो अंग्रेजों को समाप्त करता चले तो देश की स्वतन्त्रता एक दिन में प्राप्त की जा सकती है। जब तक भारत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वतन्त्र न हो जाए; श्रीकृष्ण का देश वासियों के लिए यही कर्म सन्देश है।

मेरी अन्तिम कामना है कि मैं फिर से भारत की ही गोद में जन्म लूं तथा पुनः देश को स्वतन्त्र कराने के कार्य में संलग्न हो जाऊं मैं चाहूंगा कि मेरी पुनः मृत्यु होने तक मेरा प्रिय देश स्वतन्त्र हो जाए। भारत के स्वतन्त्र होने तक मैं इसी ध्येय के लिए बार-बार जन्म लूं और मृत्यु का वरण करूं। प्रभु मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करें—मेरी यही कामना है—वन्दे मातरम्।"

और इस नरकेसरी के अभूतपूर्व बलिदान ने सारे राष्ट्र में एक नई चेतना उत्पन्न की। लायड जार्ज, विन्सटन चर्चिल आदि ने इस बलिदान की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। आज भी उस महान् पराक्रमी का पावन बलिदान देश की संतान को स्वातन्त्र्य रक्षा का आह्वान कर रहा है। □

जन-ज्ञान (मासिक)

की

१० प्रतियां केवल २०) की वी० पी० से मंगाएं और अपने मित्रों को भेंट करें।

२० या २० से अधिक प्रतियां मंगाने पर मूल्य १.७५ पैसे प्रति होगा।

कागज—छपाई—डाक व्यय सब महंगे

पर प्रचार के लिए

हम जन-ज्ञान आज भी लागत से कम मूल्य पर

दे रहे हैं।

हिन्दू राष्ट्र घोषित कराने के लिए

हमारा साथ दीजिए।

जन-ज्ञान (मासिक), नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसको कैसे माफ करेंगे

(१)

सदियों के शासन में
जिसने,
वर्षों तक हमको रुलाया,
मां-बहनों को हाथ लगाया।
यही नहीं—
हम चिढ़ें, हमारा धर्म भ्रष्ट हो,
इसीलिए,
जिसने प्यारी गोमाता की हत्या कर
मांस हमारे मुख में डाला
यह कैसे विस्मृत कर देंगे ?
उसके कैसे मित्र बनेंगे ?
जिसकी चादर पर
एक बूंद भी,
गोमाता का रक्त लगा है,
उसको कैसे माफ करेंगे ?

(२)

भगवान् राम की प्यारी नगरी पर,
जिसने तलवार चलाई,
बलराम-कृष्ण की प्यारी मथुरा पर भी,
जिसने घात लगाई,
कहता है इतिहास—
उन्हीं हाथों ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन्दिर विश्वनाथ को तुड़वाया
और सोमनाथ को लुटवाया।
फिर यही नहीं—
सिर कटी, भुजा से हीन
हजारों पत्थर की बेजान मूर्तियाँ
कहतीं जिसकी कुटिल कहानी
उसको अनसुना कर देंगें ?
कैसे उसके मित्र बनेंगे ?
जिसके मस्तक पर,
लगा हुआ हुआ है...
मूर्तिभंजक का धब्बा,
हम उसको कैसे माफ करगे ?

(३)

हाथों में तलवार पकड़कर...
'करो धर्म स्वीकार हमारा'
ऐसा था जिसका नारा,
तब,
जो कायर थे टूट गये,
मानो वे पीछे छूट गये।
पर,
झुके नहीं, जो अड़े रहे;
अपने ही पथ पर डटे रहे;
उन पर उसने आघात किया;
तलवारों से सौगात दिया।
फिर, धर्म के अन्धे जल्लादों ने;
बच्चों को भी न छोड़ा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवित दीवाल में चुनवाया
खौलते तेल में डलवाया।
फिर यही नहीं—
सौ नहीं, हजारों माताओं को;
जौहर में;
निज धर्म बचाने को
जिसने मजबूर किया;
उससे हम हाथ मिलाएंगे ?
कैसे हम गले लगाएंगे ?
जिसके तलवारों से घायल;
अब तक
हिन्दू का तन-मन है,
हम उसको कैसे माफ करेंगे ?

—अरुण देवरसी

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का निर्वाचन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवले की अध्यक्षता में आर्य केन्द्रीय सभा का निर्वाचन सर्वसम्मति से किया गया, जिसमें महाशय धर्मपाल प्रधान और श्री अशोककुमार सहगल महामन्त्री निर्वाचित हुए। प्रधान और महामन्त्री को कार्यकारिणी के गठन का अधिकार दिया गया। निर्वाचन से पूर्व श्री शालवाले ने सभा को सम्बोधित करते हुए सामूहिक और सम्मिलित प्रयास के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने निर्वाचन के अवसर पर शान्ति, सद्बुद्धि और एकता से काम लेने का आग्रह किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सृजन

(१)

ले समिष्ट भौतिक तत्त्वों की, नवयुग का शृंगार सजा है,
लेकिन कटु है.....सर्वनाश का, लेकर झंझावात चला है।
सुमधुर हैं ये स्वप्न संजीले, मुक्ताओं से योग मिला है,
नहीं जानता किन्तु अभागे ! अंगारों का ज्वाल खड़ा है ।।

(२)

स्वप्न मधुर होते निश्चय ही, उनमें सुख का सार छिपा है :
भोग और तृष्णा तरुणी का, मोहक मायाजाल रचा है।
नवयुग होगा अतिशय सुन्दर, ऐसा मन में भाव छिपा है,
नहीं जानता किन्तु अभागे ! अंगारों का ज्वाल खड़ा है ।।

(३)

कंचन सा होता प्रतीत पर, बिखर जाएगा क्षणभर में,
यादें शेष रहेंगी केवल, प्राणों में ..अन्तस्तल में।
जागो ! अभी समय है सचमुच, विषधर का फुंकार हुआ है,
नहीं जानता किन्तु अभागे ! अंगारों का ज्वाल खड़ा है ।।

(४)

छोड़ो मोहक स्वप्नों को तुम, कर्मक्षेत्र में रास रचाओ,
धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष का, अनुपम तुम संसार बसाओ।
श्रम से मिलकर भोग धन्य हो, मुक्तिपथी का मार्ग क्या है।
नहीं जानता किन्तु अभागे ! अंगरों का ज्वाल खड़ा है ।।

(५)

चक्रवात होने पर ही तो, सुन्दर रेखाएं खिंचती हैं,
गिरे भवन की नयी नींव पर ही तो महल चमकते हैं।
ध्वंस, ध्वंस, हां ध्वंस...तभी तो सृजन कला का पाठ पढ़ा है,
नहीं जानता किन्तु अभागे ! अंगारों का ज्वाल खड़ा है ।।

—कमलेशकुमार थापक 'पीयूष'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्योतिषियों की भविष्यवाणी कितनी सच, कितनी झूठ !

—काशीनाथ शास्त्री

समाचार पत्रों में ज्योतिषियों की भविष्यवाणियां प्रकाशित होती रहती हैं जिनमें न केवल हमारे देश के नेताओं व प्रसिद्ध व्यक्तियों के (उनकी जन्म कुंडली एवं हस्तरेखाओं के आधार पर) हानि-लाभ, यश-अपयश, आयु और मृत्यु तथा चुनाव में हार-जीत इत्यादि की निश्चित जानकारी दी जाती है बल्कि हमारे देश भारत व अन्य देशों के भविष्य का भी उल्लेख रहता है। एक देश की दूसरे देशों के साथ संधि-विग्रह, वहां के राजनीतिज्ञों का भविष्य और भारत के साथ उन देशों व राजनीतिज्ञों के सम्बन्ध इत्यादि अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर भी भविष्यवाणियां की जाती हैं।

हमारे (इन पंक्तियों के लेखक के) पास कई वर्षों की भविष्यवाणियां सुरक्षित हैं जिनमें से यहां हम गत वर्ष एवं उसके कुछ समय पूर्व की कतिपय प्रमुख नेताओं और बहुचर्चित घटनाओं के सम्बन्ध में की गई कुछ ही भविष्यवाणियों का सत्यासत्य के निर्णय के लिए उल्लेख कर रहे हैं। उदाहरणार्थ— सर्वप्रथम भूतपूर्व प्रधानमंत्री आदरणीया श्रीमती इन्दिरा गांधी के सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणियों को ही लीजिए। दि. ३१-८-८३ के 'नवभारत' नागपुर में प्रकाशित एक ज्योतिषी जी की भविष्यवाणी के अनुसार श्रीमती इन्दिरा गांधी की जन्म कुन्डली में शनि के नक्षत्र का उपपति सूर्य है और शनि भी शनि के नवमांश में होने से अति कुशल राज्यकर्त्ता है। ऐसी स्थिति में १-१०-८९ तक श्रीमती गांधी के विश्व में उनके सूर्य के समान प्रभावशाली बने रहने का योग है। 'नवभारत' के इसी अंक में प्रकाशित एक अन्य ज्योतिषी के कथनानुसार (भारत की तत्कालीन ग्रह स्थिति के आधार पर) भारत में दिनोंदिन राजनीतिक परिस्थितियां अत्यधिक अस्थिर व विवादास्पद रहेंगी। स्थिति से निपटने के लिए श्रीमती गांधी को मध्यावधि चुनाव कराना अपरिहार्य होगा। ऐसे इस तरह की पहल १४ जनवरी १९८४ के बाद ही ली जावेगी। इसी पत्र में एक अन्य ज्योतिषी ने भी जनवरी १९८४ में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मध्यावधि चुनाव की प्रबल सम्भावना व्यक्त की थी। इनकी भविष्यवाणी के अनुसार जनवरी १९८५ में ही पाक, अफगानिस्तान और भारत को युद्ध में भी रत हो जाना चाहिए था। विडम्बना यह है कि एक ज्योतिषी जिस समय में किसी व्यक्ति या घटना के बारे में जो कुछ कहता है तो दूसरा ज्योतिषी उसी समय में उसी व्यक्ति या घटना के बारे में ठीक उसके विपरीत बताता है। उदाहरणार्थ—यदि एक ज्योतिषी ने १९८३ में भविष्यवाणी की कि 'पंजाब शांति स्थापना इन्दिरा जी की मनोकामनानुसार होगी, पंजाब प्रश्न पर इन्दिरा जी की जीत होगी।' तो दूसरे ने घोषणा की कि 'प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी असम व पंजाब की समस्याओं को निपटाने में असमर्थ रहेंगी।' इसी प्रकार दिनांक ४-५-१९८४ के 'नवभारत' भोपाल में ('माया' से साभार उद्धृत करके) भारत के जाने-माने प्रसिद्ध ज्योतिषी श्री के० ए० दुबे 'पदुमेश' की भविष्यवाणी श्रीमती इन्दिरा गांधी, श्री राजीव गांधी, श्री अटलबिहारी वाजपेयी, चौधरी चरणसिंह, श्री ए० आर० अंतुले, डा. जगन्नाथ मिश्र, श्री जगजीवन राम, श्री यशवन्तराव चव्हाण, श्री अर्जुनसिंह (भू०पू० मुख्यमंत्री, म. प्र.), श्री चन्द्रशेखर (अध्यक्ष जनता पार्टी) और श्रीमती मेनका गांधी के भविष्य के सम्बन्ध में प्रायः सभी की जन्म कुन्डली सहित प्रकाशित हुई थी जिसकी प्रमुख बातें ये हैं:—(१) भारत पर वर्तमान में केतु की महादशा में पुनः चुनाव होने जा रहे हैं। ये चुनाव जून १९८४ तक होंगे। क्योंकि नई सरकार केतु की महादशा में बनेगी अतः यह सरकार ३ जनवरी १९८७ से अधिक नहीं चलेगी। (२) श्रीमती इन्दिरा गांधी के सम्बन्ध में उनकी जन्म कुन्डली के आधार पर बताया गया कि वर्तमान में (१९८४ में) शनि महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है जो शक्ति में भारी वृद्धि करेगी। मंगल, शनि दोनों ही सशक्त ग्रह हैं इस कारण श्रीमती गांधी दक्षिण तथा उत्तर प्रदेश से चुनाव लड़ेंगी और पुनः लोकसभा की सदस्या हो जावेंगी तथा प्रधानमंत्री का पद उनके लिए सुरक्षित है। (३) अटलबिहारी अपनी आयु के ६१, ६२ वें वर्ष में अर्थात् १९८६–८७ में पुनः सत्ता में आयेंगे। दल कोई भी हो सकता है। (४) श्री जगजीवनराम की हथेलियों को भी देखने का अवसर मिला। उस आधार पर मैं (के० ए० दुबे 'पद्मेश') यह निश्चित रूप से कह सकता हूं कि श्री जगजीवनरास कभी भी प्रधानमंत्री नहीं बन सकते। आगामी चुनाव में सासाराम क्षेत्र से सफलता मिल जायेगी। लोकसभा में प्रवेश निश्चित है। शायद मंत्री भी बन जायें। (५) चौधरी चरणसिंह को पुनः प्रवेश मिलेगा। वह श्रीमती गांधी के बाद सर्वाधिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होंगे। (६) महाराष्ट्र के भू० पू० मुख्य मंत्री ए० आर० अंतुले का जन्म सिंह लग्न में हुआ। लग्नेश सूर्य छठे भाव में बुध के साथ स्थित है जिस कारण जीवन में भयंकर अपयश भी मिलता रहेगा। ऐसा भी हो सकता है कि न्यायालय से दंड मिले। (७) यशवंतराव चव्हाण को लोकसभा चुनाव में सफलता मिलेगी। इतना ही नही, आगामी मंत्रिमंडल के सदस्य भी होंगे। (८) मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंह का मुख्य-मंत्री के पश्चात् लोकसभा में जाना निश्चित है। लोकसभा के सदस्य ही नहीं बल्कि वह मंत्रिमंडल में भी शामिल किये जायेंगे।

बम्बई से निकलने वाली साप्ताहिक मराठी पत्रिका 'श्री' के दिनांक १४ जुलाई १९८४ के अंक में प्रकाशित भविष्यवक्ता आचार्य शिव की भविष्यवाणी तो सबसे अधिक विस्मयकारी व चौंका देने वाली है। भविष्य-वाणी के साथ भविष्यवक्ता महोदय का संक्षिप्त जीवनवृत्त देते हुये लिखा है कि "आचार्य शिव राज्यशास्त्र में एम० ए० हैं एवं इलाहाबाद के निवासी हैं। इन्होंने भारतीय तथा पाश्चात्य अनेक ज्योतिष शास्त्रों का अध्ययन करके अपनी खुद की 'शिव-पद्धति' खोज निकाली है। इनकी आज तक सभी भविष्यवाणियां सही निकली हैं और आगे भी खरी उतरेंगी ऐसा इनका दावा है।" अतः हम यहां उनकी भविष्यवाणियों का हिन्दी रूपान्तर देना आवश्यक समझते हैं:—"(१) भारत के चुनाव १९८५ के बाद होंगे (जबकि चुनाव दिसम्बर १९८४ में ही हो गये—लेखक) (२) कांग्रेस को ४०% वोट मिलेंगे (३) अटलबिहारी वाजपेयी अथवा बहुगुणा प्रधानमन्त्री बनेंगे। (४) श्रीमती गांधी के बाद में तथा वाजपेयी के पहिले कुछ समय के लिए एक महिला प्रधान मंत्री बनेगी। उसके नाम का पहला अक्षर जे एम, एस अथवा आर होगा। (५) राष्ट्रपति जैलसिंह अपने ५ वर्ष पूरे नहीं करेंगे। (६) पंजाब की समस्या जल्दी समाप्त होने वाली नहीं है। (७) १६ जुलाई १९८४ के बाद केन्द्रीय मंत्रिमंडल में परिवर्तन होगा और प्रकाशचन्द्र सेठी त्यागपत्र दे देंगे। (८) २३ जुलाई १९८४ के बाद असम, महाराष्ट्र, पंजाब, हरयाणा, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और आंध्रप्रदेश में सर्वत्र जोरदार क्रान्ति या दंगे होंगे। (९) ८ अगस्त १९८४ के पहिले महाराष्ट्र मंत्रिमंडल बर्खास्त हो जायेगा। (१०) श्री अंतुले निर्दोष छूट जायेंगे और पुनः मंत्रिमंडल में शामिल हो जायेंगे। (११) ३ मार्च १९८६ के रात्रि ११ बजे के बाद श्रीमती इन्दिरा गांधी के लिए बहुत खराब है। (१२) खालिस्तान का स्वप्न पूरा नहीं होगा। (१३) १९९४ तक पाकिस्तान भारत पर आक्रमण नहीं करेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
रूस की मित्रता झूठी हो जाएगी। अपनी खरी मित्र अमेरिका हो जायेगा। (१४) १० अक्तूबर १९८५ को सायंकाल ५ बजकर ५५ मिनट पर तीसरा महायुद्ध शुरू होगा। इस युद्ध की शुरुआत बंगलादेश या काबुल से होगी। इस युद्ध में भारत तटस्थ रहेगा। (१५) श्रीमती मेनका गांधी, श्री राजीव गांधी और श्री जगजीवनराम का राजनीतिक जीवन समाप्त हो जाएगा। (१६) १९९० में भारत दंगों के मामलों में सर्वोपरि हो जाएगा।"

अब हमें इन भविष्यवाणियों के सत्यासत्य की जांच करनी है। जिन भविष्यवाणियों का सम्बन्ध आगे होने या न होने वाली घटनाओं से है उनके बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। यह तो भविष्य ही बतायेगा कि वे घटनायें की गई भविष्यवाणियों के अनुसार घटित होती और सत्य निकलती हैं या नहीं? अभी तो केवल घटित घटनाओं के सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणियों को ही सत्य की कसौटी पर परखना है। उदाहरणार्थः—हमें यह देखना है कि (१) श्रीमती इन्दिरा गांधी (की गई भविष्यवाणियों के अनुसार) दिसम्बर १९८४ में चुनाव में भाग ले सकीं और पुनः प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हो सकीं या नहीं? स्पष्ट है कि ३१ अक्तूबर १९८४ को ही श्रीमती इन्दिरा गांधी की दुर्भाग्यपूर्ण निर्मम हत्या कर दी गई। इस तरह वे न तो चुनाव में भाग ले सकीं और न पुनः प्रधानमंत्री बन सकीं। इस प्रकार उनके सम्बन्ध में की गई भविष्यवाणियां शत-प्रतिशत झूठ साबित हुईं। (२) श्रीमती इंदिरा गांधी के बाद कुछ समय के लिए न तो कोई महिला प्रधानमंत्री बनी और न श्री अटलबिहारी बाजपेयी या बहुगुणा ही प्रधानमंत्री बने। (३) जनवरी १९८४ में मध्यावधि चुनाव भी नहीं हुए। चुनाव तो दिसम्बर १९८४ में संपन्न हुये। (४) जनवरी १९८५ में पाक, अफगानिस्तान और भारत युद्ध में भी रत नहीं हुए। (५) भू० पू० रक्षा मंत्री स्व० श्री यशवन्तराव चव्हाण भी न तो चुनाव में भाग ले सके और न वर्तमान मंत्रिमंडल के सदस्य हो सके। उनका भी दुःखद निधन चुनाव से कुछ समय पहले ही हो गया। (६) १४ जुलाई १९८४ के 'श्री' में प्रकाशित भविष्यवाणी के अनुसार ८ अगस्त १९८४ के पहले महाराष्ट्र मंत्रिमंडल बर्खास्त भी नहीं हुआ। इत्यादि-इत्यादि।

अब प्रश्न यह है कि एक ही समय में किन्ही विशिष्ट घटनाओं या व्यक्तियों के सम्बन्ध में विभिन्न ज्योतिषियों के द्वारा की गई भविष्यवाणियां परस्पर में एक दूसरे के विरुद्ध अथवा सर्वथा असत्य क्यों निकलती हैं? यदि भविष्यवाणियां किसी वैज्ञानिक पद्धति या गणित पर आधारित हैं तो 'दो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और दो चार होते हैं' की भांति सबका उत्तर एक ही व सही आना चाहिए। यदि यह कहा जाय कि कभी-कभी गणित करने में भूल हो जाती है तो अधिकृत शब्दों में यह कहना कि ऐसा ही होगा और हमारी भविष्यवाणी सही निकलेगी ऐसा दावा करना असत्य है। अथवा जब भविष्यवाणी का सही होना, न होना अनिश्चित ही रहता है तो फिर भविष्यवाणी करना ही व्यर्थ है। यों घुणाक्षर न्याय से अर्थात् जिस प्रकार लकड़ी में घुन लग जाने पर कोई अक्षर अनायास बन जावे या अंधे के हाथ बटेर लग जावे उसी प्रकार किसी भविष्यवाणी का सही निकल जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वैसे भी किसी वर्तमान घटनाक्रम को देखते हुए उसके परिणाम के सम्बन्ध में अनुभवी राजनीतिज्ञों या विचारशील व्यक्तियों का अनुमान प्रायः सही निकलता है। पुनः अस्तित्व में आयी हुई घटना का कुछ न कुछ परिणाम तो निकलेगा ही। श्री अंतुले के सम्बन्ध में ज्योतिषियों के दो मत हैं। एक ने भविष्यवाणी की है कि 'हो सकता है कि श्री अंतुले को न्यायालय से दंड मिले।' दूसरे ने कहा है कि श्री अंतुले निर्दोष छूट जायेंगे।' अब यदि विचार किया जाए तो दो में से कोई न कोई एक परिणाम निकलेगा ही अर्थात् या तो श्री अंतुले को दंड मिलेगा या निर्दोष छूट जायेंगे।

इन तथ्यों के आधार पर यही निष्कर्ष निकलता है कि फलित ज्योतिष एवं उस पर आधारित भाविष्यवाणी कोरी कल्पना है और लोगों को भ्रम में डालकर खरी कमाई का एक साधन है। □

भारत की अखण्डता भारत के महान् भविष्य के लिए आवश्यक

भारत स्वतन्त्र हो गया, पर अखण्डता प्राप्त नहीं कर सका। इस अखण्डता को प्राप्त करना है और इसे किया जाएगा। जैसे बने और जो भी उपाय अपनाना पड़े, इस विभाजन को मिटाना होगा। भारत की अखण्डता भारत के महान् भविष्य के लिए आवश्यक है।

——महायोगी श्री अरविन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन बूढ़ा तो तन बूढ़ा

---सुरेशचन्द्र वेदालंकार

मैं सत्तर वर्ष का हो गया हूं। अब भी कार्य करता हूं। पर मुझे अपनी धर्म पत्नी का स्वास्थ्य चिन्ता जनक लगता है। उनकी आयु में और मेरी आयु ७-८ वर्ष का अन्तर है। पर कार्य शक्ति और विचार शक्ति में वह वृद्ध हो चुकी हैं और उनकी वृद्धता मेरे कार्य के मार्ग में अवरोध पैदा करती रहती है। आश्चर्य तो तब होता है, जब किसी भी व्यक्ति को कोई रोग हो जाय और उसकी चर्चा उनके सामने हो जाय तो वह रोग कुछ समय के लिये उन्हें अवश्य हो जायगा। रोग भले ही न हो पर उसकी आशंका तो हो ही जायगी।

मुझे ज्वालापुर गुरुकुल के आचार्य स्वर्गीय पं० नरदेव शास्त्री से एक बार मिलने का अवसर मिला। मैं जब पढ़ता था तब आचार्य जी के दर्शन किये थे। वे दर्शनीय तो थे ही। उनके चेहरे पर दीप्ति, वाणी में ओज और शब्दों में हृदय की पवित्रता की प्रतिध्वनि विद्यमान रहती थी। गुरुकुल ज्वालापुर का आचार्य, आर्यसमाज की विभूति, ज्ञान की प्रतिमा, राष्ट्र के के लिये सर्वस्व का निष्काम बलिदान करने वाला वह ऋषि जब हमें अन्दर आने का आदेश देता है तो श्रद्धा से हमारा सिर उनके चरणों पर झुक जाता है। प्रणाम के बाद मैंने कहा "आचार्य जी, मुझे तो आप पहचानते न होंगे पर मैं गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ते समय आपके दर्शन अनेक बार कर चुका हूं। मेरा नाम सुरेशचन्द्र वेदालंकार है। नाम सुनते ही आचार्य जी अपनी चौकी से एक बच्चे की भांति तेजी से उछले और उन्होंने अपने स्नेहालिंगन एवं समादर से मुझे कृतकृत्य कर दिया। गुरुकुल कांगड़ी के आयुर्वेद के प्राचार्य डा० अनन्तानन्द जी आयुर्वेदालंकार भी मेरे साथ थे। बड़ी तेजी और उत्तेजना से आचार्य जी ने कहा "सुरेश, सुरेश, तूने मुझे भी हरा दिया, मुझे भी हरा दिया।"

मैं चक्कर में पड़ गया कि हराने और जिताने की क्या बात है? अभी मैं यह सोच ही रहा था कि हम दोनों को बैठाते हुए वे बोले 'सुरेश' तू तो गजब के लेख लिखता है। उनको 'आर्यमित्र' सार्वदेशिक आर्य आदि पत्रों में पढ़कर मुझे जो उल्लास और प्रसन्नता होती है, क्या बताऊं? तुम्हारे लेखों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की भाषा, विचार, प्रेरणा और जीवन धारा प्रशंसनीय है।" उन्होंने बहुत कुछ कहा और आचार्य जी जैसे व्यक्ति से अपनी प्रशंसा सुनकर अभिमान तो स्वाभाविक है परन्तु उनकी नम्रता और अभिमानशून्यता अनुकरणीय ।

डा० अनन्तानन्द जी जो मेरे सहपाठी हैं। इन सब बातों को सुनकर तथा पूज्य आचार्य जी के ८० वर्ष की अवस्था के उत्साह को देख कर बोल उठे—"आचार्य जी, आप इस आयु में भी—इस वृद्धावस्था में भी इतना काम कैसे कर लेते हैं? आश्चर्य होता है।

आचार्य जी ने उस समय जो कहा वह कितना प्रेरणाप्रद है, देखिये। वे बोले—

"वृद्धता कुछ नहीं। वृद्धावस्था का सम्बन्ध उम्र से नहीं है। वर्ष गिनने से तो संसार के बहुत-से अतिवृद्ध व्यक्ति भी उस अवस्था तक नहीं पहुंचे मिलेंगे, जिसे हम मध्य आयु कहते हैं। पर प्रत्यक्षतः वृद्ध वे इसलिये लगते हैं कि उनका मन वृद्ध हो गया है। वास्तव में मन की उम्र ही वृद्धता की सही कसौटी है।" एक कहकहा लगाते हुए उन्होंने कहा "मैं तो अभी केवल अस्सी वर्ष का बालक ही हूं।" वे कहने लगे—

"जैसे ही किसी के जीवन में ताजगी तथा रुचि समाप्त हो जाती है, वह वृद्ध हो जाता है।" स्वामी श्रद्धानन्द जी कहा करते थे कि वृद्धावस्था का सम्बन्ध उम्र से नहीं। मेरे आचार्य अभयदेव जी या अन्य किसी कांगड़ी के उपाध्याय ने एक बार स्वामी श्रद्धानन्द जी के विषय में बताया था कि उनका विचार था कि जब व्यक्ति को घास की हरीतिमा में उषा की उज्ज्वल प्रभा में, संध्या की छिटकती लाली में, श्यासल मेघों में, चन्द्रमा की शीतल चांदनी में नदियों के कलकल में, झरनों की झर-झर में कोयल की कू-कू में, पपीहे की पी-पी में, हिमालय की बर्फीली चोटियों के ऊपर पड़ती सूर्य की उज्ज्वल चम-चमाहट में, फूलों की सुन्दरता और सौरभ में अथवा वनों की सुषमा में आनन्द नहीं मिलता तो वह व्यक्ति वृद्ध की श्रेणी में आता है।"

स्वामी जी का विचार था कि जो निराशावादी हैं, वे वृद्ध हैं। आस्था-हीन तथा मानवद्वेषी व्यक्ति भी वृद्ध हैं। जो व्यक्ति भविष्य से भयभीत होने लगता है, सुरक्षा की भावना जिसके भीतर उद्वेग पैदा करने लगती है, जो नये साहसिक कार्यों को हाथ में लेने से डरने लगता है, जो व्यक्ति

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह इच्छा करने लगता है, कि वर्ष, दिन और घन्टे जल्दी-जल्दी बीतें अर्थात् जब व्यक्ति में केवल समय काटने की भावना रह जाती है तो समझ लीजिये कि बुढ़ापा उसके मन पर सवार हो गया। उन्होंने बतलाया कि जब व्यक्ति यह विचार करने लगता है, कि वैयक्तिक लाभ ही मानव जीवन का चरम उद्देश्य है तो समझ लीजिये कि वह वृद्ध होने लगा है।" स्वामी श्रद्धानन्द का एक लेख कभी पढ़ा था। उसमें उन्होंने बताया था "कोई व्यक्ति चाहे कितनी भी कम उम्र का हो, यदि वह अपने को अकस्मात् भाग्यहीन और दीन समझने लगे तथा असफलता के स्वप्न देखे तो वह अकाल में ही बुढ़ापे को आमंत्रित कर बैठता है, यह एक निश्चित सत्य है।

डा० अनन्तानन्द ने प्रश्न किया कि आचार्य जी, वृद्धावस्था तो मानव जीवन का शिथिल जड़ तथा अनुत्पादक काल है। तब इस अवस्था का क्या उपयोग है ? प्रायः इस अवस्था में व्यक्ति दुःखी और असमर्थ हो जाते हैं। तब क्या भला उम्र का तन से सम्बन्ध नहीं ?"

आचार्य जी ने कहा कि यह तो ठीक है कि आयु का प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है। परन्तु जिसने अपने मन को बूढ़ा नहीं किया, वह बुढ़ापे में भी चमत्कारिक कार्य करेगा। उन्होंने श्रीपाद दामोदर सतवलेकर का नाम लिया और बताया कि उनका वेदों पर कार्य पचहत्तर वर्ष की आयु के बाद प्रारम्भ हुआ। क्या वह महत्वपूर्ण नहीं ? स्वामी श्रद्धानन्द और स्वामी दर्शनानन्द ने शुद्धि का कार्य और दार्शनिक कार्य साठ वर्ष से अधिक होने पर किया। नारायण स्वामी जी ने तो संस्कृत न पढ़ी थी परन्तु संस्कृत पढ़कर अपनी आयु के अन्तिम दिनों में उनका लिखा उपनिषदों का भाष्य कितना उपयोगी, सरल और आकर्षक है। आप जानते ही होंगे। इतिहास से साठ सत्तर अथवा अस्सी वर्ष की उम्र वाले व्यक्तियों को सफलतायें निकाल दीजिये, तो दुनिया की बहुत बड़ी क्षति होगी।"

एक व्यक्ति का लेख पढ़ रहा था उसमें आचार्य जी की बात की पुष्टि के कुछ उदाहरण पढ़े। अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि लांगफेलो ने अपनी वृद्धावस्था में लिखी 'मारीच्युरी सैल्यूटेमस' नामक पुस्तक में लिखा है "कैटो ने अस्सी वर्ष की उम्र में यूनानी भाषा सीखी, अस्सी वर्ष में ही सोफोक्लीज ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ओडचल' लिखी। सीमोनाइडीज ने अपनी कविताओं पर अस्सी वर्ष के बाद इनाम पाया, गेटे ने बीमारी की अवस्था में ८० वर्ष की आयु में 'फौस्ट' और थियोफास्टस ने ९० वर्ष से अधिक आयु में 'कैरेक्टर आफ़ मैन' लिखा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महान् साहित्यकार और कलाकार माइकेल इंजिलों ने ८३ वर्ष की आयु में 'सानेटो' वस्तुकला के चित्र बनाये। लेनेयेस ने काफी बड़ी उम्र में वनस्पति शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया। हमबल्ट एक युवक की तरह ९० वर्ष की आयु में विज्ञान का अध्ययन करते थे। ग्लैस्टन ८३ वर्ष की अवस्था में ब्रिटेन के प्रधान मंत्रित्व के पद पर कार्य कर रहे थे। मोरार जी देसाई भी ८२-८३ वर्ष की आयु में भारत के प्रधान मन्त्री पद पर रहे और उनका २॥ वर्ष का शासन काल स्वराज्य के बाद का 'स्वर्णयुग' माना जाता है। राजगोपालाचार्य ने ८५ वर्ष की अवस्था में राजनैतिक, सामाजिक संघर्षों के अतिरिक्त महाभारत आदि पर अपना लेखन कार्य जारी रखा। रवीन्द्र नाथ टैगोर की 'गीतांजलि' उनकी वृद्धावस्था की देन है। जैम्समार्टिन्यु अपना साहित्य-लेखन ९० वर्ष तक करते रहे। और उनके महत्व पूर्ण ग्रन्थ ८० वर्ष के बाद लिखे गये। विक्टर त्युमो, टैनीसन क्रमशः ८३ तथा ८० वर्ष तक विश्व को साहित्य से भरते रहे। उनकी क्रासिंग दो बार पुस्तक ८० वर्ष में समाप्त हुई। टालस्टाय, मैथिलीशरण गुप्त, व्यास और बाल्मीकि की रचना में ८० वर्ष के बाद की आयु है। ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ८२ वर्ष तक अपना कार्य करती रहीं, मेरी सोमरविले एक महिला वैज्ञानिक हुई हैं—उन्होंने अपनी 'आणविक तथा सूक्ष्मवीक्षणीय' विज्ञान विषयक ग्रन्थ ८९ की आयु में लिखा। भीष्म पितामह और द्रोण ने सौ वर्ष से अधिक आयु में भीषण युद्ध किया। मेरी पूज्यनीया माता जी अब नहीं हैं। ९२ वर्ष की अवस्था में भी उनमें जो तेज, बल और आत्म विश्वास था वह अनुकरणीय है। वह अनपढ़ थीं परन्तु अपनी भोजपुरी भाषा में वह कहा करती थीं "जीवन दुग्ध को मैं जितना पीती हूं। उतना ही उसका मिठास बढ़ता जाता है, क्योंकि शर्करा (चीनी) तो नीचे तह में बैठी है।"

वेद में प्रबल आशावाद और आत्म विश्वास का संदेश मिलता है। वह मैं तो दीन हूं दीन हूं, मैं क्या कर सकता हूं, बूढ़ा और असमर्थ हो गया हूं इन दीनता भरे और हीन भावों को परे हटाता है और कहता है। हे मनुष्य तेरे अन्दर अनन्य शक्ति का बीज निहित है, तू क्या नहीं कर सकता ?

शुक्रोऽसि, भ्राजोऽसि, स्वरसि' ज्योतिरसि।
आप्नुहि श्रेमांसमति समंक्राम ॥

अथर्व २-११-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हे नर। तू तो शुद्ध है, तेजस्वी है, आनन्दमय है, ज्योतिषमान् है। अपने को पहचान। श्रेष्ठों तक पहुंच, बराबर वालों से आगे बढ़।

मृत्यु बुढ़ापे से मत घबरा वह तेरे सामने तुच्छ है—

मृत्योः पवं योप यन्तो यदैत
द्राघीय आयुःप्रतरं दधानाः।
आत्यायमानाः प्रजया धनेन
शुद्धा : पूता भवत यज्ञियासः।

ऋ० १०-१८-२-

हे भाइयो! उठो, मौत के पैर को धकेल दो। श्रेष्ठ लंबी आयु को धारण करो। धन-धान्य तथा प्रजा से फूलो फलो और शुद्ध पवित्र तथा परोपकारी जीवन वाले बनो।

मैं अपनी धर्मपत्नी से कहता हूं। उत्साहित करता हूं कि जीवन में कभी चिन्तित और दुःखी मत हो ओ। वेद के उपदेश को ध्यान में रक्खो।

कृतं मे दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहित
गोजिद् भूयास मश्वजिद्, धनंजयो हिरण्य—जित्

अथर्व वेद ७-५०-८

मैं हाथ पर हाथ धर कर बैठने वाला नहीं हूं। मेरे दाहिने हाथ में काम और बायें हाथ में विजय है। इस कर्म रूपी जादू की छड़ी हाथ में लेते ही गौ, घोड़े, धन-धान्य सोना, चांदी जो चाहूंगा सो मेरे आगे हाथ बांध कर खड़ा हो जाएगा। □

दयानन्द संस्थान को दिया गया दान आय कर से मुक्त है। कृपया आप भी उदारतापूर्वक दान दें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद मन्दिर में बन रही

यज्ञशाला के लिए

ईंटें, संगमरमर, लोहा, सीमेंट भेजिए

१००१ रु० देने वालों का नाम पत्थर पर अंकित होगा

५००१) या अधिक देने पर जन-ज्ञान में चित्र भी प्रकाशित होगा

१०-२० हजार रु. खर्च कर अपने किसी प्रिय जन की स्मृति में कमरा बनवाएं

□□

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर

१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप भी जानिए : पिन कोड

—शिवम् कुमार नागेंद्र

"क्या आप अपना संदेश जल्दी भेजना तथा पाना चाहते हैं ? यदि हां, त पिन कोड का प्रयोग कीजिए।" इस आशय की सूचना आपने किस पो.आ.के इर्द-गिर्द देखी-पढ़ी होगी, अथवा मनीआर्डर फार्म, अंतर्देशीय पत्र' पोस्टकार्ड में पाने वाले (एड्रेसी) के पते वाले भाग पर नीचे षष्टखण्ड बन अवश्य ही देखा होगा।

अब आप यह सवाल उठाएंगे कि 'पिन कोड' आखिर है क्या एवं इसके चिट्ठी पर उल्लेख से पत्रों एवं अन्य आर्टिकलों की डिलीवरी (वितरण) जल्दी कैसे होती है ? पिन कोड नं. एक संक्षेपित रुप है। इसका विस्तृत रूप 'पोस्टल इन्डैक्स नम्बर कोड' है। इसे पी.आई.एन. न लिख कर सुविधा के लिए 'पिन' लिख दिया जाता है। इस प्रणाली का प्रचलन हमारे देश में सन् १९७२ में हमारी आजादी की २५वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रारम्भ किया गया।

पिन के आगे जो छः चौकोन खण्ड होते हैं, वे यह बताते हैं कि पिन में छः सार्थक अंक होते हैं। रायपुर आकाशवाणी के पिन कोड को ही लीजिए—नं. ४९२००१—इन छः अंकों में पत्रों के जल्द एवं सुनिश्चित वितरण के लिए इस प्रणाली में सारी योजनाएं समाहित हैं। पिन कोड का पहला अंक प्रदेश (Region) को व्यक्त करता है और प्रथम एवं द्वितीय मिल कर विशिष्ट पोस्टल सर्किल (उप प्रदेश) को। आ.वा. रायपुर के पिन के प्रथमांक ४ से महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश का बोध होता है, किन्तु प्रथम द्वितीय दोनों मिल कर (४९) पर्टीकुलर मध्य प्रदेश का ही बोध कराते है, किन्तु मध्यप्रदेश के लिए प्रथम एवं द्वितीय अंक ४५,४६,४७,४८ एवं ४९ ही हो सकते हैं ये दोनों अंक दिल्ली सर्किल के लिए ११, हिमाचल प्रदेश के लिए १२ से १७ तक, जम्मू-कश्मीर के लिए १८ एवं १९. उत्तर प्रदेश सर्किल के लिए २० से २८ तक राजस्थान पो. सर्किल के लिए ३० से ३४, गुजरात के लिए ३६ से ३९, कर्नाटक के लिए ५६ से ५९, आंध्र प्रदेश के लिए ५० से५३ तमिलनाडु के लिए, ६०से६४ केरल के लिए ६७ से ६९ पश्चिमी बंगाल के लिए ७० से ७४ उड़ीसा के लिए ७५, से, ७७, उत्तरपूर्वी पोस्टल सर्किल (आसाम, अरुणाचल, मेघालय,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनीपुर मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा) के लिए ७८ एवं ७९ अंक पो. डिपार्टमैंट द्वारा प्रदत्त हैं।

प्रथम द्वितीय एवं तृतीय अंक मिला कर डाक छटनी जिले (Postal Sorting Distt.) को प्रदर्शित करते हैं। आ.वा. रायपुर के ४९२ रायपुर जिले को व्यक्त करते हैं। पिन कोड का चौथा अंक डाक भ्रमण मार्ग (Line of Mail route) को व्यक्त करता है जिस पर पोस्ट आफिस स्थित होते हैं। चौथे, पांचवें एवं छठवें अंक मिल कर विशिष्ट वितरण डाक घर (Specific Delivery P.O.) का संकेत करते हैं। उदारणार्थ ००१ आकाशवाणी रायपुर डाकघर के लिए है।

अब आइये, पिन कोड प्रणाली की उपयोगिता-उद्देश्य को समझें। माना कि एक पत्र में 'पाने वाले' भाग पर नाम एवं व्यक्तिगत पते के बाद जिला, तहसील, पो. रायपुर लिखा है। अर्थात् मध्य प्रदेश के रायपुर में पत्र पहुंचना चाहिए। किन्तु पत्र लेखक की हस्तलिपि की अस्पष्टता के कारण छंटनी सहायक की शीघ्रता-व्यस्तता उसे रामपुर समझ कर रामपुर भेज सकती है। बाद वाले आफिस में सही स्थिति पता लगने पर उसे रिडायरैक्ट किया जाएगा किन्तु तब तक विलंब हो चुका होता है। और भी कई तरह की भटकाव की स्थितियां आती है। संक्षेप में इस सिस्टम के लाभ ये हैं—

१. मेल छंटाई या सार्टिंग के समय भौगोलिक जानकारी की आवश्यकता, इसके प्रयोग से नहीं रह जाती, एवं पत्रों की सार्टिंग बहुत आसानी से, तीव्र गति से एवं सही तरीके से होती है।

२. चूंकि इस विधि में पत्रों की सार्टिंग स्थानों के नाम की बजाय नंबर के अनुसार की जाती है, अतः एक ही अथवा लगभग एक-जैसे नाम वाले स्थानों के लिए गलत सार्टिंग होने की गुंजाइश नहीं रहती।

३. विभिन्न लिपि या लिखावट की समस्या भी आडे नहीं आती क्योंकि पिन कोड हरदम अंकों में एवं अंतर्राष्ट्रीय अंकों में लिखे जाते हैं।

४. पिन कोड का उपयोग करके आप 'शीघ्र डाक सेवा' (Quick Mail Service) का उपयोग करके अपना पत्र जल्दी पहुंचा सकते हैं। यह Q. M.S. सेवा १ अगस्त १९७५ से प्रभावशाली है जो रविवार एवं पोस्टल छुट्टियों के दिन भी प्राप्य होता है। बड़े शहरों में Q.M.S Letter box होते हैं। इस सेवा में रेलवे मेल सर्विस (R.M.S) आफिसों का उपयोग होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब से आप अवश्य ही 'पिन' का प्रयोग करना चाहेंगे। अपने पास के पो. आ. के डाकपाल, डाकिया, छंटनी सहायक से 'पिन' का पता कर सकते हैं। आजकल 'पत्र पेटी' पर भी पिन लिखा होता है। अपने संबधी को जब पत्र लिखें तो उनसे यह अनुरोध करें कि 'प्रेषक के पते' तथा पाने वाले के पते के नीचे सही पिन कोड अवश्य लिखें।

प्रत्येक उप डाकघर, प्रधान डाकघर एवं अति विभागीय डाकघर को पृथक्-पृथक् पिन कोड वितरित हैं। शाखा डाकघर के लिए उससे संबंधित उप डाकघर का पिन कोड ही होता है। □

आर्यसमाज के कैसेट

मधुर एवं मनोहर संगीत में आर्यसमाज के ओजस्वी भजनोपदेशकों द्वारा गाये गये ईश्वरभक्ति, महर्षिदयानन्द एवं समाज सुधार से सम्बन्धित उच्चकोटि के भजनों के सर्वोत्तम कैसेट मंगवाकर-

आर्यसमाज का प्रचार जोरशोर से करें।

कैसेट नं. 1- पथिक भजन सिन्धु- गीतकार एवं गायक सत्यपाल पथिक का सर्वाधिक लोकप्रिय कैसेट।

2- सत्यपाल पथिक भजनावली- सत्यपाल पथिक का दूसरा नया कैसेट।

3- श्रद्धा- प्रसिद्ध फिल्मी गायिका आरती मुखर्जी एवं दीपक चौहान।

4- आर्य भजनावली- फिल्मी संगीतकार एवं गायक वेदपाल वर्मा।

5- वेदगीताञ्जलि- गीतकार एवं गायक- सत्यव्रत विद्यालंकार

6- भजन सुधा- आचार्या प्रज्ञादेवी वाराणसी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन।

मूल्य प्रति कैसेट। से 3, 30 रु. तथा 4 से 6, 35 रु. है। डाक व्यय अलग विशेष- 5 या अधिक कैसेटों का अग्रिम धन आदेश के साथ भेजने पर डाक व्यय फ्री। वी.पी.पी. से भी मंगा सकते हैं।

प्राप्तिस्थान- आर्यसिन्धु आश्रम 141, मुलुण्ड कालोनी बम्बई-400082

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाषा जोड़ती है तोड़ती नहीं

—क्षितीश वेदालंकार

जिस सरह अपनी जननी और जन्म भूमि से हरेक को विशेष लगाव होता है, उसी तरह अपनी मातृ भाषा से लगाव होना भी अत्यन्त स्वाभाविक है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने तो यहां तक कहा था—

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।

लंका भले ही सोने की बनी हो और सुख समृद्धि तथा ऐश्वर्य से सनी हो किन्तु लक्ष्मण! मुझे ऐसी लंका भी अच्छी नहीं लगती, मुझे तो अपनी जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से बढ़कर लगती है।" इस श्लोक के उत्तरार्द्ध को संसार के एकमात्र घोषित हिन्दू राज्य नैपाल ने अपना ध्येय वाक्य बनाया है। अपनी मातृ-भाषा भी संसार की सब भाषाओं से बढ़कर लगे तो इसमें आश्चर्य क्या है। परदेश में जाकर अपनी मातृभाषा में बात करने वाले से अकस्मात सम्पर्क होने पर कैसी सुखद अनुभूति होती है, यह भुक्त भोगी ही जानते हैं। उस समय वह विदेशस्थ बन्धु भले ही अपनी बिरादरी और अपने धर्म का अनुयायी न भी हो किन्तु वही सबसे अधिक आत्मीय लगता है।

इस आत्मीयता को उपजाने वाली बात से स्वर्गीय प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी भलीभांति परिचित थीं। इसलिए वे जिस भी प्रांत में जाती थीं, उसी प्रान्त की भाषा में अपने भाषण के शुरू में चन्द वाक्य बोलती थीं। इस प्रकार सभा में उपस्थित श्रोताओं को मुग्ध करने का गुरु मन्त्र उन्हें आता था। उनकी सफलताओं के अनेक रहस्यों में से एक यह भी है।

राष्ट्र एक ऐसी परिभाषा है जो प्रत्येक राष्ट्रवासी की जन्म भूमि से बहुत बड़ी परिधि है, परन्तु सारे राष्ट्रवासी समान रूप से उसके साथ अपनी आत्मीयता जोड़ते हैं, तभी वह राष्ट्र शब्द को सार्थक करता है। भले ही कोई व्यक्ति किसी अन्य राष्ट्र में जन्मा-पला बढ़ा हो परन्तु जब वह अमुक राष्ट्र की नागरिकता स्वीकार करता है तब वह जन्म वाली परिधि से आगे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बढ़कर अपनी राष्ट्रीय भावना और अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य से अनुप्राणित होकर स्वीकृत राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने जन्म वाले राष्ट्र से लड़ने-मरने को भी तैयार हो जाता है। यही राष्ट्रीयता का तकाजा है। यह व्यक्ति की चेतना का विकास है। मूल रूप से हरेक व्यतित अपनी आदिम पाशविक प्रवृत के कारण नितान्त स्वार्थी होता है। परन्तु धीरे-धीरे वह अपने बजाय अपने परिवार को उसके बाद समाज को और उसके बाद राष्ट्र को महत्व देकर अहने स्वार्थों की कुर्बानी करना सीखता है। इसी का नाम संस्कृति है। इस विकास की अन्तिम सीढ़ी विश्व राष्ट्र कल्पना है जिसको वैदिक आदर्श की दृष्टि से "वसुधैव कुटुम्बकम्" में समाहित किया गया है। व्यक्ति से समष्टि और समष्टि से रास्ट्र—यदि इस प्रकार चेतना का विकास न हो और प्रत्येक व्यक्ति अपने संकीर्ण स्वार्थों में ही आवद्ध रहे, तो राष्ट्र का या राष्ट्रीयता का कोई मतलब ही नहीं होता।

यही चेतना का विकास राष्ट्र के समस्त प्रतीकों के लिए आवश्यक है। जब एक बार सारे राष्ट्र ने अपने बहुमत से राष्ट्रीय संविधान या राष्ट्रीय ध्वज स्वीकार कर लिया तब किसी राष्ट्र के नागरिक को यह कहने का अधिकार नहीं बचता कि संविधान के निर्माण में या राष्ट्रीय ध्वज के निर्धारण में व्यक्तिगत रूप से मुझसे सम्मति नहीं ली गई। जब सरकार कोई कानून बनाती है, तो एक-एक व्यक्ति से पूछकर नहीं, बल्कि संसद में जनता के प्रतिनिधियों के माध्यम से कानून बनाती है। उसके बाद यदि कोई व्यक्ति इस आधार पर उस कानून का उल्लंघन करता है कि मेरी राय लिए बिना यह कानून बनाया गया है तो वह व्यक्ति कानून के उल्लंघन से मिलने वाले दण्ड से बच नहीं सकता। यही बात हम राष्ट्र भाषा के साथ भी जोड़ना चाहते हैं। सारे राष्ट्र ने जिसे राष्ट्रभाषा स्वीकार किया है, भले ही वह किसी की मातृ-भाषा हो या न हो, उसका पूर्ण सम्मान करना ही राष्ट्रीयता की निशानी है।

जब नेहरू जी ने सोवियत संघ की नकल पर भाषावार राज्यों के निर्माण का निश्चय किया था, तब १९६३ में श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने राष्ट्र को चेतावनी देते हुए कहा था—"पुराने शासन ने जो बहुभाषी प्रान्त बनाये थे, वे अपनी-अपनी सीमाओं में एक से अधिक भाषा बोलने वाले समुदाय में सामंजस्य स्थापित करते हुए पूरे राष्ट्र से जोड़े रखते थे। परन्तु एक भाषा के आधार पर प्रान्तों के निर्माण ने इस प्रक्रिया को रोक दया है। हरेक राज्य में अपने आपको अलग इकाई मानने का एक अभियान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और एक दूसरे के विरुद्ध आक्रामक रूप पनपने लगा है। इससे अखिल भारत की एकता को भारी धक्का लगा। उन सबको बांधने वाला तत्त्व केवल एक केन्द्रीय सरकार रह गई। विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने की उसकी छवि ज्यों-ज्यों धीमी पड़ती जायेगी, त्यों-त्यों भारत विघटन की ओर बढ़ता जायेगा। अखिल भारतीय राष्ट्रवाद के बजाय प्रान्तीय राष्ट्रवाद उत्तरोत्तर बढ़ता जायेगा।.....दूर भविष्य की दृष्टि से यह तस्वीर अन्धकारपूर्ण है।"

राजा जी की यह भविष्यवाणी किस तरह चरितार्थ होती जा रही है, यह हमारी आंखों के सामने है। गुजरात और महाराष्ट्र को अलग करने पर जैसी मारकाट हुई थी वह राष्ट्रवाद के बजाय प्रान्तवाद की ही पोषक अधिक थी। उसके बाद श्री रामुलु के आत्मादाह से आन्ध्र प्रदेश बना और अब तेलगुदेशम की स्वायत्ता की समर्थक तेलगुदेशम पार्टी भी बन गई। इसी प्रकार का प्रांतीय स्वायत्ततावाद तमिलनाडु और बंगाल में भी पनपा। इसी की चरम पराकाष्ठा पंजाब के अकाली आन्दोलन में दिखाई दी। यदि भाषावार राज्यों का निर्माण न होता तो इन विभिन्न राज्यों में अपनी प्रान्तीय भाषाओं के माध्यम से प्रान्तीय राष्ट्रवाद भी न पनपता। भाषावार राज्यों के निर्माण के एक अनर्थ यह भी हुआ कि आजादी से पहले जिन अहिन्दीभाषी प्रान्तों में अपनी राष्ट्रवादी मनोवृत्ति के कारण समस्त राष्ट्र कवियों में हिन्दी के प्रति प्रेम दिखाई देता था, वह हिन्दी प्रेम नदारद हो गया और वे ही राष्ट्रकर्मी प्रान्तीय भाषा के पुरोधा बन कर आन्दोलन करने लगे। यह राष्ट्र की एकता के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

एक राष्ट्र होने का अभिप्राय यह है कि भारत की सब नदियां, सब पहाड़ और सब प्राकृतिक सम्पदा समग्र भारत की है, किसी एक प्रान्त की नहीं। परन्तु भाषावार राज्यों के निर्माण के पश्चात् विभिन्न राज्यों में इन नदियों को लेकर भी विवाद प्रारम्भ हो गये। नदियों के अलावा दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास और चण्डीगढ़ जैसे महानगरों पर भी एक भाषा-भाषी अपना अधिकार जताने लगे जब कि वास्तविकता यह है कि इन महानगरों के निर्माण में देश के अनेक भाषा-भाषियों का हाथ रहा है।

राजनीतिक और प्रशासनिक दृष्टि से भाषावार राज्यों का निर्माण राष्ट्रीय एकता में कितना ही बाधक क्यों न रहा हो, किन्तु यदि राष्ट्रीय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एकता को कायम रखना है तो हमें किसी ऐसी एक राष्ट्रभाषा को अवश्य प्रमुखता देनी होगी, जो इन सब प्रान्तों को जोड़ने का काम करती हो। वह भाषा केवल हिन्दी हो सकती है, कोई और भाषा नहीं, यह निर्विवाद है। जब तक वह अंग्रेजी मौजूद है, तब तक वह हिन्दी को अपनी दासी ही बनाये रखेगी। इसलिए राष्ट्रीय एकता की अगली शर्त यह है कि किसी भी राज्य में वहां प्रादेशिक भाषा के रूप में हिन्दी की उपेक्षा किसी भी स्तर पर न हो। उसे वही दर्जा मिले, जो सोवियत संघ में रूसी भाषा को प्राप्त है। हिन्दी के प्रति आग्रह राष्ट्रीय एकता के प्रति आग्रह है। तोड़ने के बजाय भाषाओं को जोड़ने का माध्यम बनाओ। □

क्या आप हिन्दू हैं ?

क्या आपको अपने धर्म, संस्कृति और परम्पराओं पर अभिमान है ?
क्या आप अपना सभी कुछ बचाने की भावना रखते हैं ?
यदि आपका उत्तर हां में हो तो

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
के स्वयं सदस्य बनें

और

अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें।

हिन्दू जागो ! देश बचाओ !!

मंत्री, अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, वेद मन्दिर
नई दिल्ली-११०००५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तंग मानसिक दायरों से बाहर आयें

—मोहन लाल गुप्त

भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता की धारा १२५ में एक नैतिक सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है कि कोई भी समर्थ व्यक्ति अपने आश्रितों को कंगाली और लावारिसी के सुपुर्द नहीं कर सकता। यह भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता की प्रतिपादित व्याख्या है, इसलिए इस सिद्धान्त को किसी एक नागरिक पर लागू किये जाने का और दूसरे नागरिक पर लागू न किये जाने का सवाल ही नहीं उठता। चूंकि भारत एक विविध जातियों धर्मों और सम्प्रदायों से भरा-पूरा राष्ट्र है अतः संविधान बनाते समय हर व्यक्ति की मौलिकता को बनाये रखने के लिए मानवीय दृष्टि को मद्दे नजर रखा गया है। इसी कारण मुस्लिम पर्सनल लॉ को भी स्वीकार कर लिया गया है लेकिन भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४४ के अन्तर्गत हमने इस बात की भी प्रतिज्ञा की थी कि सरकार सारे देश में एक जैसा सिविल कोड बनाने का प्रयत्न करेगी।

आज जब भारत को स्वतन्त्र हुए ३८ वर्ष बीत रहे हैं और परिस्थितियां काफी बदल गई हैं, शहनाज शेख जैसी साहसी महिलायें मुस्लिम पर्सनल लॉ की संवैधानिकता को चुनौती देते हुए भारतीय न्यायालयों की सीढ़ियां चढ़ने लगी हैं व सर्वोच्च न्यायालय के दरवाजों पर न्याय की गुहार लग रही है तो क्यों न हम एक बार आंखें खोलकर, तंग मानसिक दयारों से बाहर आकर, मुस्लिम पर्सनल लॉ पर पुनर्विचार करें।

पिछले दिनों सर्वोच्च न्यायालय ने मुस्लिम महिलाओं को तलाक के मामले में बहुत भारी अन्याय से राहत दिलवाई है। सर्वोच्च न्यायालय कहता है कि हालांकि कुरान शरीफ की आयतों (२४१ व २४२) से यह स्पष्ट है कि शौहर अपनी तलाकशुदा पत्नी को मेहर के अतिरिक्त समय तक गुजर-बसर का खर्चा देने को मजबूर नहीं है तथा मुस्लिम पर्सनल लॉ के अनुसार शौहर को तलाक के बाद चालीस दिन की इद्दत की मियाद के अलावा कोई रकम नहीं देनी होती, लेकिन भारतीय दण्ड संहिता की धारा १२५ में भी तो स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि पति को अपनी पत्नी (चाहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परित्यक्ता ही क्यों न हो) के जीवन यापन के लिए उपयुक्त व्यय ना होगा और यह धारा १२५ की संहिता मुसलमान शौहर पर भी लागू होगी—चाहे मुस्लिम पर्सनल लॉ में ऐसे मामलों के लिए कुछ भी क्यों न लिखा हो।

आइये, इन कानूनी पेचीदगियों से दूर जरा आम मुसलमान की रोजमर्रा की जिन्दगी पर नजर डालें। कितने ही मुसलमान घरों की स्त्रियां आज भी चिकों और पर्दों के पीछे रहती हैं। चारदीवारी ही उनकी दुनिया होती है। लड़कियों की शिक्षा-दीक्षा की बात तो दूर, लड़कों तक की अनेक कठोरताओं और नियन्त्रणों में इस्लामी स्कूलों में धार्मिक शिक्षा दी जाती है। काले बुरकों की कतारें, भारी चिक और पर्दे, शिक्षा से दूर, नई दुनियां से अनजान हजारों मुस्लिम औरतों की आज भी आजाद हिन्दुस्तान में यही नियति है।

शादी ब्याह के पहले लड़कियों को यह भी मालूम नहीं होता कि वे किस घर में और कहां, किसके साथ ब्याही जा रही हैं। माता-पिता ने जो रिश्ता तय कर दिया वही अन्तिम है। कोशिश यही होती है कि लड़की रिश्तेदारों में ही ब्याही जाए और उसी गांव या कस्बे में रहे। यह सब कुछ मजहब के नाम पर हो रहा है जबकि इस्लाम में ऐसे रिश्तों को नाजायज करार दिया गया है। मजहब में शादी के लिए लड़की की रजामन्दी को पहली शर्त माना गया है। (पढ़ें नभाटा : सूफियाशानी का लेख—देवबन्द में मुस्लिम महिलायें नींद के आगोश में)

मुस्लिम समाज के मौलवी-मुल्ला चीख-चीख कर बार-बार कहते हैं कि कुरान भाईचारा, अहिंसा, साम्प्रदायिक सौहार्द, अखण्डता व एकता की शिक्षा देता है। उसकी नजर में छोटा-बड़ा कोई नहीं। खुदा के सब नेक बन्दे बराबर हैं। समझ नहीं आता कि क्या बांन्दियां इस जमात में शामिल नहीं होतीं? क्या मुस्लिम औरत होना वाकई ऐसी सजा है जिससे निजात पाना असम्भव है?

एक मुस्लिम न्यायाधीश की अगुवाई में अल्प संख्यक आयोग ने मुस्लिम पर्सनल लॉ को दोषरहित माना है एवं उससे किसी भी तरह की संवैधानिक छेड़छाड़ न करने की सलाह दी है। मुस्लिम उलेम और इमाम हमेशा मुस्लिम जनता को अज्ञान के अन्धेरों में रखते आये हैं। इन उलेमाओं का इस्लाम सदैव खतरे में रहता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पिछले दिनों दिये गये निर्णय से भारत भर के मुस्लिम धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक संगठनों में भूकम्प आ गया है। ये सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को मुसलमानों का भारतीयकरण करने का षड्यंत्र बता रहे हैं। सवाल यह पैदा होता है कि क्या मुसलमान भारतीय नहीं हैं? यदि इन से यह पूछा जाय कि क्या आप भारतीय नहीं हैं? तो ये तड़क कर वजनी लफजों में कहेंगे—हां, हम भारतीय हैं। इनसे पूछिये कि जब आप भारतीय हैं तो फिर भारतीय का भारतीय कारण षड्यन्त्र कैसे हो सकता है? इन स्वार्थी नेताओं ने मुस्लिम पर्सनल लॉ को मुसलमान समाज का अस्तित्व मान लिया है, जबकि भारत का आम मुसलमान नहीं जानता कि मुस्लिम पर्सनल लॉ क्या है। वह भारतीय दण्ड संविधान से अलग क्यों है और किन मुद्दों पर हैं? मुस्लिम पर्सनल लॉ कहां से पैदा हुआ है।

अंग्रेजों द्वारा सन् १९३७ में लागू किये गये शरीअत एक्ट १९३७ को मुस्लिम पर्सनल लॉ बताकर उसकी छात्र-छाया में अपने आपको निहायत महफूज मानते हैं और स्वतन्त्र भारत के संविधान को अपने अस्तित्व के कपूर के लिए आग मानते हैं। सीधी-सादी मजहब के नाम पर आंख मूंद कर चलने वाले मुस्लिम अवाम को ये उलेमा यह नहीं बताते कि मुस्लिम पर्सनल लॉ गुलामी के दिनों की चीज है और भारतीय संविधान उनके अपने देश द्वारा बनाई गई व्यवस्था। □

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए
पवित्र धर्म-ग्रन्थ : परमात्मा की अमरवाणी

चारों वेदों का हिंदी भाष्य

मंत्र-शब्दार्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित
लागत मूल्य : ५०० रु०
किन्तु प्रचार के लिए
पुस्तकालय संस्करण : ३०० रु०
उपहार संस्करण : लागत मूल्य : १,००० रु०
अभी केवल ८०० रु० में लीजिये।
आदेश के साथ ५० रु० अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६२६३९-५६४७४१-८०१२११

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९वीं सदी के धार्मिक आन्दोलन

—प्रो० हरिदत्त वेदालंकार

१९वीं सदी की धार्मिक प्रवृत्तियों के तीन भाग किये जा सकते हैं। पहला भाग है बीजवपन या तैयारी का काल, दूसरा भाग है उग्र सुधार आन्दोलनों का काल और तीसरा भाग है कट्टर सुधार आन्दोलनों का काल।

१८२८ से १८७० तक उग्र सुधार आन्दोलनों के काल में उस समय के सुधारक हिन्दू धर्म में आमूलचूल परिवर्तन करना चाहते थे। इनमें ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज प्रमुख हैं। ब्रह्म समाज ने हिन्दू धर्म में जबरदस्त सुधार करने के लिए तर्कवाद के नाम पर धीरे-धीरे सभी मौलिक और आधारभूत सिद्धान्तों को त्याग दिया। मूर्तिपूजा और जाति भेद की कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार करते हुए ब्रह्म समाज ने शीघ्र ही वेदों की प्रामाणिकता और कर्मवाद आदि प्रमुख हिन्दू सिद्धान्तों को तिलांजलि दे दी। प्रार्थना समाज के सुधार भी बहुत कुछ ब्रह्म समाज से मिलते-जुलते थे, किन्तु उसका हिन्दू समाज के साथ सम्बन्ध विच्छिन्न नहीं हुआ।

किन्तु १९वीं शताब्दी का अन्तिम चरण उग्र सुधार आन्दोलनों की प्रतिक्रिया का काल था। हिन्दू धर्म के समर्थक तब तक सचेत हो चुके थे और ईसाइयत के रूप में विदेश से आई आंधी के खतरे को उन्होंने अच्छी तरह अनुभव कर लिया था। किन्तु उन्होंने यह भी अनुभव किया कि उग्र आन्दोलनों के द्वारा हिन्दू धर्म के मौलिक सिद्धान्तों की उपेक्षा उचित नहीं है। ५० वर्ष पहले जहां हिन्दू धर्म शिक्षित समाज की दृष्टि में निरादर का पात्र समझा जाता था और उसके कर्मकाण्ड की हंसी उड़ाई जाती थी, अब उसी हिन्दू धर्म के सभी तत्त्वों का समर्थन एवं सुन्दर व्याख्या की जाने लगी। हिन्दुओं की दूषित और सामाजिक दृष्टि से हानिकर प्रथाओं की भी आलंकारिक ढंग से ऐसी सुन्दर व्याख्या की जाने लगी कि वे प्रथाएं स्पृहणीय और आदर्श समझी जाने लगीं। इस प्रकार के आन्दोलनों में श्री रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द का प्रचार तथा थियोसाफी मुख्य थे।

इसी काल में ऋषि दयानन्द के नेतृत्व में आर्यसमाज का आन्दोलन शुरू हुआ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उग्र सुधार आन्दोलन

ब्रिटिश शासन की नींव सबसे पहले बंगाल में पड़ी। अतः इन धार्मिक सुधार आन्दोलनों का श्रीगणेश भी बंगाल से ही हुआ। बंगाल में इस आन्दोलन के जन्मदाता राजा राम मोहनराय (१७७२-१८३३) थे। इनकी जाति ब्राह्मण और पैतृक व्यवसाय मुसलमान शासकों की सेवा था। बचपन में राम मोहन राय ने अरबी, फारसी पढ़ी। वे सूफी सम्प्रदाय की विचारधारा से प्रभावित हुए। बाद में उन्होंने बनारस में जाकर संस्कृत का अध्ययन किया और अपनी सहज बुद्धि से शीघ्र ही यह समझ लिया कि सब धर्म एक ईश्वर को मानते हैं, इसलिए धर्मों के झगड़े व्यर्थ हैं। घर लौटकर १६ वर्ष की अवस्था में उन्होंने मूर्तिपूजा के विरुद्ध एक पुस्तक लिखी जो बंगला भाषा की सर्वप्रथम गद्य रचना थी। उनके पिता ने इस बात पर कुपित होकर राम मोहन राय को घर से निकाल दिया। इसके बाद राम मोहन राय सत्य की खोज में इधर-उधर भटकते रहे। कुछ लोगों का विचार है कि वे बौद्ध धर्म के अध्ययन के लिए तिब्बत चले गये। कुछ समय बाद पिता का रोष शान्त हो गया तो उन्होंने विद्रोही पुत्र को घर बुला लिया।

राम मोहन राय ने अंग्रेजी का अभ्यास किया और १८०४ में रंगपुर की कलक्टरी में मुहर्रिर के पद पर नियुक्त हुए। उन्नति करते हुए वे सरिश्तेदार के पद तक पहुंचे और दस वर्ष माल विभाग में सेवा कर पर्याप्त वित्तोपार्जन कर उन्होंने अवकाश ग्रहण किया। इस सारे समय में वे विभिन्न धर्मों का अध्ययन करते रहे। १८११ में उन्होंने एक दारुण दृश्य देखा जिस ने उनके जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। उनके बड़े भाई के मरने पर उनकी बड़ी भाभी को प्रचलित प्रथा के अनुसार सती होने के लिए बाध्य किया गया। वह चिता पर बैठी, पर चिता की ज्वाला जब सहन न हुई तो उठ कर भागी। किन्तु सम्बन्धियों ने उसको रस्सी से बांध कर पुनः चिता में झोंक दिया। उसका चीत्कार अब भी हृदय को विदीर्ण कर रहा था। उस चीत्कार से त्राण पाने के लिए सम्बन्धियों ने शंख, घण्टे और घड़ियाल बजाने शुरू कर दिये ताकि उस अबला का आर्तनाद किसी को कर्णगोचर न हो। इस हृदय-विदारक घटना ने राममोहनराय को सती प्रथा का कट्टर विरोधी बना दिया और उनके तीव्र आन्दोलन के फलस्वरूप १८२९ में यह अमानुषी प्रथा कानून द्वारा बन्द कर दी गयी।

कम्पनी की नौकरी से छुट्टी पाकर कलकत्ते में राम मोहन राय ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उपनिषदों व वेदान्त दर्शन का बंगला और अंग्रेजी में अनुवाद किया और शुद्ध ईश्वरवाद की उपासना पर जोर दिया। उन्होंने थोड़ी यूनानी और ईबरानी भी सीखी और ईसा के चमत्कारों का अंश निकाल कर ईसा के उपदेशों को बंगला व संस्कृत के उपदेशों के साथ प्रकाशित किया। चमत्कारों से शून्य ईसामसीह के उपदेशों के प्रकाशन से ईसाई खूब चिढ़े और दोनों ओर उत्तर-प्रत्युत्तर प्रारम्भ हो गये। ईसाई मिशनरियों द्वारा किए गए गहे आक्षेपों का निराकरण करने के लिए ही राममोहनराय ने अपना छापाखाना खोला। २० अगस्त, १८२८ को चितपुर रोड पर ब्रह्म समाज की पहली बैठक हुई। इसके बाद प्रति शनिबार को उसके साप्ताहिक सत्संग होने लगे जिसमें वेद पाठ के साथ उपनिषदों का बंगला अनुवाद और बंगला में आध्यात्मिक उपदेश होते थे। वेद पाठ के लिए दो तेलगु पंडित बुलाए गए थे। वेदों का पाठ परदे के पीछे से होता था ताकि कहीं वेद भ्रष्ट न हो जायें।

१८३० में राजा राम मोहन राय इंगलैंड चले गये। १८३३ में कम्पनी का चार्टर पेश होने पर उन्होंने पार्लमैंटरी कमेटी के समक्ष भारतीय शासन सुधार के सम्बन्ध में गवाही भी दी और उसी वर्ष ब्रिस्टल में उनका देहान्त हो गया।

राजा राम मोहन राय के बाद ब्रह्म समाज के मुख्य नेता श्री देवेन्द्रनाथ ठाकुर हुए। उन्होंने वेदाध्ययन के लिए चार विद्यार्थियों को बनारस भेजा। उन चारों विद्यार्थियों की गवेषणा के बाद ब्रह्म समाज ने सम्पूर्ण वेद की निभ्रान्तिता का विचार छोड़ दिया।

सन् १८५७ में ब्रह्म समाज में एक वैश्य जातीय अंग्रेजी शिक्षा-सम्पन्न अत्यधिक भावना प्रधान और वाग्मी युवक केशव चन्द्र का आगमन हुआ। इस युवक ने ब्रह्म समाज को नयी स्फूर्ति से अनुप्राणित किया। यह अपने विचारों की उदारता में यहां तक आगे बढ़े कि अत्यन्त प्राचीन काल से तीन ऋणों का स्मरण कराने वाले पवित्र यज्ञोपवीत तक को तिलांजलि दे दी। धीरे-धीरे केशवचन्द्र ईसाइयत की ओर झुकने लगे। ११ नवम्बर १८६६ को श्री सेन ने ब्रह्म समाज से अलग अपना नया समाज स्थापित किया जिसमें सामान्य प्रार्थना के बाद हिन्दू, ईसाई, मुस्लिम, पारसी और चीनी धर्म ग्रन्थों के संदर्भ पढ़े गये। अब श्री केशव सेन न हिन्दू रहे और न हिन्दू सुधारक। अन्त में १८७४ के स्पेशल मैरिज एक्ट से कानून द्वारा ब्रह्मसमाजियों को हिन्दू समाज से सर्वथा पृथक् स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार ईसाइयत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के विरोध में हिन्दू समाज की रक्षा के लिए जो पहला बांध बांधा गया वह ईसायत के जबरदस्त प्रवाह का मुकाबला न कर सका और उसी के साथ बह गया।

ब्रह्म समाज का ही दूसरा रूप प्रार्थना समाज के रूप में विकसित हुआ। १८३९ में तीन पारसियों को अपने धर्म की रक्षा की चिन्ता हुई। जब केशव चन्द्र सेन बम्बई आये तो उनके व्याख्यानों का शिक्षित समाज पर बड़ा प्रभाव पड़ा और सन् १८६७ ईसवी में वहां प्रार्थना समाज की स्थापना हो गयी। इसके नेता डा० आत्माराम पाण्डुरंग, रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर, महादेव गोविन्द रानाडे आदि सज्जन थे। ये जाति प्रथा के उच्छेद, विधवा विवाह, स्त्री-शिक्षा तथा बाल विवाह निषेध जैसे सुधारों पर बल देते थे। इस समाज का संगठन कुछ निश्चित नियमों पर नहीं हुआ। इसी कारण प्रार्थना समाज कभी एक घनीभूत संगठन नहीं बन सका।

मुसलमानों में धार्मिक सुधारों के नेता सर सैयद अहमद थे। मुसलमानी सलतनत समाप्त हो जाने के बाद मुसलमानों की दशा निरन्तर गिरती जा रही थी। १८५७ के विद्रोह के दमन के पश्चात् कुछ अंग्रेजों ने इस्लाम को कुचलने का नारा भी बुलन्द किया था। प्रतिक्रिया-स्वरूप मुसलमानों ने अंग्रेजों तथा अंग्रेजी शिक्षा से अलग रहने की नीति अपनायी जिसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षा की दृष्टि से मुसलमान और पिछड़ गये।

सर सैयद अहमद ने सन् ५७ के विद्रोह में अंग्रेजों का पूरा साथ दिया था। इस कारण अंग्रेज उनसे प्रसन्न थे। सर सैयद ने इस्लाम के कट्टर एवं रूढ़िगस्त रूप को हटाकर उसे तर्कसंगत बनाने का प्रयत्न किया। किन्तु मुसलमानों ने उनके विचारों को स्वीकार नहीं किया। सर सैयद बहु विवाह और दास प्रथा को त्याज्य मानते थे। किन्तु कुरान शरीफ और हदीस में उनका स्पष्ट समर्थन है। इसलिए सर सैयद के विचार मुसलमानों में लोकप्रिय नहीं हुए।

रामकृष्ण मिशन और थियोसोफी

जिस प्रकार यूरोप में लूथर तथा अन्य सुधारकों के आन्दोलनों की प्रतिक्रिया-स्वरूप 'काउण्टर रिफारमेशन' आन्दोलन शुरू हुए, उसी प्रकार १९वीं शती में श्री रामकृष्ण परमहंस व थियासोफी आन्दोलनों को भी 'काउण्टर रिफारमेशन' कह सकते हैं। इससे पहले आन्दोलन जहां तर्क-विरुद्ध कुरीतियों से धर्म को मुक्त कराना चाहते थे वहाँ यह नया आन्दोलन धर्म में आन्तरिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुधार चाहते हुए भी उसकी प्रत्येक रूढ़ि और मर्यादा की रक्षा करना चाहता था। सन् १८७३ में हिन्दू धर्म की पूर्ण रक्षा के लिए सनातन धर्म रक्षिणी सभा स्थापित हुई, किन्तु हिन्दू धर्म की पूर्ण रक्षा का प्रबल समर्थन श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और थियोसोफी द्वारा ही हुआ।

स्वामी विवेकानन्द के प्रयत्न से पाश्चात्य देशों की दृष्टि में भारत का सम्मान बढ़ा। स्वामी विवेकानन्द छुआछूत आदि के घोर विरोधी थे। किन्तु राम मोहन राय की तरह उन्होंने मूर्ति पूजा का खण्डन नहीं किया। मूर्ति-पूजा को वे पूजा की एक उत्तम विधि समझते थे। हिन्दू धर्म की विभिन्न रूढ़ियों तथा कर्मकाण्ड में भी उनकी पूरी आस्था थी। उनकी दृष्टि में हिन्दू धर्म का प्रत्येक अंश बहुमूल्य है और उसको रक्षा की जानी चाहिए।

किन्तु प्राचीन हिन्दू धर्म की सम्पूर्ण रूढ़ियों का और क्रियाकलापों का वैज्ञानिक विवेचन थियोसोफी से बढ़ कर किसी ने नहीं किया। थियोसोफी का जन्म अमेरिका में हुआ किन्तु बड़ी विचित्र परिस्थितियों में यह आन्दोलन महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज की सहायता से भारत में प्रारम्भ हुआ। ब्लैवैट्सकी नामक रूसी इसकी प्रवर्तिका थी। १२ अगस्त, १८३१ को एक रूस प्रवासी जर्मन परिवार में उसका जन्म हुआ था और उसने १७ वर्ष की आयु में एक ७०-वर्षीय रूसी अफसर एन० वी० ब्लैवैट्सकी के साथ विवाह किया था। उसे बचपन से ही आध्यात्म विद्या का शौक था। वह मैट्रोविच नामक एक व्यक्ति के साथ भी रही और उसका एक पुत्र भी हुआ। किन्तु उसने अपने आपको कुमारिका ही प्रख्यात किया। मिस्र का जादू सीख कर उसने काहिरा में में मृत आत्माओं को बुलाने तथा प्रेत विद्या के द्वारा जीविका उपार्जन करना प्रारम्भ किया। वह सन् १८३७ में अमेरिका पहुंची। उन दिनों वहां प्रेत विद्या का खूब शोर था। १८७४ में प्रेत विद्या के एक प्रदर्शन में ही कर्नल अलकाट से उसका परिचय हुआ। तब दोनों ने मिलकर प्रेत विद्या के द्वारा लोगों को बेवकूफ बनाकर धन कमाने का स्वांग रचा। ७ सितम्बर, १८८५ को न्यूयार्क में थियोसाफिकल सोसायटी को स्थापना हुई और इस सोसायटी का उपकोषाध्यक्ष उसने एक लखपति व्यक्ति को बनाया। उसने दो-तीन पुस्तकें भी लिखीं जिनमें गप्पें अधिक थीं, सच्चाई कम। अन्त में यह स्थिति हो गयी कि उसका अमेरिका में रहना मुश्किल हो गया।

ऐसी स्थिति में मैडम ब्लैवैट्सकी तथा कर्नल अलकाट जनवरी, १८७९

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में भारत पहुंचे और उन्होंने स्वामी दयानन्द की शरण ली। शुरू-शुरू में इन दोनों ने अपने आपको ऋषि दयानन्द का शिष्य और वैदिक धर्म का अनुयायी प्रचारित किया। किन्तु जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि भारत में इतना अधिक अंधविश्वास है कि उनको अपने अनुयायी मिलने कठिन नहीं होंगे, तब उन्होंने कुछ ऐसी बातों का भी प्रचार करना शुरू कर दिया जो आर्यसमाज के सिद्धन्तों के प्रतिकूल थीं। स्वामी दयानन्द ने उन्हें पूर्ववर्ती पत्रों का स्मरण कराया। किन्तु ऋषि दयानन्द की शरण में रहने से दुकानदारी न चल पाती। अन्त में १८८१ में आर्यसमाज और थियोसाफिकल सोसायटी का सम्बन्ध-विच्छेद हो गया।

सन् १८९१ में इस विलक्षण और नाना रूप धारण करने वाली महिला का देहान्त हो गया। उनके मरने के बाद थियोसोफी में अनेक मतभेद हुए और उसके स्वरूप में काफी परिवर्तन हो गया। थियोसाफी वाले सब धर्मों को पवित्र मानने तथा उनकी कट्टरता की वैज्ञानिक एवं आलंकारिक व्याख्या करने लगे। वे वैयक्तिक विकास साधन के मार्ग का उपदेश देते हैं जिनको प्रायः गुप्त ही रखा जाता है। बाद में श्री ऐनी बेसेन्ट इस आन्दोलन की नेत्री बनीं।

आर्यसमाज आन्दोलन की विशेषता

स्वामी दयानन्द द्वारा प्रवर्तित आर्यसमाज का आन्दोलन काल की दृष्टि से यद्यपि परवर्ती है, किन्तु प्रभाव की दृष्टि वह सब आन्दोलनों में अग्रवर्ती है। ब्रह्म समाज और आर्यसमाज के आन्दोलनों में पूरी आधी सदी का अन्तर है। १८३३ ईसवी में ब्रह्म समाज ने राजा राम मोहन राय की निर्वाण शताब्दी मनायी और आर्य समाज ने महर्षि दयानन्द की निर्वाण अर्ध शताब्दी। धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय दृष्टि से आर्यसमाज के आन्दोलन की तुलना में अन्य कोई आन्दोलन नहीं ठहरता।

स्वामी जी के आन्दोलन की विशेषता यह थी कि वह कट्टर तथा उदार दोनों था। कट्टर और उदार शब्द परस्पर विरोधी हैं। किन्तु आर्य समाज के सुधार को इन्हीं विरोधी शब्दों से प्रकट किया जा सकता है। स्वामी जी पाश्चात्य प्रवाह में बह जाने वाले ब्रह्म समाज के सुधारकों की तरह नहीं थे जिन्होंने आर्य जाति के सर्वमान्य ग्रन्थ वेद तक को तिलांजलि दे दी थी। न वे हिन्दू धर्म के इतने भक्त थे कि उसमें किसी सुधार की आवश्यकता को अनुभव ही न करें। वे थियोसोफिस्टों की तरह हिन्दू धर्म की प्रत्येक रूढ़ि को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तर्क एवं विज्ञान द्वारा श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयत्न भी नहीं करते थे। उन्होंने अपने सुधार के विशाल प्रासाद को वेद की सुदृढ़ चट्टानी नींव पर खड़ा किया। उनका विश्वास था कि हिन्दुओं की अवनति वेद-विरुद्ध बातों को अंगीकार करने से हुई है।

१९वीं शती के अन्य धर्म सुधारकों की अपेक्षा उनमें यह विशेषता थी कि वे वेदों के अद्वितीय पण्डित थे राजा राम मोहन राय, केशव चन्द्र सेन, राम कृष्ण परम हंस या स्वामी विवेकानन्द वेदों के विद्वान नहीं थे। मूल बीज वेद का गहरा अध्ययन कर स्वामी दयानन्द ने अपनी कार्य प्रणाली निश्चित कर ली। वे वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि प्राचीन ऋषियों के प्रतिनिधि थे। उनमें बौद्ध मत तथा शंकर के उदात्त तत्त्वों का सुन्दर संमिश्रण था। उनमें बुद्ध की भांति वेदों तथा ईश्वर जी उपेक्षा नहीं थी। शंकर की भांति पाण्डित्य और वाग्मिता थी। किन्तु शूद्रों तथा स्त्रियों के साथ अन्यायपूर्ण बर्ताव को जारी रखने के विरुद्ध प्रबल विद्रोह भी था। १६ नवम्बर, १८७९ के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ में काशी के ३०० पण्डितों के समक्ष उन्होंने मूर्तिपूजा के वेद-विहित होने का प्रमाण देने की चुनौती दी। किन्तु वे मूर्ति पूजा के समर्थन में एक भी प्रमाण न दे सके। उसके बाद स्वामी जी ७ बार काशी गये। हर बार उन्होंने अपनी चुनौती को दोहराया किन्तु कोई भी पण्डित मूर्तिपूजा को वेदानुमोदित सिद्ध करने के लिए आगे नहीं आया।

सामाजिक सुधारों की दृष्टि से भी अन्य कोई आन्दोलन आर्यसमाज की समता नहीं करता। आर्यसमाज से पहले जातिभेद, अस्पृश्यता, बाल विवाह, बहुविवाह आदि भयकर कुरीतियों ने हिन्दू समाज की जड़ों को खोखला कर रखा था। स्त्रियों की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। शुद्धि की कल्पना करना भी असंभव था। इन सब भयानक कुरीतियों का परिणाम यह था कि हिन्दू जाति संख्या एवं महत्त्व की दृष्टि से निरंतर क्षीण होती चली जा रही थी। विरोधी लोग हिन्दू जाति का अंत निकट समझते थे और उनके विभिन्न वर्गों को आपस में बांट खाने के मनसूबे बांध रहे थे। स्वामी दयानन्द और उनके आर्य-समाज ने विरोधियों के इन इरादों पर पानी फेर दिया।

राष्ट्रीय दृष्टि से अभी तक सही रूप से आर्यसमाज का मूल्यांकन नहीं किया गया। यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि जब अन्य सुधार आन्दोलनों के नेता ब्रिटिश शासन को भारत के लिए ईश्वरीय वरदान समझते थे तब ऋषि दयानन्द ने राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस की स्थापना से भी पूर्व अपने अमर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा था, "कोई कितना ही करे···मत मतांतर के आग्रह से रहित प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" स्वामीजी ने इस वाक्य के द्वारा स्वराज्य का जो सिद्धान्त प्रतिपादित किया था, १८८५ में स्थापित राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस उसे चिरकाल तक राजद्रोह समझती रही। १९०६ में पहली बार कांग्रेस के मंच से स्वराज्य शब्द का उचारण हुआ और उसके दस वर्ष बाद लोकमान्य तिलक ने यह घोषणा की कि स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है।

स्वामी जी के सभी ग्रन्थों में चाहे वे वेद भाष्य हों या प्रार्थनाएं हों या खण्डनपरक ग्रन्थ हों, स्वदेश प्रेम और राष्ट्र प्रेम की भावना ओतप्रोत है। यजुर्वेद १—६ के भाष्य में मनुष्य के दो मुख्य प्रयोजनों में से स्वामी जी पहला प्रयोजन चक्रवर्ती राज्यश्री की प्राप्ति बताते हैं और दूसरा प्रयोजन विद्या-प्रचार। ब्रह्म समाज तथा प्रार्थना समाज की आलोचना करते हुए वे लिखते हैं कि इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। राष्ट्रीय दृष्टि से स्वामी दयानन्द का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह था कि उन्होंने मानसिक पराधीनता को दुर किया। मानसिक पराधीनता शारीरिक पराधीनता से भी अधिक घातक होती है। अंग्रजों ने अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा भारतीयों में आत्महीनता की जो भावना उत्पन्न कर दी थी उसके कारण स्वयं भारतीय ही प्रत्येक भारतीय वस्तु को तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगे थे। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द ने कहा कि वैदिक काल में हमारा आर्यावर्त सब देशों का गुरु रहा है इसलिए हमें किसी भी पश्चिमी देश से लज्जित होने की आवश्यकता नहीं है। दयानन्द के इस विचार ने ही सर्वप्रथम मैकाले की माया से मुग्ध भारतीयों की मोह निद्रा को भंग किया और उनमें आत्मविश्वास एवं राष्ट्रीयता की भावना को सम्पुष्ट किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अपने समकालीन समस्त सुधार आन्दोलनों में आर्यसमाज का आन्दोलन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली है। आर्यसमाज की सफलता का मुख्य कारण था पुरातन और नूतन, श्रद्धा और तर्क, परम्परा और बुद्धि, पूर्व और पश्चिम में उचित समन्वय करते हुए सुधार की अतियों से बचते हुए मध्यम मार्ग का अनुसरण। ब्रह्म समाज ने सुधार की एक 'अति' पर चलने का प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप वे प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रवाह से सर्वथा विच्छिन्न हो गये। दूसरी ओर थियोसो-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिस्टों ने एक दूसरी 'अति' का आश्रय लिया। वे घातक कुरीतियों का भी विज्ञान एवं बुद्धि के बल पर समर्थन करने लगे। ऋषि दयानन्द ने इन अतियों से बचते हुए वेद और भारतीय परम्परा के सुदृढ़ आधार पर अपने सुधार की नींव रखी। इसलिए उनके द्वारा प्रवर्तित आर्यसमाज हिन्दू धर्म का मार्ग-दर्शक, समाज सुधार का अग्रणी और राष्ट्रीयता का अग्रदूत बना। वर्तमान भारत में जो चतुर्मुख जागृति की पुनीत भागीरथी प्रवाहित हो रही है उसको लोक में लाने वाले अभिनव भगीरथ ऋषि दयानन्द ही हैं। □

□✡✡□ □✡✡□ □✡✡□ □✡✡□ □✡✡□ □✡✡□ □✡✡□

जन-ज्ञान [मासिक]

के

आजीवन सदस्य बनकर

आगे बढ़ने में

सहयोग दीजिए।

अपने मित्रों-परिचितों को

भी आजीवन सदस्य

बनाइए।

आप आज ही ५०१ रुपया भेजिए।

यह मेरी प्रार्थना है।

— राकेशरानी

□✡✡□ □✡✡□ □✡✡□ □✡✡□ □✡✡□ □✡✡□ □✡✡□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान वी ना ।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां ।।
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता राम ।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहिं काम ।।
चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय ।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय ।।
जो उपजियो सो विनस है मरो काल के गाल ।
नानक हर गुन गाय ले छांड़ सकल जंजाल ।।
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार ।
कह नानक थिर कुछ नहिं सुपने जियुं संसार ।।
झूठ बखान कहा करे जग सुपने जियुं जात ।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान ।
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की ।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगयो धन की ।।
संग सखा सब तज गये कोऊ न निबाहियो साथ ।
कहु नानक एहू विपत में टेक एक रघुनाथ ।।

—श्री गुरु नानक देव जी

जो हमको हरमेस उचरि है ।
ते सब नरक कुंड महिं परि है ।।

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चंदू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—१८५, बालकेश्वर मार्ग, तीनबत्ती, बम्बई-४००००६

१. जावेरी बाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादरा टी०टी० ५. बरल नाका ६. सर्कल ७. ठाकुर द्वार ८. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट ९. घाट-कोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, बांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने सांताक्रुज (पश्चिम)

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड
बम्बई-४००००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन में विशिष्टता चाहते हो तो शीलवान् बनो

—दीनानाथ सिद्धांतालंकार

महाभारत शान्तिपर्व राजधर्म प्रकरण अध्याय १२४ में दुर्योधन और धृतराष्ट्र का परस्पर संवाद है, जो श्रेष्ठ मानव जीवन के निर्माण में 'शील' के महत्त्व पर प्रकाश डालता है।

इस संवाद का प्रारम्भ धृतराष्ट्र द्वारा दुर्योधन को संतप्त देख इस प्रश्न से होता है—'तुम्हारे इस प्रकार संतप्त होने का क्या कारण है जबकि तुम्हारे पास लौकिक सुख-समृद्धि के सब साधन उपस्थित हैं?' दुर्योधन स्वभावतः पाण्डवों से बड़ी ईर्ष्या करता था। उसने कहा—'युधिष्ठर के घर में हजारों स्नातक स्वर्णपात्रों में भोजन करते हैं जबकि मेरे महलों में कुछ ही स्नातक भोजन करने आते हैं।' इसी प्रकार दुर्योधन ने वस्त्र, अश्व इत्यादि अन्य कई जड़-चेतन वस्तुओं का और पशु-पक्षियों का भी उल्लेख किया। धृतराष्ट्र ने पुत्र को ईर्ष्या-द्वेष के त्याग का उपदेश देते हुए कहा— 'हे पुत्र! यदि तू युधिष्ठिर सदृश वैभव प्राप्त करना चाहता है तो शीलवान् बन।' दुर्योधन ने उस समय पूछा—'यह शील क्या है?'

धृतराष्ट्र ने प्राचीन काल का इतिहास सुनाते हुए लक्ष्मी के निम्न कथन के प्रमाण से शील के अङ्गों का वर्णन किया—

धर्मः सत्यं तथा वृत्तं चैव लक्ष्मी।
शीलमूला महाप्राज्ञ सदा नास्त्यत्र संशयः॥

अर्थात् धर्म, सत्य, सदाचार और लक्ष्मी, हे बुद्धिमान्! ये चारों शील के मूल हैं। इसकी अधिक व्याख्या करते हुए धृतराष्ट्र कहता है—किसी के भी प्रति मन-वाणी-कर्म से द्रोह न करना, दया करना, यथाशक्ति दान देना यह शील कहा जाता है।

प्राचीन काल के भर्तृहरि, विदुर, चाणक्य इत्यादि नीतिकारों ने 'शील' का विस्तार से विवेचन किया है। इनके कुछ वचनों को हम यहां प्रस्तुत करते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भर्तृहरि के अनुसार—(१) मन, वचन और शरीर से सत्कर्म रूपी अमृत से पूर्ण होकर तीनों लोकों को अपने उपकारों से तृप्त करने वाले तथा दूसरों के परमाणु सदृश छोटे गुणों को भी पर्वत के सदृश मानकर अपने हृदय में सदा प्रसन्न होने वाले शीलवान् उत्तम पुरुष संसार में विरले ही होते हैं।

(२) तृष्णा का त्याग, क्षमा, मद का त्याग, पाप में प्रीति का त्याग, सत्य बोलना, सज्जनों के मार्ग का अनुकरण, विद्वानों की सेवा, पूजनीय व्यक्तियों का आदर, शत्रुओं के प्रति भी नम्र व्यवहार, अपने गुणों को छिपाना, अपने यश की रक्षा, दुखियों के प्रति दया—ये सत्पुरुषों के लक्षण हैं।

सर्वश्रेष्ठ भूषण हैं—(३) धन सम्पत्ति की शोभा—सज्जनता शूर-वीरता की शोभा—वाक् संयम ज्ञान की शोभा—शान्ति, विद्या की शोभा—नम्रता, धन की शोभा—सुपात्र को दान, तप की शोभा—क्रोध न करना, प्रभुता की शोभा—क्षमा और धर्म का भूषण निश्छल व्यवहार है। पर इन सबका मूल शील—सदाचार—सर्वश्रेष्ठ है।

नीति निपुण व्यक्ति चाहे निन्दा करें या प्रशंसा, धन ऐश्वर्य आये अथवा चला जाये, आज ही मृत्यु हो चाहे दीर्घ काल के बाद, पर धीर पुरुष न्याय के मार्ग से एक पग भी इधर-उधर नहीं होते।

विदुर नीति के आधार पर

(१) जो शान्त हुए वैर को नहीं भड़काता, न घमंड करता है, अपने को हीन नहीं जताता, 'दुर्गति में पड़ा हूं' ऐसा कहकर अकार्य नहीं करता उसे परम आर्यशील कहते हैं।

(२) अपने सुख में बहुत हर्ष नहीं करता और न ही दूसरे के दुःख में प्रसन्न होता है, जो देकर पश्चाताप नहीं करता वह सत्पुरुष आर्य शील कहलाता है।

(३) इस संसार में शील ही मनुष्य का मुख्य धन है, जिसका यह धन नष्ट हो जाता है उसका न तो जीने का प्रयोजन है और न भौतिक धन से उसे कोई लाभ होगा।

(४) जितेन्द्रिय पुरुषों की गति सत्पुरुष हैं, सत्पुरुषों की गति भी सत्पुरुष ही हैं। किन्तु असत्पुरुष सत्पुरुषों की गति कभी नहीं होते।

(५) विद्यामद, धनमद तथा देश अथवा कुल का मद होता है। अहंका-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रियों के लिए ये मद उन्मादकारक होते हैं। किन्तु सज्जनों के लिए यही दमन का साधन होते हैं।

चाणक्य नीति के आधार पर

(१) रूप को शोभा गुण से, कुल की शोभा शील से, विद्या की शोभा सफलता से और धन की शोभा उसके प्रयोग से होती है।

(२) गुणहीन व्यक्ति का रूप, शीलहीन का कुल, प्रयोग में न आने से विद्या और व्यवहार में न आने से धन का नाश होता है।

(३) जिनके पास विद्या नहीं, तप नहीं, दान नहीं, ज्ञान नहीं, शील नहीं, गुण नहीं, धर्म नहीं। ऐसे मनुष्य इस पृथ्वी पर भार रूप में पशुओं के समान विचरते हैं।

[महाभारत के राजधर्म प्रकरण के अतिरिक्त कालान्तर में जन्मे नीति-विद् आचार्य चाणक्य का धृतराष्ट्र और दुर्योधन के संवाद से सीधा सम्बन्ध नहीं है, केवल विषय-सापेक्ष होने से इन को यहां उद्धृत किया गया है।]

धृतराष्ट्र अपने पुत्र दुर्योधन को अन्त में कहते हैं—'हे पुत्र! यदि तू युधिष्ठिर से भी विशिष्ट होना चाहता है तो इस प्रकार जीवन का तत्त्व जानकर शीलवान् बन।' □

हिंदू राष्ट्र के सजग प्रहरी

जन-ज्ञान मासिक का नमूना

मुफ्त मंगाएं

केवल ५० पैसे का डाक टिकिट भेजकर

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, करोल बाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशी गायों के आयात से पूर्व सावधानियों की आवश्यकता

—सदाजीवतलाल

भारत प. जर्मनी से बीस हजार दुधारू (होलस्टीन-फ्रीजियन) गायों का आयात करेगा। 'जनसत्ता' (१७-४-'८५) में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार, इन गायों का पांच हज़ार का पहला जत्था अक्तूबर में भारत पहुंचेगा, जिन्हें नैनीताल ज़िले के तराई क्षेत्र सितारगंज में रखा जायेगा। इस फार्म की पांच हज़ार एकड़ ज़मीन में चारा पैदा किया जायेगा। फ़ार्म को इस क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने वाले पंतनगर विश्वविद्यालय का भरपूर सहयोग मिलेगा। उत्तरप्रदेश सरकार ने सब बीस हज़ार गायों को उन्हीं बीस ज़िलों में रखने की इच्छा व्यक्त की है, जो पंतनगर विश्वविद्यालय क्षेत्र में आते हैं।

भारत को ये गायें निःशुल्क (लाने का खर्चा वहन करने की शर्त पर) दिलाने का श्रेय स्पेन की राजकुमारी ऐरेन को है, जो जगद्गुरु शंकराचार्य कांची कामकोटि पीठ की शिष्या हैं। उनकी प्रार्थना पर यदि फ्रांस, बेल्जियम, हॉलेण्ड आदि देश भारतीय प्रार्थना पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने को तैयार हो गये, तो उसे ऐसी दो लाख गायें, जिनका इस वर्ष इन देशों में दूध के आधिक्य के कारण वध किया जाने वाला था, मिल सकेंगी। भारत में इस समय सवा १८ करोड़ के करीब गायें हैं।

कुछ जानकार आलोचकों ने निम्न कारणों से यह आशंका व्यक्त की है कि ये गायें भारतीय अवस्थाओं के उपयुक्त न होंगी और शीघ्र ही उसी तरह मर जायेंगी, जिस प्रकार आस्ट्रेलिया से आयी विदेशी गायों का झुण्ड 'रिन्डरपेस्ट' (पशुओं का एक रोग) का टीका लगते ही समाप्त हो गया था। आलोचकों की आशंका के कारण निम्न हैं—

(१) चूंकि भारत की अवस्थाएं इन विदेशी गायों के अनुकूल नहीं हैं और भारत के पास वे साधन उपलब्ध नहीं हैं जिनकी वे अभ्यस्त हैं, इसलिए वे उतना दूध नहीं दे पायेंगी, जितना वे विदेशों में देती थीं। इसका प्रभाव उनकी सेहत पर पड़ सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(२) इन गायों में रोग-प्रतिरोधक शक्ति कम होती है और इस कारण उनके रोग-ग्रस्त होकर कभी भी मर जाने का भय सदा बना रहेगा।

(३) यूरोपीय देश, जो सदा अपना घटिया, फ़ालतू माल ही तीसरे विश्व के देशों पर थोपने को तैयार रहते हैं, शायद अपनी अच्छी से अच्छी गायें न भेज कर निकृष्टतम गायें ही हमें भेजेंगे।

(४) वे शायद हमें उनकी सेहत का पूरा ब्यौरा भी नहीं भेजेंगे, जिसके अभाव में हमारे लिए उनकी सही देखभाल करना कठिन हो जायेगा।

(५) इन सब गायों को यूरोपीय देशों में मशीनों से दुहा जाता था और भारत में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है, इसलिए उनके द्वारा दिए जाने वाले दूध की मात्रा, हाथ से दूध निकालने से, निश्चित ही कम हो जाएगी। मशीन की क़ीमत एक विदेशी गाय की क़ीमत से दस गुना अधिक है।

(६) इन गायों की पहली खेप अक्तूबर में भारत में आने वाली है। उनके संबंध में सब आवश्यक सूचनाएं इतने कम समय में भारत को देना प, जर्मनी के लिए कठिन होगा और इन सूचनाओं के अभाव में अच्छी देखभाल में कमी आ सकती है। इसका असर उनकी सेहत पर पड़ सकता है।

(७) इन गायों के आयात का प्रभाव भारतीय नस्लों की गायों पर भी अवश्य पड़ेगा, यदि उन्हें उनसे पृथक् न रखा गया।

हम इस स्कीम को सफल बना सकते हैं, बशर्ते हम इन गायों की देखरेख में वे पूरी सावधानियां बरतें, जो अपेक्षित हैं। हमारे पास सबसे बड़ा साधन है जन-शक्ति का, जो हमारे पास अपरिमित है। प्रशिक्षित, कर्मठ और निष्ठावान् कार्यकर्त्ता, उत्तम और कुशल प्रबंधक तथा उन स्थानों का सही चुनाव, जहां इन गायों को रखा जाएगा—इन बातों का पूरा ध्यान रखकर ही हम इस स्कीम को सफल और यशस्वी बना सकेंगे।

चूंकि भारत में क्रॉस ब्रीडिंग के प्रयोग सफल नहीं रहे हैं, अतएव यह बहुत ज़रूरी है कि इन विदेशी गायों से उत्पन्न सांडों का प्रयोग भारतीय गायों के साथ क्रॉस ब्रीडिंग के लिए हरगिज़ न किया जाए, बल्कि उन्हें देशी गायों से बिल्कुल अलग रखा जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरी राय में इन गायों के लिए आदर्श स्थल हैं—हिमाचल प्रदेश में किन्नौर, लाहौल-स्पीति, कुल्लू और चंबा। उत्तर प्रदेश में गढ़वाल, कुमायूं और पिथौरागढ़ जैसे क्षेत्र तथा प. बंगाल, जम्मू-कश्मीर, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश तथा मणिपुर जैसे राज्यों के वे स्थान जो काफी ऊंचाई पर स्थित हैं, मगर जहां घास बहुतायत से उपलब्ध है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि वे सब स्थान सड़कों से जुड़े हों, ताकि वहां उत्पन्न दूध तथा दूध से बनी वस्तुओं—घी, मक्खन, पनीर, दुग्ध-चूर्ण आदि को नगरों और महानगरों में बिक्री के लिए पहुंचाया जा सके और यह पिछड़े व उपेक्षित इलाके भी आर्थिक उन्नति की दौड़ में आगे बढ़ सकें।

ये गायें जिन डेरियों में रखी जायें, उनमें देखभाल के लिए भूतपूर्व सैनिकों तथा मन से डेयरी का धंधा अपनाने वाले निष्ठावान्, मेहनती और स्वस्थ व्यक्तियों को, जो गरीबी की रेखा के आसपास का जीवन बिता रहे हों, रखा जा सकता है। इससे देश को दुहरा लाभ होगा। ये लोग अधिक दुग्ध-उत्पादन करने में अपनी जान लगा देंगे और पड़ौसी देश चीन से संघर्ष होने की स्थिति में अपने देश का बचाव भी करेंगे।

भारत को इन देशों से होसल्टीन-फ्रीजियन या रेड डेन गायों के स्थान पर जर्सी गायों की मांग करनी चाहिए, क्योंकि जर्सी गाय के दूध में अधिक वसा होती है और वह रोगों का सामना भी बेहतर ढंग से कर सकती है। भारत को इन गायों को देने वाले देशों से यह भी मांग करनी चाहिए कि वह इन गायों को दिया जाने वाला विशेष फ़ीड' भी उचित मूल्यों पर देते रहें तथा वे मशीनें भी कम मूल्य पर दें, जिनसे विदेशों में उनका दूध निकाला जाता था। बाद में उस विशिष्ट चारे और दूध दुहने वाली मशीनों का उत्पादन भारत में ही सरलतापूर्वक किया जा सकता है।

यह सच है कि भारत में अज्ञान तथा गरीबी की वजह से गायें उपेक्षित रहती हैं या आवारा की तरह घूमने के लिए छोड़ दी जाती हैं और भांति-भांति के रोगों से पीड़ित होकर असमय में ही मर जाती हैं, मगर उनकी रक्षा हम सिर्फ पूजा करके नहीं कर सकते। इसके लिए हमें उन तरीकों को सीखना होगा, जो विदेशी अपनी गायों को स्वच्छ रखने तथा उनसे अधिक से अधिक दूध प्राप्त करने में काम में लाते हैं। विदेशों से आने वाली ये हज़ारों गायें इन तरीकों को सीखने का सुनहरी अवसर प्रदान करती हैं। हमें इस अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या असम २१वीं सदी तक हिन्दू बना रहेगा ?

भारत सरकार और असम आन्दोलनकारियों के बीच हाल ही में हुआ समझौता असमियों की पराजय है, भारत की पसपाई है और हिन्दुओं के लिए विनाशकारी है।

यह भारत में द्वितीय मुस्लिम बहुमत वाले राज्य के उदय पर स्वीकृति की मुहर लगाता है। (मुस्लिम बहुमत वाला प्रथम राज्य कश्मीर है। रस्मी तौर पर इसे जम्मू व कश्मीर राज्य कहा जाता है, लेकिन वस्तुतः जम्मू का महत्त्व बहुत कम है। जम्मू का महत्त्व इतना ही है कि गरमियों में लोग अमरनाथ की गुफा के दर्शन के लिए जाते हैं।)

तुलनाएं कभी अपने चारों पैरों पर खड़ी नहीं होतीं, लेकिन बहुत सम्भव है कि कुछ ही वर्षों में कामाख्या मन्दिर को जाने वाली पहाड़ी पगडंडी इस तथ्य की अकेली स्मृति रह जाये कि असम हिन्दू था। वस्तुतः सदियों तक यह (असम) उत्तर भारत के मैदानों में एकमात्र स्वाधीन हिन्दू राज्य था।

भारत के साथ मुश्किल यह है कि यह हाथी की तरह बहुत बड़ा है। कोई इसके सिर को देखता है, दूसरा सूंड़ को, तीसरा हिलती हुई पूंछ को। लेकिन पूरे पशु को देखने वाले बहुत कम हैं। हम उचित आदर के साथ यह बात कहना चाहते हैं कि लोग मुख्यतः दिल्ली को ही देखते हैं। शेष अन्धकार से ढंका धुंधला क्षेत्र है। कई दशकों से पूर्वी बंगाल-विशेषतः विशाल पड़ोसी मैमनसिंह जिले के मुसलमान किसान असम पर हल्ला बोलते रहे हैं, लेकिन देश के किसी राजनैतिक नेता ने इसकी चर्चा तक नहीं की। क्योंकि हमें अंग्रेजों से घृणा है, इसलिए भारत में जो कुछ भी बुरा हुआ, हम उसका दोष अंग्रेजों के मत्थे मढ़ देते हैं। वास्तविकता यह है कि अंग्रेजों ने ही उभर रही मुस्लिम लहर को देखकर खतरे की घंटी बजाई और इस लहर को सारे प्रान्त तक फैलने से रोकने के लिए पग उठाये। सन् १९३१ में असम में जनगणना के ब्रिटिश सुपरिंटेंडेंट सी. एस. मुल्लन ने अपनी सरकारी रिपोर्ट में लिखा—जहां शव होंगे वहां गीध अवश्य जमा होंगे। जहां बंजर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भूमि होगी, वहां मैमनसिंह के लोग अवश्य जमा होंगे। वस्तुतः जिस तरह से उन्होंने असम घाटी के खाली क्षेत्रों पर कब्जा किया, वह करीब-करीब रहस्यमय है। पिछले २५ वर्षों में पांच लाख से अधिक लोग बंगाल से असम घाटी में आये। ऐसा दिखाई देता है कि यह सरकार के प्रशासनिक संगठन का चमत्कार है, लेकिन ऐसी कोई बात नहीं। यह तो वैसा ही है, जैसे बड़ी संख्या में चींटियां एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ गई हों। इस बाढ़ को रोकने के लिए असम की तत्कालीन सरकार ने, जिसमें प्रत्यक्षतः कोई "लोकप्रिय मन्त्री" न था, सन् १९२० में लाइन सिस्टम चालू किया, ताकि मुस्लिम आप्रवासियों को कुछ ऐसे क्षेत्रों तक सीमित रखा जाये, जिन्हें नक्शों पर लाइनों से चिन्हित किया गया है, ताकि असमी हिन्दू अपनी पैतृक जन्मभूमि में यथा पूर्व सुख-चैन, शान्ति और सम्मान के साथ रह सकें।

अविभाजित अन्तिम जनगणना (कम मुस्लिम बहुमत वाला जिला सिलहट सन् १९४७ में पूर्वी पाकिस्तान में सम्मिलित हो गया था) जो असम को

असम समझौते के परिणामों के सम्बन्ध में लिखित इस लेख में ढाका में भारत के भूतपूर्व डिप्टी हाई कमिश्नर शंकर एन. मैत्र आई. सी. एस. (अवकाशप्राप्त) का कहना है कि असम समझौते का सर्वाधिक दुःखदायी पहलू यह है कि मुस्लिम घुसपैठियों और हिन्दू शरणार्थियों का अन्तर समाप्त कर दिया गया है।

उनका कहना है कि हिन्दू शरणार्थियों की संख्या के ही कारण असम में गैर-मुस्लिम बहुसंख्यकों का राज्य है।

सात छोटे राज्यों में बांटने से पूर्व हुई, सन् १९६१ में एक खासी अधिकारी ई. एच. पाकेन्थियन की देख-रेख में हुई जो सम्भवतः ईसाई था। अपनी सरकारी रिपोर्ट में उन्होंने लिखा कि "यह देखा जा सकता है कि असम की वर्तमान सीमाओं में मुस्लिम जनसंख्या सन् १९०१ में ५, ३, ६७० से बढ़कर सन् १९६१ में २७, ६५, ५०९ हो गई। प्रतिशत के हिसाब से प्रति दस वर्ष में असम की मुस्लिम जनसंख्या २५ प्रतिशत से अधिक बढ़ी अन्त में उन्होंने लिखा कि "इससे सिद्ध होता है कि असम में बड़ी मुस्लिम जनता आप्रवास करके असम में आई, अधिकतर पूर्वी बंगाल से।

यह याद रखना चाहिए कि ऊपर लिखे छह दशकों में अन्य स्थानों की तरह असम की राजनैतिक तसवीर इतनी बदल गई कि पहचानी भी नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाती। सन् १९२१ में पुरानी नौकरशाही व्यवस्था का स्थान द्वैध शासन ने लिया, सन् १९३७ में प्रान्तीय स्वायत्तता ने और सन् १९४७ में पूर्ण स्वराज्य ने। दूसरी अवधि में लोकप्रिय मन्त्रियों का आंशिक नियन्त्रण था और तीसरी अवधि में पूर्ण नियन्त्रण था। इसके बावजूद आप्रवासियों की बाढ़ कभी न रुकी। यह ठीक है कि प्रथम अवधि में असमी मुसलमान सर मुहम्मद सादुल्ला मुख्यमंत्री थे। लेकिन उन्हें रोहिणी चौधरी सदृश हिन्दू मन्त्री भी रखने पड़े। सन् १९४५ में सादुल्ला का शासन समाप्त हो गया। उसके बाद मुईनुल हक चौधरी और फखरुद्दीन अली अहमद सदृश प्रभावशाली मुस्लिम मन्त्री आये। लेकिन मुख्य मन्त्री का पद सदैव गोपीनाथ बार दोलाई, विष्णुराम मेधी और बी. पी. चालिहा सदृश पक्के असमी देशभक्तों ने संभाला। कांग्रेस दल के हिन्दू विधायक उनका समर्थन करते थे। तथापि यह तथ्य कायम है कि उनके व्यक्तिगत विचार कुछ भी रहे हों, उन्होंने असम में अवैध मुस्लिम घुसपैठ को रोकने के लिए बहुत कम प्रयत्न किया।

जब भी उच्चतर स्थानीय अधिकारियों ने अवैध प्रवेश को रोका और आखिरी पग के तौर पर अवैध तौर पर बनाये गये मैमनसिंही झोंपड़ों को तोड़ने की धमकी दी, तभी असम की राजधानी शिलांग से तार आ गया कि यह कार्रवाई बन्द करदी जाये। कारण? भ्रष्टाचार का वही पुराना पाप। मामूली राजस्व अधिकारी, मंडल, कानूनगो और सर्कल अधिकारी खरीदे जा सकते थे। उनकी पहुंच मन्त्रियों तक थी। सबसे बड़ी बात यह कि मुस्लिम वोट बैंक का समर्थन उन्हें प्राप्त था। स्वाधीनता मिलने के बाद यह सम्प्रदाय मुस्लिम लीग से अगल हो गया है और कांग्रेस को वोट देने लगा।

समझौते का सर्वाधिक दुःखदायी भाग यह है कि मुस्लिम घुसपैठियों और हिन्दू शरणार्थियों का अन्तर समाप्त कर दिया गया है। जांच, मताधिकारों से वंचित किये जाने अथवा निष्कासन के प्रत्येक चरण में उनके साथ विदेशी नागरिकों जैसा बरताव होगा। विभाजन के समय देश के नेताओं ने जिन हिन्दुओं को पाकिस्तान में ही छोड़ दिया था, उनकी चीख-चिल्लाहट की बात छोड़ भी दी जाये, तो भी क्या प्रत्येक हिन्दू शरणार्थी के निष्कासन से असम की समस्या हल हो जायेगी?

पाकिस्तान के रूप में नव गठित इस्लामी गणराज्य से हिन्दुओं के बलात् पलायन के बाद सन् १९५१ की जनगणना एक पारसी आई. सी. एस. अधि-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारी और वी. बर्मारेवाला की देखरेख में हुई। उनकी रिपोर्ट में कहा गया है कि इस समय पूर्वी पाकिस्तान में जन्मे लेकिन असम में रहने वाले ८ लाख ३३ हजार व्यक्तियों में से ५ लाख ५९ हजार मुसलमान थे और केवल २ लाख ७४ हजार हिन्दू थे। दूसरे शब्दों में हिन्दू शरणार्थियों का अनुपात एक और तीन था। चलिए, हम मान लें कि बाद में जब स्थिति अपेक्षाकृत अधिक शान्त हो गई, पूर्वी पाकिस्तान (बंगलादेश) से नवागन्तुकों का अनुपात एक और चार हो गया। यदि सबके सब हिन्दू शरणार्थी भी असम से निकाल दिए जायें, लाखों मुस्लिम घुसपैठियों का क्या किया जायेगा? वस्तुतः ये हिन्दू शरणार्थी ही हैं, जिनकी संख्या असम में मुसलमानों को बहुसंख्यक नहीं होने दे रही। सम्भव है कि इस समय मुसलमान असमियों के साथ भाइयों की तरह रह रहे हों, लेकिन यदि हिन्दू शरणार्थियों को असम से निकाल दिया गया और फलस्वरूप मुसलमान बहुसंख्यक हो गये, तो मुसलमानों का स्वर शीघ्र ही बदल जाएगा और आकाश अल्ला हू अकबर के नारों से गूंज उठेगा।

मामले का निचोड़ यह है कि बाइबल की आलंकारिक भाषा में कहें तो असम खुशी-खुशी मुस्लिम ऊंट को तो निगल रहे हैं, लेकिन बंगाली मच्छर को न निगलने के लिए प्रतिरोध कर रहे हैं। कारण यह कि उनकी भाषा असमी जबकि बंगाली हिन्दू अपनी मूर्खता के कारण कहते हैं कि बंगाली मुसलमान चालकी से काम लेकर कहते हैं कि उनकी भाषा बंगाली है। बंगाली मुसलमानों का कथन अधिकांश में असत्य है। असमी बस्तियों के समीप तलहटियों में रहने वाले नगाओं में पुरुष हाटों में क्रय-विक्रय के लिए ग्रामीण असमी भाषा बोलते हैं, लेकिन घर आकर आओ, सेमा अथवा स्थानीय नगा बोली बोलते हैं। स्त्रियां भी यही बोलियां बोलती हैं। मुस्लिम आप्रवासी की सही स्थिति भी यही है। घर में पुरुष और स्त्रियां बंगाली बोलते हैं। हाटों और कछारियों में जहां केवल पुरुष जाते हैं, वे एक एक प्रकार की ग्रामीण असमी भाषा बोलते हैं। पिछले दिनों इसमें एक तीसरा भाषाई फार्मूला जोड़ दिया गया। क्योंकि अल्लाह की मेहरबानी से बंजर अरब रेगिस्तान तेल में मिल गया है, इसलिए पैट्रोडालरों की सहायता से नव निर्मित मस्जिदों के साथ अरबी पढ़ाने के लिए दारुल उलूम मदर से खोल दिये गये हैं। असमी अपनी मातृभाषा से अत्यधिक प्रेम के कारण इन पहलुओं की अनदेखी कर रहे हैं।

इस बात की भी अनदेखी की जा रही है कि भारत का विभाजन भाषा के आधार पर नहीं, अपितु मजहब के आधार पर हुआ। फीरोजखां नून और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मियां मुमताज दौलताना उतनी ही सरलता और प्रवाह से साथ पंजाबी बोलते थे, जितनी सरलता और प्रवाह के साथ मास्टर तारसिंह और भीमसेन सच्चर। फिर भी दोनों को खून के दरिया ने अलग कर दिया। असम के साथ जुड़े बंगाल में बंगाली मुसलमान और बंगाली हिन्दू एक जैसी बंगाली भाषा बोलते थे। मजहब और पाकिस्तान की पुकार पर उस प्रान्त को दो भागों में बांट दिया गया। आखिर असमी भाषा में ऐसी क्या विशेषता है कि असम में यह सब न होगा।

नये समझौते की नवीन बातों में से एक यह है कि सन् १९६६ के बाद के उन आप्रवासियों को मताधिकार से वंचित कर दिया गया है, जो विदेशी नागरिक हैं। मुझे आशंका है कि यह पर्दा फट जायेगा। क्या भारत सरकार चिरकाल तक इन लाखों मुसलमानों को मताधिकार से वंचित रख सकेगी?

भारत सिन्धु नदी को तो पहले ही खो चुका है। प्रतीत होता है कि नये समझौते के फलस्वरूप २१वीं सदी के सूर्योदय के साथ वह ब्रह्मपुत्र नदी को भी खो देना। □

जन-ज्ञान [मासिक] में विज्ञापन दीजिए

- यह आपको एक लाख पाठकों से मिलवायेगा।
- आपके उत्पादन-संस्थान का उनसे परिचय करवायेगा।
- जन-ज्ञान केवल एक पत्रिका नहीं, एक आन्दोलन है।
- एक यज्ञ है यह, आप इसमें आहुति भी देंगे-- जब आप जन-ज्ञान में विज्ञापन देंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अच्छी नींद के लिए कुछ बातें

समय पर सो जाने के कारण शरीर विपुल शक्ति का संचयन करता है। शरीर और मन दोनों को इस प्रकार का विश्राम मिलना चाहिए, अन्यथा दोनों समुचित ढंग से काम करना बन्द कर सकते हैं।

इस बात की चिन्ता मत करें कि आप कितने घंटे सोते हैं। विचारणीय बात यह है कि आप किस प्रकार विश्राम लेते हैं। एक अल्प, किन्तु शांत निद्रा लम्बी अशांत निद्रा से कहीं अधिक अच्छी है। कम से कम चार घंटों की गहरी नींद अपेक्षित है। यदि आप तनाव एवं मस्तिष्क की थकान से ग्रस्त हैं, तो आपको कुछ ज्यादा घंटे बिस्तर पर गुजारने चाहिए।

ताजी हवा में चलना नींद की तैयारी के लिए एक अच्छी क्रिया है। इसी प्रकार गर्म पानी से नहाना भी उत्तम है और संगीत तो मस्तिष्क के लिए गर्म पानी से भी अधिक लभकारी है। यदि संगीत चल रहा हो, उसे धीमा रखिए, ताकि संगीत के धीमे स्वर आपको सभी अन्य विचारों से मुक्त रख सकें।

खाली पेट नहीं सोना चाहिए और न ही पेट को अच्छी तरह भर कर सोना चाहिए। सोने से पहले दूध पिएं। एक गिलास दूध में ऐसे शारीरिक रसायन होते हैं, जिनका कैलशियम और लैक्टिक एसिड पर सीधा प्रभाव होता है। कैलशियम स्नायुओं को पोषित करता है, जो मस्तिष्क में निद्रा केन्द्र को उद्वेलित करता है। रक्त में लैक्टिक एसिड मस्तिष्क को कैलशियम भेजता है। अधिक शक्ति की कैलशियम खनिजीय गोलियां आदि सोने से आधा घंटे पहले ली जाएं, तो इससे अनिद्रा के पुराने जटिल केस में भी सुधार लाया जा सकता है।

नींद लाने वाली गोलियों का सेवन खतरनाक है। जब आप स्वाभाविक नींद से जागते हैं तो आप यों महसूस करते हैं, जैसे आपने भरपूर विश्राम ले लिया है और आप में अधिक शक्ति आ गई है। लेकिन जब आप औषधि सेवन के बाद की अचेतना से बाहर आते हैं तो आप कुछ और नर्वस हो जाते हैं। अनेक गोलियों में ऐसी औषधियां होती हैं, जो रक्त के श्वेतकणों को समाप्त कर देती हैं। जब ऐसा होता है तो संक्रमण प्रतिरोध कम हो जाता है। अनिद्रा से जूझने का एक ही सुरक्षित मार्ग संतुलित आहार और पौष्टिकता है। रात को उसी समय सोने का प्रयत्न करें जब आप हर रात को सोते हैं। मन की शान्ति के लिए कोई गोली नहीं है। इस सम्बन्ध में आपको निर्णय करना है कि मन की शांति के लिए क्या करना चाहिए। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाये जाएं।

२. मजहब के आधार पर पुलिस, सेना या किसी भी सरकारी विभाग में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. पंजाब, कश्मीर, असम व देश के अन्य भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यंत्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहां भारत के नागरिकों के स्थायी तौर पर बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथ-पत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह लिखे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

११. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने ग्राम, नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित करें

सबसे पहले आप समिति के उद्देश्य और मांगें पढ़ डालिए। यदि आप उनसे सहमत हों तो कम से कम अपने १९ साथी और बनाइये। इस प्रकार २० सदस्य बनाकर उनके फार्म तथा उनके पूरे शुल्क का ड्राफ्ट "अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति" के नाम का बनाकर केन्द्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को भेजिए। साथ ही स्वीकृति के लिए पत्र भी लिखें।

स्वीकृति प्राप्त होने पर आप में से जिन्हें संयोजक बनाया जाए—वे एक अस्थायी कोषाध्यक्ष व मंत्री नियुक्त कर लें तथा अपने यहां विधिवत् कार्यालय बना लैटर-हैड, रसीद बुक आदि छपवा लें। स्थापना के दो मास के भीतर आप एक कार्यकर्त्ता सम्मेलन बुलाएं और रात्रि को सार्वजनिक सभा हिन्दू रक्षा सम्मेलन के रूप में रखें।

आपका लक्ष्य अधिक से अधिक सदस्य बनाना हो। अपने सदस्यता शुल्क व दान से सम्मेलन कीजिए। साहित्य बांटिए, पोस्टर लगाइए और संगठन को सुदृढ़ बनाइए।

२० सदस्यों के बाद बने सदस्यों का चौथाई शुल्क आप केन्द्र को भेजेंगे। दान के रूप में एकत्र सम्पूर्ण धन आप अपने क्षेत्र में व्यय कर सकेंगे, किन्तु आप को सारा हिसाब नियमानुसार रखना होगा।

केन्द्र कभी भी आपके व्यय की जांच कर सकेगा और केन्द्र को यह भी अधिकार होगा कि वह अनियमितता प्रतीत होने पर आपकी समिति भंग कर नई समिति गठित कर सके।

हिन्दू रक्षा समिति वस्तुतः राष्ट्र के गौरव, परम्पराओं, इतिहास और स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए कृतसंकल्प सर्वस्व-समर्पित देशभक्तों का संगठन है। इसी भावना से सब कार्य करें, ताकि सफलता मिल सके।

हम किसी भी संकट में सेवा के लिए सदा प्रस्तुत हैं।

(प्रो०) धर्मवीर, प्रधानमंत्री
अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति, करौल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दुओ, खतरे की घंटी बज रही है!

—इन्द्रदेव

प्रत्येक देश ने अपनी राष्ट्रभाषा को उचित सम्मान व महत्त्व दे रखा है किन्तु हमारा देश अपवाद है। स्वन्त्रता प्राप्त हुए ३८ वर्ष हो गए हैं किन्तु अभी तक हिन्दी को उसका स्थान नहीं मिल सका है। इसका मुख्य कारण है कि देश के नागरिकों में राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रनिष्ठा तथा राष्ट्रप्रेम की वह भावना नहीं है जो होनी चाहिए। सरकार की ओर से बार-बार प्रचार किया जाता है कि भारत विभिन्न धर्मों, अनेकों मतों, विभिन्न भाषाओं व मान्यताओं का देश है, अनेकता में एकता है, यह एक गुलदस्ता है जो विभिन्न प्रकार के फूलों से बना है, जबकि वास्तविकता यह है कि सारे देश में अगर एकता है तो उसका आधार हिन्दुत्व है। धर्मनिरपेक्ष दल इस तथ्य को न तो स्वीकार करते हैं और न ही उसके अनुकूल आचरण करते हैं।

हिन्दू समाज अब भी कमजोर है। उसकी राजनैतिक जागरूकता की कमी कारण हमारे देखते-देखते असम राज्य को छोटा करके नगालैण्ड, मिजोरम तथा मेघालय नाम के तीन ईसाई बहुल राज्य अस्तित्व में आ गए हैं। वहां की सरकारों ने अंग्रेजी को अपने राज्यों की भाषा बना दिया है। इन राज्यों तथा कश्मीर में वहां के नागरिक इस प्रकार की भाषा बोलते हैं जैसे वे भारत के नागरिक न हों। श्रीनगर (कश्मीर) में पाकिस्तान के झण्डे प्रायः फहरा दिए जाते हैं।

देश के विभाजन में उर्दू की प्रमुख भूमिका रही थी। फिर भी हमारे संविधान में, भयंकर भूल करके, विदेशी लिपि में लिखी जाने वाली, अलगाववाद को बढ़ावा देने वाली उर्दू को मान्यता प्राप्त भाषा मान लिया गया। राम-कृष्ण की जन्म भूमि उत्तर प्रदेश में, जहां गंगा-यमुना बहती है, अरबी और फारसी के दो विश्व विद्यालय पहले से ही मौजूद हैं। बिहार में उर्दू को द्वितीय भाषामान लिया गया है। उत्तर प्रदेश में द्वितीय भाषा के रूप में उर्दू को माना जाए, इसके लिए प्रयास जारी है। अन्य राज्यों में भी ऐसे प्रयास जारी हैं।

आज समय की मांग है कि हिन्दू समाज शक्तिशाली बनकर वीर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सावरकर के दिखाए गए मार्ग पर चले तभी देश की एकता व अखण्डता कायम रह सकेगी।

हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने वाली संस्थाएं १४ सितम्बर को हिन्दी दिवस जोर शोर से मनाएं। उस दिन बड़े-बड़े जलूस निकाले जाएं और विशाल पैमाने पर सार्वजनिक सभाएं की जाएं। यदि हिन्दू समाज जागृत नहीं हुआ और उसमें शासक बनने की प्रबल इच्छा नहीं आई तो आने वाली पीढ़ी को बुरे दिन देखने पड़ सकते हैं। □

लौंगोवाल की हत्या पर राकेशरानी जी को गहरा दुःख

नई दिल्ली, २२ अगस्त। अकाली नेता सन्त हरचन्द सिंह लौंगोवाल की हत्या पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्ष पंडिता राकेशरानी ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि उग्रवादियों ने उद्देश्यहीन हत्याओं का एक अन्तहीन सिलसिला प्रारम्भ कर रखा है। बहुत सोचने पर यदि इन हत्याओं का कोई उद्देश्य समझ में आता है तो यह कि जैसे भी हो, देश में अव्यवस्था, अराजकता और आतंक का वातावरण पैदा किया जा सके।

अपने लम्बे वक्तव्य में राकेशरानी जी ने कहा कि उग्रवादियों ने जिस-जिस छोटे-बड़े नेता की हत्या करनी चाही, उसकी हत्या करके छोड़ी। मैं पूछती हूं कि क्या सरकार सो रही है? सरकार अकाली दल से समझौता करने के बाद सुरक्षा के मामले में ढीली पड़ गई। इसी का परिणाम है कि पहले श्री ललित माकन और अब सन्त लौंगोवाल की हत्या हुई है।

राकेशरानी जी ने मांग की कि सरकार उग्रवादियों के दमन के लिए कठोर पग उठाये और उन स्वयम्भू नेताओं से सावधान रहे जो सरकार को यह गलत सलाह दे रहे हैं कि अकाली दल के नरम गुट की मांगें मान लेने से समस्या का समाधान हो जायेगा। सरकार अकाली दल के तुष्टीकरण की खातिर अन्य राज्यों के साथ अन्याय न करे और अपनी शक्ति उग्रवादियों के दमन में लगाये। खालिस्तान की मांग का समर्थन और भारत से मैत्री प्रदर्शित करने की दुमुंही पाकिस्तानी दुरभिसन्धियों से भी सतर्क रहने की आवश्यकता है। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

१. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	मूल्य ५००)
२. सामवेद : आध्यात्मिक भाष्य (पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड)	५०)
३. वेद ज्योति	२५)
४. वेदांजलि : ३६५ मन्त्रों की व्याख्या	३५)
५. सोमसरोवर : (सामवेद के पावमान पर्व की व्याख्या— पं० चमूपति)	
६. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में : क्षितीश वेदालंकार	१५)
७. संस्कारविधि [सजिल्द] :	१५)
८. सरस्वतीन्द्र जीवन (महर्षि दयानन्द का जीवन-चरित्र)	३०)
९. अग्निहोत्र दर्पण (डा० रामनाथ वेदालंकार)	२०)
१०. सत्यार्थ-प्रकाश (१०-१५ इंच) स्थूलाक्षर	१५१)
आर्ट पेपर पर	२५१)
११. ज्योति स्तम्भ :	१०)
१२. वैदिक सम्पत्ति	८१)
१३. योगासन :	२)
१४. योग और ब्रह्मचर्य :	३)
१५. Concept of God	५०)
१६. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश :	२५)
१७. LIGHT OF TRUTH	५०)
१८. प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री	६)
१९. अथर्ववेद परिचय :	६)

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं।

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग,
करोलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहे तो मारिये मुसलमान की ना ।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां ॥
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता राम ।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहिं काम ॥
चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय ।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय ॥
जो उपजियो सो विनस है मरो काल के गाल ।
नानक हर गुन गाय ले छांड़ सकल जंजाल ॥
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार ।
कह नानक थिर कुछ नहिं सुपने जियुं संसार ॥
झूठ बखान कहा करे जग सुपने जियुं जात ।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान ।
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की ।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगयो धन की ॥
संग सखा सब तज गये कोऊ न निबाहियो साथ ।
कहु नानक एहू विपत में टेक एक रघुनाथ ॥

—श्री गुरु नानक देव जी

जो हमको हरमेस उचरि है ।
ते सब नरक कुंड महिं परि है ॥

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चंदू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—१८५, बालकेश्वर मार्ग, तीनबत्ती, बम्बई-४००००६

१. जावेरी बाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादरा टी०टी० ५. बरल नाका ६. सर्कल ७. ठाकुर द्वार ८. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट ९. घाटकोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, बांदरा ११. रेलवे स्टेशन के सामने सांताकुज (पश्चिम)

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड
बम्बई-४००००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पद्मभूषण डा० सिद्धेश्वर वर्मा

जिनकी जिंदगी ही खुद बन्दगी थी

—डा० सीताराम सहगल

३ नवम्बर १८८७ को रावलपिण्डी में जन्मे डा. सिद्धेश्वर वर्मा का १७ अगस्त १९८५ को दिल्ली में देहावसन हो गया। डा० वर्मा का आरम्भिक नाम पिण्डीदास था (माता-पिता ने इस तरह रावलपिण्डी में उनके जन्म को चिरस्मरणीय बनाना चाहा होगा।) यह तथ्य शायद ही किसी को ज्ञात हो। डा० वर्मा स्वयं अपने सिद्धेश्वर नाम का संक्षिप्त रूप 'सिद्ध' का प्रयोग पत्रव्यवहार आदि में प्रायः किया करते थे। डा० वर्मा स्वयं फौरमेन क्रिश्चियन कालेज, लाहौर से इतिहास विषय में एम०ए० करने के उपरान्त हिन्दू स्कूल गुजरांवाला में मुख्याध्यापक बने। उसी काल में उनकी रुचि संस्कृत की ओर हुई और उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। तदनन्तर प्रिंस आफ वेल्स कालेज, जम्मू में संस्कृत के प्राध्यापक बने।

डॉ. वर्मा में भाषाओं के ज्ञानार्जन असीम पिपासा थी। अपनी इस ज्ञान पिपासा की तृप्ति के लिए उन्होंने विभिन्न विदेशी भाषाओं का अध्ययन आरम्भ किया और ग्रीक जर्मन, फ्रेंच तथा रशियन भाषाएं सीखीं। इसी काल में डॉ० वर्मा को विदेश जाकर अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति मिली तो लन्दन के स्कूल ऑफ ओरियन्टल स्टीडज में जाकर उन्होंने पी० एच० डी० के लिए शोध कार्य शुरु किया जिसका विषय था—'वर्णोच्चारण शिक्षा तथा प्रातिशाख्य की समीक्षा'। शोध कार्य में इतनी मौलिकता थी कि परीक्षकों ने एक मत से पी० एच० डी० के स्थान पर 'डी० लिट्' की उपाधि से इन्हें अलंकृत किया। सन् १९६७ में उन्हें पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला ने डी० लिट्' की मानद उपाधि प्रदान करके अपने को सम्मानित किया था।

इसी काल में प्रोफेसर वर्मा ने फ्रांस की यात्रा भी की और डा० ब्लाख से मिले। उस फ्रांसीसी विद्वान् ने उन्हें बतलाया कि शोध कार्य के तुलनात्मक अध्ययन में गहराई भी चाहिए, केवल पंसारी की तरह संग्रह मात्रा ही अपेक्षित नहीं होता। आजकल के शोधकर्ता प्रायः संकलन को ही अनुसंधान समझते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ग्रीष्मावकाश में वे कश्मीर की घाटियों में भाषा विषयक अभियान किया करते थे जिसके फलस्वरूप उन्हें वहां की २१ उपभाषाओं की जानकारी मिली इस महत्वपूर्ण खोज ने उन्हें विश्वख्याति प्रदान की। नार्वे के प्रोफेसर जी० सोर्गे स्टीटने ने उनके शोध की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके फलस्वरूप जम्मू कश्मीर सरकार ने उन्हें 'खिलअत' से सम्मानित किया।

१६ खंडों में वैदिक कोश पदानुक्रम

सन् १९३० से उनका सम्बन्ध विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान और डी० ए०-वी० कालेज, लालचन्द रिसर्च लाब्रेरी, लाहौर से स्थापित हुआ जो आजीवन रहा। इस ५५ वर्ष के काल खंड में डा० वर्मा ने समय-समय पर संस्थान की अवैतनिक सारस्वत सेवा की। विभाजन के बाद एक बार उन्हें वैदिक संस्थान ने होशियारपुर के वार्षिक अधिवेशन में बुलाया जहां पंजाब के मुख्यमंत्री श्री कैरों भी विद्यमान थे। जब आचार्य विश्वबन्धु जी ने डा० वर्मा का परिचय दिया तो मुख्यमंत्री ने भावपूर्ण मुद्रा में उनके चरणों पर अपना शीश नवाया और यह घोषणा भी की कि आज से संस्थान को एक लाख रु० की धन राशि अनुदान के रूप में मिला करेगी। विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान विश्व में एकमात्र ऐसी संस्था है जिस में सारे वैदिक साहित्य के पदानुक्रम कोश सोलह खंडों के ११ हजार पृष्ठों में पचास लाख शब्दों पर निरुक्त की प्रक्रिया से प्रकाश डाला गया है। इन खंडों के लिए उन्हें कई वर्षों तक प्रतिदिन १० घन्टे काम करना पड़ा था। इस काम से भारत का संसार में यश बढ़ा परन्तु यह लिखने में कोई संकोच नहीं कि इस शोध कार्य का भारत के वैदिक विद्वानों द्वारा उचित सम्मान नहीं हुआ। यदि इस शोध कार्य में अंग्रेजी भाषा का माध्यम अपनाया जाता तो प्रशंसा के स्वर अभी तक तीव्र रूप में उभर की सुनाई देने लगते। परन्तु ऐसा करना राष्ट्रीय हित में न होता भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत ही चिरकाल से साहित्य इतिहास, काव्य नाटक, व्याकरण आयुर्वेदादि सब ज्ञानों के विस्तार के लिए माध्याम रही है। विदेशों में भी संस्कृत के ज्ञाता हैं। इसी राष्ट्रीय संकल्प को स्वीकार कर आचार्य विश्वबन्धु ने संस्कृत भाषा में ही लिखना श्रेयस्क समझा।

अभिनन्दन

डा०वर्मा ने सन् १९५० में जब षष्टिपूर्ति में पांव रखा तो आचार्य विश्वबन्धु जी ने अभिनन्दन ग्रन्थ द्वारा उनका सम्मान किया। इस कार्य में संसार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के विद्वानों ने भाग लिया जिस में लगभग १०० निबन्ध हैं। ग्रन्थ दो भागों में छपा है। सन् १९४७ से पूर्व यह छपकर तैयार हो चुका था परन्तु विभाजन के कुचक्र ने सब कुछ अस्तव्यस्त कर दिया। संस्थान की सारी सामग्री बोरों में भर कर पाकिस्तानियों की आंखों से ओझल रख ट्रकों से अमृतसर भेजी गई। सन् १९५० में डा० वर्मा का सम्मान 'सिद्ध भारती' नामक अभिनन्दन ग्रन्थ से किया गया।

नियमित जीवनचर्या

डा० वर्मा का जीवन सूर्य और चन्द्रमा की तरह नियमित रूप से चलता रहा। जीवन में किसी रविवार की छुट्टी का दिन वही होता था जब हाथ में लिया काम समाप्त हो जाए। सांयकाल ठीक समय पर घर पहुंचते और प्रायः ठीक समय घर से निकल कर बस में बैठ जाते थे। ठीक आठ बजे उनका तमिल भाषा का अध्यापक केन्द्रीय सचिवालय में उनके कमरे में प्रवेश करता और वे तमिल पढ़ते। अध्यापक को मासिक दक्षिणा दी जाती थी। तमिल सीखने के बाद उन्होंने 'पुननारुरु' नामक ग्रन्थ के पद कोष की सूक्ष्मता से समीक्षा की तो उन्हें उसमें कई हजार स्खलितियां मालूम पड़ीं। वे पदकोष के लेखक को पत्रों द्वारा उनकी सूचना भेजते रहे। लेखक ने उन गलतियों को स्वीकार किया। डा० वर्मा शायद उत्तर भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने तमिल का इतना गहन अध्ययन किया था।

डा० वर्मा दिन में लगभग ११ घण्टे अध्ययन में लीन रहते थे। सोमवार को पाणिनि व्याकरण का अध्ययन करते, मंगल और शुक्र को आधुनिक भाषाओं का, बुधवार तमिल भाषा का दिन होता था, बृहस्पति को रूसी भाषा का अध्ययन करते थे, शनि को आचार्य भरत का और आदित्य वार को आचार्य चरक का अध्ययन करते थे। उन्होंने कभी आशुलिपिक की सहायता नहीं ली। जीवन भर हाथ से लिखा। उनके पत्र देश के कई भागों में तथा विदेशों में सम्मान्य होते थे। किसी ने उन्हें कभी क्रोध करते व परनिन्दा करते नहीं देखा। वे किसी की निन्दा सुनते भी नहीं थे। उनका जीवन गीता के समान सरल भी था—गहन भी था।

उनकी मान्यता थी कि प्रकृति सबका स्वयं मानदण्ड निर्धारित करती है। इसलिए जो कुछ प्राकृतिक है, वह स्वाभाविक है। हमारे सारे विचार सारी अभिव्यक्तियां और सारी प्रतिक्रियाएं प्रकृति द्वारा संचालित होती हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसलिए जहां कहीं व जब कभी प्रकृति के मानदंड से कमी या अधिकता हो, समझ लीजिए कि सत्य की अवहेलना हुई है।

दीर्घायु का रहस्य

वे साक्षात्कारी थे। गीता में उपदिष्ट 'युक्ताहारविहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु' पर यदि कोई टीका लिखनी हो, तो उनका जीवन उसकी बेजोड़ मिसाल थी। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के कार्य काल में प्रातराश में पनीर मात्रा अधिक, रहती थी। फलों का रस तथा टमाटर, पालक का साग और थोड़ा अन्न लेते थे। कार्यालय जाने से पूर्व उनकी सुपुत्री सुमित्रा वर्मा उनके साथ कुछ फल बांध देती थी। कार्यालय में नियमित समय पर वे जल का गिलास लेते थे। दुपहर फलों का सेवन करते थे। शाम को घर लौट कर फिर प्रातः काल वाले भोजन के पदार्थ उसी रूप में लेते थे। प्रातः ३ बजे उठ कर नियमपूर्वक पाणिनि के एक सूत्र का अध्ययन अवश्य करते थे। उसे वे शब्द ब्रह्मोपासन कहा करते थे।

कार्यालय से जब कभी किसी पार्टी में सम्मिलित होते तो वहां वे केवल फल व जल का गिलास ही लिया करते थे। स्वभाव से हंसमुख थे। दृढ़-प्रतिज्ञ थे। शिवसंकल्पी थे। प्राकृतिक नियमों के पालक थे।

एक बार मैंने इस ज्ञानयोगी से पूछा—डाक्टर साहिब, आप ईश्वर का स्मरण कब करते है? उत्तर में उन्होंने उर्दू का शेर पढ़ा—

मेरी हर नफ्स इक सिजदा है जाहिद, मेरी जिंदगी ही मेरी बन्दगी है।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का निर्वाचन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में आर्य केन्द्रीय सभा का निर्वाचन सर्वसम्मति से किया गया जिसमें महाशय धर्मपाल प्रधान और श्री अशोक कुमार सहगल महामंत्री निर्वाचित हुए। प्रधान और महामन्त्री को कार्यकारिणी के गठन का अधिकार दिया गया। निर्वाचन से पूर्व श्री शालवाले ने सभा को सम्बोधित करते हुए सामूहिक और सम्मिलित प्रयास के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने निर्वाचन के अवसर पर शान्ति, सद्बुद्धि और एकता से काम लेने का आग्रह किया।

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी विरजानन्द दण्डी

संसार में इतिहास की घटनायें रेल की पटरी की तरह समानान्तर रेखा में नहीं चलतीं। यह ठीक है कि काल के साथ इतिहास भी सतत दौड़ रहा है पर वह सरल और सीधी दिशा में गतिशील हो ऐसी बात नहीं है। वृक्ष के लघु बीज के सदृश एक छोटी-सी घटना भी कितने विशाल रूप में परिणत हो जायेगी और कैसे अकल्पनीय परिणामों का प्रसव करेगी यह मानव के लिए सर्वथा अचिन्त्य और अप्रत्याशित है।

माता-पिता का देहान्त : चेचक के रोग से चक्षुहीनता

पंजाब प्रान्त के अन्तर्गत करतारपुर (जि० जालन्धर) के समीप गंगापुर गांव में ब्राह्मण वंशीय पं० नारायण दत्त के घर संवत् १८५४ में एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम 'बृजलाल' रखा गया। ५ वर्ष की आयु में ही बालक पर शीतला रोग का प्रबल आक्रमण हुआ। जीवन तो बच गया पर बालक सदा के लिए चक्षुहीन हो गया। पर दुर्भाग्य ने अभी पीछा नहीं छोड़ा था। बालक अभी ११ वर्ष का ही था कि माता-पिता का देहान्त हो गया। छोटे अन्धे भाई को बड़ा भाई अपने लिए भार स्वरूप समझने लगा और उसे, किसी न किसी बहाने, सताने लगा। स्थिति जब असह्य हो गई, तब बालक बृजलाल घर छोड़ने के लिए विवश हो गया।

गृह त्याग : ऋषिकेश में

घर से भागने वाले बच्चे, बहुधा, आवारा और कुपथगामी होते देखे गये हैं। पर, जिस आत्मा के भीतर पूर्व जन्मों के सात्विक और दैवीय संस्कार हों वह स्वतः सुपथगामी रहता है। करतारपुर से यह किशोर सीधा, ऋषिकेश पहुंचा। वहां एक वर्ष तक गंगाजल में बैठ गायत्री जाप करता रहा। एक दिन उसने यह प्रेरणा सुनी—'विरजानन्द! तुम्हारा काम अब यहां हो चुका। तुम अब आगे की यात्रा करो। तुम्हारा जो उद्देश्य था वह पूरा हो गया है।' ऐसा प्रतीत होता है कि ऋषिकेश आकर 'बृजलाल' ने अपना नाम 'विरजानन्द दंडी' रख लिया था। यहां से दंडीजी कनखल चले गये और पूर्णानन्द स्वामी से व्याकरण पढ़ते रहे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दंडी के मधुर विष्णु स्तोत्र से अलवर नरेश प्रभावित

कनखल में अपना अध्ययन समाप्त कर विरजानन्द तीर्थयात्रा की भावना से प्रयाग इत्यादि स्थानों की ओर चल पड़े। इसी प्रसंग में वे सोरों पहुंचे। गंगा स्नान कर दंडी जी विष्णु स्तोत्र का सस्वर पाठ करने लगे। भाग्य की बात, उसी समय वहां अलवर-नरेश श्री विनयसिंह भी स्नान के लिए उपस्थित थे। दंडी के मधुर स्वर और शुद्ध उच्चारण से विशेष प्रभावित हुए। वार्तालाप से युवक संन्यासी की अद्भुत प्रतिभा से चकित हो गये उन्होंने तत्काल दंडी से अपने साथ अलवर चलने का अनुरोध किया। राजा के अत्यन्त आग्रह को देख उन्होंने इस शर्त पर अलवर जाना स्वीकार किया कि वे दंडी जी से प्रतिदिन ३ घण्टा पढ़ा करेंगे, इसमें कभी व्यवधान नहीं होगा। राजा ने यह शर्त स्वीकार की। दंडी जी के भोजन-छादन का सारा प्रबन्ध राज्य की ओर से था। इसके अतिरिक्त फुटकर व्यय के लिए दो रु० प्रतिदिन दिये जाते थे। राजा प्रतिदिन तीन घण्टे स्वामी जी से पढ़ने लगे। यह पठन-व्यवस्था राज-महल में थी। एक दिन स्वामी जी तो राज प्रासाद में ठीक समय पर पढ़ाने के लिए पहुंच गये पर राजा महोदय उपस्थित न हुए। स्वामी जी नियम भंग के प्रति तीक्ष्ण स्वभाव के थे। वे तत्काल अपने स्थान पर आकर और सब सामान वहीं छोड़ सोरों आ गये। कुछ मास भरतपुर राजा के आग्रह पर वहां व्यतीत कर फिर स्वामी जी मथुरा आ गये और वहीं स्थिर रूप से रहने लगे।

मथुरा में निःशुल्क संस्कृत व्याकरण अध्यापन

संस्कृत व्याकरण के श्रेष्ठ अध्यापक के रूप में दंडी जी का यशः सौरभ चतुर्दिक् फैल रहा था। वे मथुरा में मुख्य मार्ग पर एक छोटी-सी अट्टालिका में निवास करते थे। पाठशाला का भी यही स्थान था, अलवर और जयपुर के महाराजा तथा अन्य धनी-मानी व्यक्ति भी उनकी सहायता करते रहते थे। दंडी जी का जीवन अत्यन्त तपोमय था। स्वल्प आहार, प्रायः दुग्ध ही, और स्वल्प निद्रा के वे अभ्यस्त थे। उनके जीवन का प्रधान लक्ष्य जहां एक ओर ब्रह्म-उपासना था, वहां दूसरी ओर शिष्यों को धर्म और व्याकरण की दृष्टि से योग्यतम बनाना था। विरजानन्द जी में कई अद्वितीय गुण थे। स्मरण-शक्ति अत्यन्त तीव्र थी। एक बार जो सुन लेते, वह तत्काल स्मृतिपटल पर अंकित हो जाता। इसी का यह परिणाम था कि दंडी जी को अनेक ग्रन्थ कण्ठस्थ थे। स्मृति शक्ति के अतिरिक्त दंडी जी की विचार और चिन्तन शक्ति तथा कठिन विषय को भी श्रोत व शिष्य को सरल पद्धति से हृदयंगम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कराने की भी अद्भुत शक्ति थी। व्याकरण में दंडी जी के पांडित्य की गहरी धाक काशी की पंडित मण्डली पर भी पड़ी हुई थी। स्वभाव से दंडी जी स्पष्टवक्ता निष्कपट और सरल वृत्ति के साधु थे।

दंडीजी अपने शिष्यों को सिद्धान्त कौमुदी, मनोरमा, शेखर इत्यादि से ही व्याकरण पढ़ाते थे। पर एक घटना ने उनकी अध्यापन-पद्धति में क्रांति ला दी। उनके पड़ोस में एक दक्षिणी पंडित रहते थे जो प्रतिदिन पाणिनि ऋषिकृत मूल अष्टाध्यायी का पाठ करते थे। इन सूत्रों को सुनते ही वे उन्हें स्मरण हो गये और व्याकरण की इस आर्ष पद्धति पर उनकी दृढ़ आस्था हो गई। उन्होंने अनुभव किया कि सिद्धन्त कौमुदी इत्यादि अनार्ष ग्रन्थों की पद्धति अस्वाभाविक और छात्रों के मस्तिष्क में भ्रम पैदा करने वाली है।

आर्ष ग्रन्थों के ही भक्त

इन अनार्ष ग्रन्थों के प्रति अब दंडी जी के हृदय में इतनी उग्र प्रतिक्रिया हुई कि वे उनके कट्टर विरोधी हो गये। सिद्धान्त कौमुदी के रचयिता भट्टोजी दीक्षित के प्रति वे इतने क्रुद्ध हो गये कि अपने शिष्यों से उसके नाम पर जूते लगवाते थे। जयपुर के राजा रामसिंह, से जो दंडी जी के परम भक्त थे, से उन्होंने कहा था कि अपने दरबार में वे व्याकरण के अनार्ष ग्रन्थों के पंडितों से उनका शास्त्रार्थ कराएं। वे आर्ष ग्रन्थ अष्टाध्यायी की पद्धति की श्रेष्ठता सिद्ध करेंगे। मथुरा के अंग्रेज कलेक्टर श्री पोस्टली द्वारा दंडी जी की प्रमुख इच्छा क्या है, यह पूछे जाने पर विरजानन्द जी ने कहा कि "आप शासक हैं। मेरी एकमात्र इच्छा यह है कि सिद्धान्त कौमुदी इत्यादि अनार्ष व्याकरण ग्रन्थों को अग्नि की भेंट करवा दें।"

महर्षि दयानन्द : गुरु चरणों में

जिस समय ऋषि दयानन्द दंडी जी की सेवा में शिष्य रूप में पहुंचे, उस समय गुरुवर की आयु लगभग ८० वर्ष की और शिष्य पूर्ण यौवनकाल में लगभग ३० वर्ष का था। दोनों के बीच लगभग ५० वर्ष का अन्तर था। पहली भेंट में ही दंडी जी ने दयानन्द से पूछा, "कुछ व्याकरण पढ़े हो?" दयानन्द ने उत्तर दिया, "महाराज! सारस्वत आदि ग्रन्थ पढ़ा हूं।" गुरु ने आदेश दिया कि "इन अनार्ष ग्रन्थों को भूल जाओ। अगर तुम्हारे पास हैं तो यमुना में बहा आओ। फिर तुम मुझ से आर्ष ग्रन्थ पढ़ने के अधिकारी बन सकोगे।" शिष्य ने नतमस्तक हो गुरुदेव के आदेश का पालन किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द के पास महाभाष्य नहीं था और न खरीदने के लिए राशि थी। दंडी जी की प्रेरणा से नगर में चन्दा करके स्वामी दयानन्द के लिए महाभाष्य की एक प्रति ३१ रु० में मंगवाई गई। दंडी जी की कृपा से दयानन्द के भोजन-छादन, निवास तथा अन्य आवश्यक, दूध, रात को पढ़ने के लिए तेल इत्यादि वस्तुओं की भी व्यवस्था हो गई। दंडी जी ने पहले तो यह कहा कि 'हम संन्यासियों को नहीं पढ़ाते, क्योंकि इनके भोजन आदि की व्यवस्था हम नहीं कर सकते और बिना समुचित व्यवस्था के अध्ययन निश्चिन्तता से नहीं हो सकता।" दयानन्द ने निवेदन किया, "महाराज! आप पढ़ाना आरम्भ कर दीजिए। भोजन के विषय मैं शीघ्र ही निश्चिन्तता प्राप्त कर लूंगा।" दंडी जी का शिष्य होने से दयानन्द, इस सचमुच सम्बन्ध में शीघ्र ही निश्चिन्त हो गये थे। वैसे, दयानन्द अपने तपस्वी गुरु की तरह अत्यन्त तपस्वी शिष्य थे। उनकी आवश्यकताएं बहुत न्यून थीं। इसलिए उन्हें निश्चित होने में देर न लगी। मथुरा में दयानन्द के तपोमय और ब्रह्मचर्य के कारण उनके ओजस्वी जीवन का व्यापक प्रभाव था।

आदर्श शिष्य द्वारा गुरु सेवा

गुरु-शिष्य सम्बन्ध का यहां उल्लेख करना आवश्यक है। दंडी ऋषि सुष्ठु स्वभाव के होते हुए भी वृद्धावस्था के हेतु, कुछ तीक्ष्ण और क्रोधी वृत्ति के थे। इसके विपरीत, दयानन्द अत्यंत विनम्र, अध्ययनशील, आज्ञाकारी और गुरु चरणों में अविचल श्रद्धा रखने वाले थे। दंडी जी शीघ्र ही यह भांप गये थे कि दयानन्द उनके अन्य शिष्यों की तुलना में विशिष्ट और कुछ असाधारण गुणों का पुंज है। दंडी जी बारहों महीने यमुना नदी की मध्यवर्ती जलधारा से स्नान और उसी का पान करने के अभ्यासी थे। दंडी जी की सेवा का यह व्रत दयानन्द ने स्वयं ही अपनी इच्छा से सहर्ष स्वीकार किया। लगभग ३ वर्ष तक के अपने शिक्षा काल में दयानन्द प्रतिदिन भोर वेला में, बिना सर्दी-गर्मी, बरसात, आंधी की परवाह किए, यमुना जल के लगभग १५ घड़ों से गुरु जी को स्नान कराते और उनके लिए पेय जल लाते।

गुरु जी का प्रकोप : शिष्य द्वारा सेवा पूर्ववत्

दंडी जी के निवास स्थान को दयानन्द प्रतिदिन झाड़ू देकर साफ करते थे। एक दिन कूड़ा उठाकर उन्होंने कमरे के एक कोने में रख दिया और उसे बाहर उठाकर ले जाने के लिए कुछ बीज खोजने लगे। इतने में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरु जी टहलते हुए उधर आ निकले। उनका पांव कूड़े पर पड़ गया। वे अत्यंत क्रोधावेश में आ गये और स्वामी दयानन्द पर लाठी का प्रहार कर दिया ओर कठोर वचन भी कहे। स्वामी जी ने गुरु के इस दण्ड को सहर्ष अंगीकार किया, यद्यपि इस मामले में वे दोषी नहीं थे। जिस समय गुरु जी शांत हुए तो स्वामी दयानन्द ने उनके चरणों और शरीर को श्रद्धा से सहलाना शुरू कर दिया, यह कहते हुए कि "गुरुवर! मैं तो युवा हूं पर आप वृद्ध हैं। आपका दंड तो मेरे लिए अमृतवत है। मेरा शरीर कठोर है, पर आपके वृद्ध, जर्जरित अस्थिमात्र शरीर में पीड़ा हो गई होगी, इसलिए मैं मालिश से उसे दूर करता हूं।" गुरु अपने शिष्य की इस सेवा भावना से गद्‌गद हो गये। इसी का यह परिणाम था। कि गुरु-शिष्य का कई घन्टों तक, प्रायः एकान्त में वार्तालाप होता था। निश्चय ही गुरु जी को यह दृढ़ विश्वास हो गया था कि शिष्य दयानन्द सामान्य व्यक्ति नहीं है किन्तु भारत का एक अनोखा रत्न है।

गुरु से विदाई : गुरु दक्षिणा

लगभग ३ वर्ष तक दंडी जी के चरणों में अन्तेवासी के रूप में शिक्षा प्राप्त करने के बाद अब शिष्य दयानन्द की विदाई का समय आ गया। स्वामी दयानन्द की प्रबल इच्छा थी कि गुरु श्री से प्राप्त शिक्षा को कार्यान्वित करने के लिए देशाटन करूं। पर, खाली हाथ गुरुजी से विदा होना भारतीय परम्परा के विरुद्ध था। दयानन्द अत्यन्त विनम्रभाव से कुछ लौंग लेकर गुरुचरणों में उपस्थित हुए और बोले, "भगवन्! आपने विद्यादान कर मुझ पर जो उपकार किये हैं, उनसे मैं आजन्म उऋण नहीं हो सकता पर अपनी हार्दिक श्रद्धा के प्रतीक ये कुछ लौंग आपके श्रीचरणों में समर्पित हैं।" दंडी जी ने स्मितहास्य के साथ कहा, "वत्स! मैं पार्थिव वस्तु की यह दक्षिणा नहीं चाहता। मैं अन्य वस्तु तुम से मांगता हूं और वह तुम्हारे ही पास है तुम्हें कहीं से लानी नहीं पड़ेगी।" दयानन्द ने निवेदन किया, "गुरुदेव! मैं पूर्ण रूप से आपके चरणों में समर्पित हूं। आप जो आदेश करेंगे, मैं उसे आजीवन निभाऊंगा।" गुरुवर ने कहा, "मैं तुम से यही दक्षिणा मांगता हूं कि आजीवन आर्ष ग्रंथों का प्रचार और अनार्ष ग्रन्थों का खण्डन करते हुए वैदिक धर्म की स्थापना हेतु अपना प्राण तक अगर न्यौछावर करने पड़े तो तुम संकोच नहीं करोगे।" ऋषि दयानन्द ने गुरुदेव के श्रीचरणों को स्पर्श करते हुए कहा, "आपका शिष्य आपके इस आदेश का प्राणपन से पालन करेगा।" गुरुदेव ने अपने स्नेहमय कर कमालों से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द के सिर पर हाथ फेरते हुए हार्दिक आशीर्वाद दिया। इस प्रकार गुरु-शिष्य का भौतिक सम्बन्ध तो समाप्त हुआ, पर आत्मिक सम्बन्ध आजीवन अटूट रहा।

ऋषि दयानन्द ने अपने समस्त ग्रन्थों में अपने आप को "विरजानन्द दंडी शिष्य" इन शब्दों से गौरवान्वित करते हुए अपने आचार्य वर की पुण्य-स्मृति को देदीप्यमान रखा।

दंडी जी का स्वर्गवास

दंडी विजानन्द का स्वर्गवास लगभग ८२ वर्ष की आयु में संवत् १९२५ आश्विन वदी त्रयोदशी सोमवार को हुआ। ऋषि दयानन्द ने इस दुःखद समाचार को सुन कहा "आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।"

इस वीतराग संन्यासी की पुण्य स्मृति में आर्यसमाज की ओर से करतारपुर में "श्री विरजानन्द स्मारक भवन" स्थापित किया गया है। १४ सितम्बर १९७० को केन्द्रीय सरकार द्वारा दंडी जी की पुण्य स्मृति में डाक-टिकट जारी किया गया।

जब देश में दंडी विरजानन्द जी जैसे गुरु और स्वामी दयानन्द जैसे शिष्य होंगे तभी देश का कल्याण होगा। □

हिंदू राष्ट्र के सजग प्रहरी

जन-ज्ञान मासिक का नमूना

मुफ्त मंगाएं

केवल ५० पैसे का डाक टिकिट भेजकर

१५९७, हरध्यान सिंह मार्ग, करोल बाग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यायाम—जो यौवन का रहस्य है

कुछ लोग तीस बरस के होते-न-होते वृद्ध हो जाते हैं और कुछ लोग अधेड़ अवस्था में भी जवान दिखाई देते हैं। उन्हें देखने से लगता है कि बुढ़ापा उनसे दूर भागता रहता है। सूरत से ही जवान नहीं दिखाई देते, उनमें जवानों का-सा जोश भी रहता है। जीवन उन्हें प्रिय होता है। वे सतत जागृत रहते हैं और तमाम बातों का पता रखते हैं। लगता है कि उम्र का उन पर कोई असर नहीं पड़ रहा है।

तो फिर क्यों कुछ लोगों का कुछ बिगाड़ नहीं पाती, जबकि कुछ लोगों पर उम्र का वजन बेतरह ज्यादा पड़ता है? इस प्रश्न का हल शरीर और मन दोनों से संबन्धित है शरीर को हमेशा जवान बनाए रखने में मन का बड़ा भाग होता है और शारीरिक नियमों के पालन का भी, यदि उससे अधिक नहीं तो उतना भाग तो जरूर होता है।

मौज-भरी जिंदगी में साल चट्टान पर से पानी के बहाव की तरह निकल जाते हैं, पर जीवन को सदा समस्यापूर्ण बनाए रखने वाले के लिए जीवन भार बन जाता है। ऐसे लोग भूले हुए-से रहते हैं और वक्त उनके चेहरे और शरीर पर न मिटने वाले निशान बनाता जाता है। हम आपको जवान बने रहने का एक शारीरिक नुस्खा बताते हैं।

आपकी रीढ़ जितनी नई और मजबूत होती है, आप उतने ही जवान दिखाई देते हैं। बच्चों को देखिए, दौड़ते हैं, कूदते हैं 'गुरगंडी' खाते हैं, लुढ़कते हैं। इस तरह उनकी रीढ़ हर तरह से मुड़ती है और इसी में जवानी का रहस्य छिपा हुआ है।

आपका काम कुछ भी क्यों न हों, आपकी उम्र कितनी भी क्यों न हो, आपको अपनी पूरी रीढ़ को हमेशा लचीली और नई बनाए रखने का ध्यान रखना चाहिए। यदि आपने अब तक इस ओर ध्यान नहीं दिया है तो अबसे इस ओर ध्यान दीजिए। इस काम के लिए अनेक कसरतें हैं। उनमें से कुछ नित्य अवश्य कीजिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रीढ़ अपनी ठीक दिशा में रहे, इसके लिए बैठने, चलने का ठीक ढंग सीखिए। इसके लिए कदम बढ़ाते हुए योद्धाओं को देखिए—उनके कंधे पीछे की ओर होते हैं—छाती आगे की ओर बढ़ी होती है और रीढ़ सीधी होती है। जब लोग युद्ध के लिए जाते हैं तो ऐसा लगता है कि इनके पैर अपने आप उठ रहे हैं और वे बिना प्रयास के ही बढ़ रहे हैं और उस वक्त समझ में आता है कि मनुष्य के शरीर में कितनी शक्ति भरी है। इस सारी शक्ति का स्रोत रीढ़ ही है। रीढ़ को हम मनुष्य देह का आधार कह सकते हैं और सच-मुच पेड़ के तने और घर के लिये घर की नींव की जो कीमत है, वही रीढ़ की मनुष्य के शरीर के लिए है।

रीढ़ अनेक गुरियों से मिलकर बनी है और दो विभिन्न गुरियों के बीच से विभिन्न नाड़ियां निकल कर सारे शरीर में जाती हैं और शरीर के प्रत्येक अंग को कार्य शक्ति प्रदान करती हैं। आप बोल भी तभी पाते हैं जब आप को नाड़ी से शक्ति मिलती है और इस आश्चर्यमय शरीर के सारे आश्चर्यमय काम नाडी बल के जोर से ही चलते हैं।

अगर रीढ़ की कसरत न की जाए, उसे मोड़ा, घुमाया, खींचा न जाए तो रीढ़ की कुछ गुरियां आपस में मिल सकती हैं। ऐसी दिशा में उनके बीच से गुजरने वाली नाड़ी दब जाती है और दबी नाड़ी शरीर को अथवा उसके किसी अंग को वह बल नहीं दे पाती है, जिसका देना उसके लिए स्वाभाविक है। इसी आधार पर कई चिकित्सा पद्धतियां निकल आई हैं जो केवल रीढ़ को ठीक करके रोग निवारण का दावा करती हैं।

यदि आपने अब तक अपनी रीढ़ की ओर ध्यान नहीं दिया है तो अब से कुछ ऐसा श्रम करना शुरू कीजिए कि रीढ़ की नित्य कसरत हो जाए। इस विधि से जब आपकी रीढ़ हमेशा नई बनी रहेगी तो आपकी उम्र चाहे कितनी हीं हो जाए, आपके शरीर का प्रत्येक अंग नया और जवान बना रहेगा और आपको वह मानसिक बल प्राप्त होगा, जिसके सामने कोई समस्या टिकती नहीं, न उसका हल करना कठिन होता है। □

जिसके घर में वेद नहीं!
वह हिन्दू का घर नहीं!!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

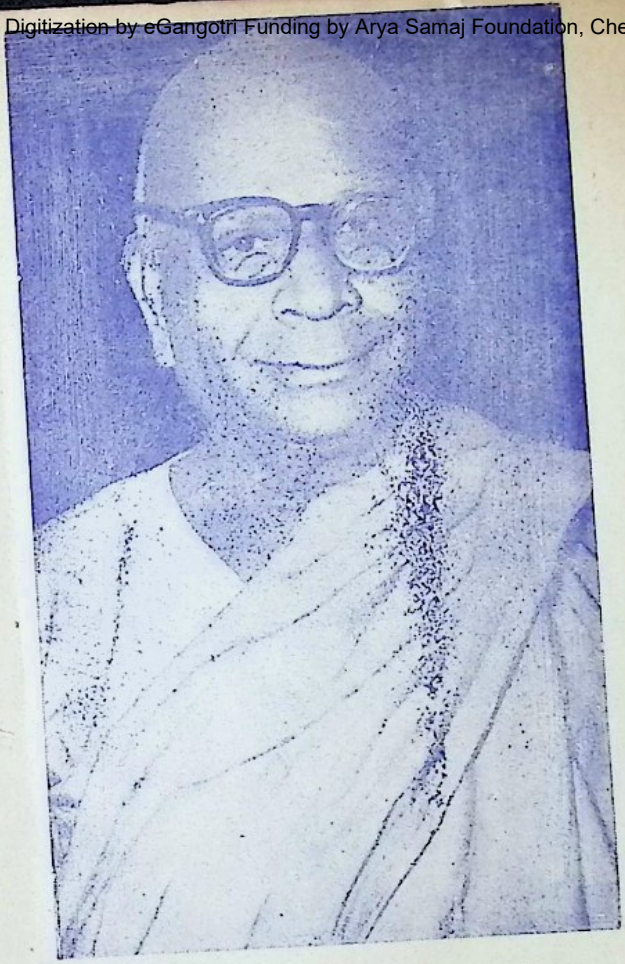

स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आर्य समाज के तपोधन सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, जो आजकल विदेश यात्रा पर हैं। पिछले दिनों आप स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः जी के स्थान पर दयानन्द संस्थान के ट्रस्टी नियुक्त हुए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान
(मासिक)
P.O अलीपुर दिल्ली-३६

मागशीर्ष
२०४२
सितम्बर १९८५

D-C-201
R.N. 107119/65

दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम डी एच

दंत मंजन
लौंग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि

दांतों का डाक्टर

दात का दर्द

मुंह की दुर्गन्ध

मसूड़ो की सूजन

ठंडा गर्म पानी लगना

डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०
9 44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर
नई दिल्ली-110015 फोन : 539609,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi